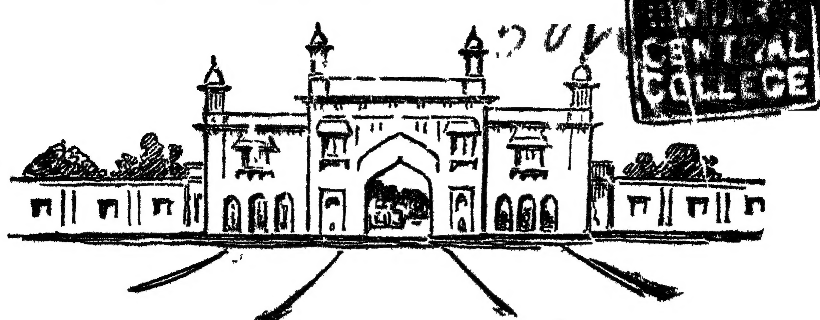


सयुक्त प्रान्त की

प्रदर्शिनी

इलाहाबाद सन् १९१०—१९११ ई०

रिसाला हालात

जिसको

प्रदर्शिनी की कमेटी ने

बनाया

बामरलारी एण्ड कम्पनी

मेटल डिपार्टमेण्ट (सीगा धात)

इमारती काम के लोहे की चीजो के मगाने वाले, जिसमे नीचे लिखी चीजे हैं

धरन, टीज, एन्गिलस (कोनिया), च्यानल (नालियां), छड़ और चद्दर वगैरह। गलवेनाइजड कारीगेटेड (नालीदार) लोहा और छत बनाने की चीजे, ७००० टन से अधिक माल गोदाम में मौजूद रहता है और इससे अधिक मगवा दिया जाता है। लोहे के तार के रस्से-यह पुल बांधने और पुल के बनाने के वास्ते, खानों और जहाज के रस्सों के काम में आते है॥

नीचे लिखी चीज़ो के खास एजेण्ट

"गिलेन घन" का रेड हैण्ड ब्राण्ड पोर्ट लैण्ड सिमेण्टः- जो कि दुनियां भर में प्रसिद्ध है और काम में आता है। कलकत्ता मे हर एक पी० ओ० बोट से ताजा माल आता है।

"पेज" हाता घेरने के लिये बटे हुए तारः-यह ऐसा हाता का तार है जो बहुत दिनो तक ठहरता है सूची के वास्ते लिखिये।

आलमिनोफेरिक —यह अदभुत पानी साफ़ करने की कल है जिससे मनुष्य एक लाख गेलन ख़राव पानी साफ़ कर सकता है मूल्य ३) रु०।

स्ट्रकचरल डिपार्टमेन्ट (सीगा तामीरात)

इस सीगा में, पुल, गार्डर, छत, चाह का मकान, गोदाम, कुली-लाइन और हर तरह के स्ट्रकचरल वर्क (बनाने के काम) किये जाते हैं। मकान, चाह घर, और गोदाम वगैरह बनाने के लिये लकड़ी की चीजे मुहय्या की जाती है।

फ़ाउण्डरी (ढालने का कारख़ाना)

इसमें हर तरह के लोहा ढालने के काम का ठीका लिया जाता है।

औटोलक्ष

नया वज़नी लम्प

न तो इसमें पम्प की आवश्यकता है और न दबाव की।

"औटोलक्ष" ही एक ऐसा लम्प है, जो कि रेल, म्यूनिसिपेलिटी, स्टीमर के घाट, चाह के बगीचे, चक्कियों, कारख़ानों और गोदामों के लिये अत्यन्त उपयोगी है, क्योंकि इस मे निम्न लिखित गुण है—

१—किसी क़िस्म के दबाव की आवश्यकता नही है इस कारण न किसी प्रकार के पम्प की आवश्यकता है, न कोई खुखला तार है, न किसी जगह से चूने की आशङ्का है और न कोई पेचदार हिस्सा है।

२—हर एक मार्के का मट्टी का तेल इस मे बलता है।

३—इसकी रोशनी एक हजार मोमबत्ती के बराबर होती है।

४—इस के समान आसान और तेज रोशनी देने वाला दूसरा कोई लम्प नही है।

५—इस में किसी प्रकार का डर नही है।

६—प्रेशर लम्पों की अपेक्षा इस का ख़र्चा आधे से भी कम है क्योंकि इस में विशेष ख़र्च की जरूरत नहीं है।

७—बनावट अत्यन्त मजबूत है और सब जगह अलमिनम और पीतल की कलई है, न किसी प्रकार की आवाज होती है, न आंधी से बुझ सकता है और न मुर्चा लगता है।

८—बहुत ही ज्यादा ताकत का लम्प है और इस के जलाने मे विशेष बुद्धि की आवश्यकता नही है।

दि ऐसियाटिक पेट्रोलियम कम्पनी लिमिटेड प्रदर्शिनी के इन्जीनियरिंग विभाग में 'औटोलक्ष' के विषय के प्रत्येक प्रश्नो का उत्तर देने के निमित्त प्रस्तुत हैं और वहा पर इस के विवरण की एक पुस्तक भी मिल सकती है। हम लोगों के पास छोटे, इनकैनडीसेट लम्प भी हैं, जिस में पेटरोल जलता है और इस मे सीधे या पलटे बरनर्स होते है। रोशनी १०० मोमबत्तियों से लेकर ८०० मोमबत्तियों के बराबर होती है। मूल्य १२) रु० से १७५) रु० तक।

इन लम्पों के विशेष विवरण के लिये पी० नम्बर की लिस्ट के लिये लिखिये। पता :— जेम्स स्पेस एण्ड को०

इलेकट्रिकल इनजीनियर एण्ड लाइटिंग स्पेशेलिस्ट्स्

न० ३० चौरंगी रोड कलकत्ता।



जापान और इङ्गलिस्तान की नुमायश

सन् १९१० ई० में

खेल के सामान का सब से बड़ा इनाम



ग्रेन्डप्रिक्स

केवल

गंडासिंह ग्रोवेराय एन्ड कम्पनी के सामान को मिला

यह इनाम हिन्दुस्तान के बनाये हुये खेल के सामान की श्रेष्ठता के लिये सब से अत्युत्तम सत्कार है जो हिन्दुस्तान के किसी नुमायश पर जो भिन्न २ देशान्तर की अन्य अन्य जातियों ने मिल कर की हो प्राप्त हुई—

इस इनाम की प्राप्ति से इस कम्पनी के इनामों की संख्या इकीस हो गई है और इस से स्पष्ट विदित होता है कि जिस क़िस्म के खेल का सामान आज तक किसी ने बनाया है उन सब में इस कम्पनी का माल अव्वल नम्बर चला आता है॥

पञ्जाब स्पोर्टस वर्कस

स्याल कोट सिटी

पिसटिस और पिलिकनोज

यही कम्पनी इजिपशियन सिगरेट को पहिले पहिल हिन्दुस्तान में लाई है और मोखा का कहवा के वास्ते मशहूर है।

सिगरेट फाकूरी (कारखाना सिगरेट) केरो, ईजिप्ट (मुकाम काहरा मिसर) } १/१, मिशन रो, कलकत्ता

और

जी-जे-ए-कारवोपोला के मशहूर इजिपशियन सिगरेटस

और

बस्तो अलजीरियन सिगरेटस के एजन्ट हैं

दफ़्तर मुकाम कलकत्ता

मिसर्स पिसटिस और पिलिकनोज,

१/१, मिशन रो।

दक्खिनी हिन्दुस्तान की दस्तकारी की
नुमाइश की चीजें
जिन को मदरास के विक्टोरिया टेकनिकल
इन्स्टीट्यूट ने इकट्ठा की है।

हाथी दांत की चीजें—जड़ाऊ चीजें—
खोदाई की चीजें—नकाशीदार चीजें—
लेकर वर्क (लेकर वारनिश की चीज)—
कारचोबी-दरिया—
पालमपुर की चीजें—
रेशमी—सूती—मट्टी की चीजें—
बाजे—डामेस सेनिग—खिलौने—
वगैरह—वगैरह

यह सब इकट्ठा की हुई चीजें इस शर्त पर बेची जा सकती है,
कि वे सब प्रदर्शिनी में जब तक प्रदर्शिनी कायम रहै
मौजूद रहने दी जावे।

लेम्पलेस आयेल इन्जिन

मिट्टी के तेल या मामूली तेल से चलता है

इस से फ़ी मिनिट एक आने के सरफ़े में ५

हार्स पावर का काम

लिया जाता है

इन्जिन

के पूरे हालात के लिये

फ़ रामजी काऊसजी

हारनबाई रोड बम्बई

को लिखिये

बम्बई और पंजाब के

एजेन्ट

काशी पक्की चीनी

यह चीनी पुरानी रीत से हनुमान गंज ज़िला बलिया (बनारस की कमिश्नरी) में तय्यार की जाती है। यह सिर्फ प्रथम श्रेणी के गुड़ से जो ईख के रस से बनता है बनाई जाती है और सेवार से जो एक प्रकार का पौधा है साफ़ की जाती है यह सेवार प्रसिद्ध ताल सुरहा में जहां कमल बहुतायत से मिलते हैं उगता है।

यह स्वच्छता या स्वाद में अपनी बराबरी नहीं रखती। इस कारख़ाने की शाखे आगरा कानपुर वग़ैरः में हैं जहां इसने अपनी प्रतिष्ठा क़ायम रक्खी है।

इस की मांग शादी या त्योहार के समय कलकत्ता इत्यादि बड़े नगरों से बहुत है।

यदि आप इसके विषय में विशेष जानना चाहते हैं तो निम्न लिखित पते से पत्र व्योहार करें॥

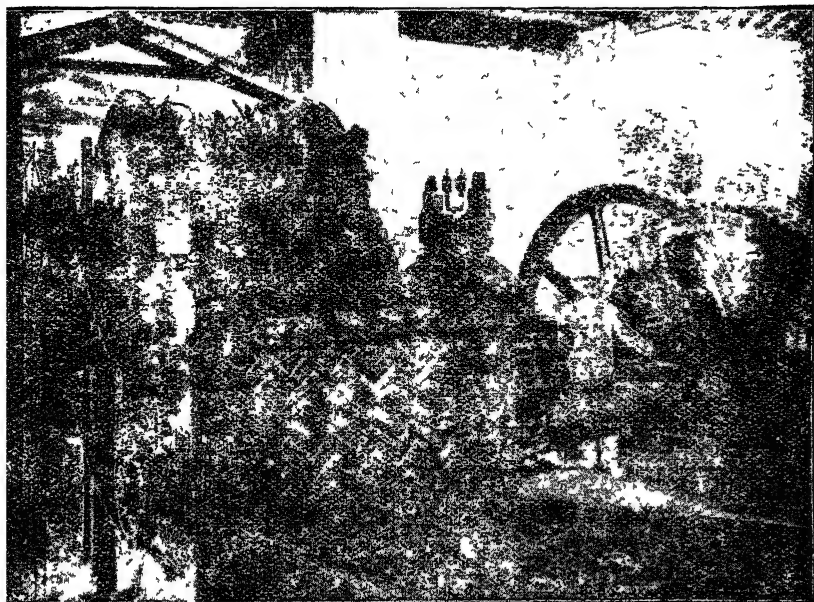
बाबू देवीप्रसाद जमुनाप्रसाद

हनुमान गंज ज़िला बलिया

संयुक्त देश आगरा व अवध

हिन्दुस्तान

फ्रेडरिक क्रोप ए० जी० ग्रोजन वर्के मखटो बोख़



ऊख पेरने की कल (कोल्हू)
ऊख पेरने के इसपात के कोल्हू जिन में पेचदार
और नालीदार चक्कर होता है।
ऊख और खोय्या उठाने की कल।

रेशा अलग करने वाली कले (बूकोन साहब के तरीका की)
"निब कोना" नामक कल रेशा साफ करने के वास्ते
सन और जूट और रुई और ऊंन इत्यादि के गट्ठर बांधने की कल।
कच्चे रबर की कल और तेल पेरने के कोल्हू के औजार।
दबाने और खान खोदने की कले पत्थर तोडने की कले,
रोटरी क्रशर (घूमने वाला बेलन दबाने के वास्ते)
रोल (बेलन), स्टाम्प की कले, गोली बनाने की कलें,
नल बनाने की कले, इत्यादि
दमकला और कच्चो धात और कोयला काम में लाने की कले।
एजन्ट—जी० ए० शिलेशटन्डाल—पोस्ट बाक्स नं० १२५ बमबई

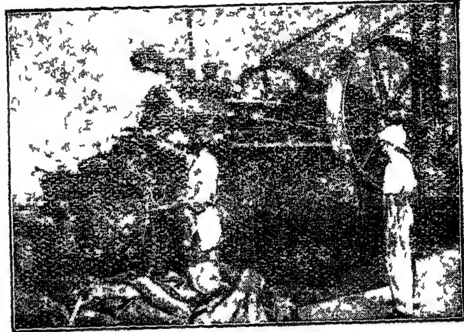
जो० अ० शिलेशटन्डाल लिमिटेड नं० १०

फार्बस स्ट्रीट बमबई

आर उलफ़ मखटोबोके जरमनी के गुमाशता हैं,

गैरमुतहिरिक और हलके इनजन।

सुपर हीटेड टनडम इनजन जिस का वाटर ट्यूब बायलर तेल और कोयला और लकडी की जगह काम में लाया जाता है।



उलफ़ इनजन अपनी सादी बनावट के कारण और इनजनों से अत्यन्त उत्तम है।

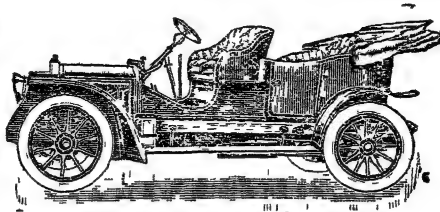
१०० हार्स पावर इनजन के लिये हर एक ब्रेक हार्स पावर प्रति घंटा ताक़त पैदा करने में कम से कम ·८९ पौन्ड, कोयला ख़र्च होता है यह कारख़ाना मशहूर उलफ़ का अनाज मांडने की कल और दूसरे ज़िरायती आलात बनाता है

जरमनी सेकशन के कृषी विभाग में हमारे इनजन को चलते हुये मुलाहज़ा फ़रमाइये और उलफ़ के इनजन की मज़बूती और सादगी और उत्तम कारीगरी की निसबत अपना इतमीनान कीजिये।

जी० ए० शिलेशटन्डाल लिमिटेड पोस्ट बकस नं० १२५ बमबई
निम्न लिखित कमपनियों के गुमाशते

बेनज़ कमपनी कारख़ाना मुक़ाम मिनहायम और गगनऊ जरमनी
हर किसम की मोटरकार-बोसेज और वैगन

चेसेज (गाडी) ८ से २०० हार्स पावर तक की-बाडीज (ढांचे) मुकर्रर नमूने के और ख़ासकर ग्राहकों के रुचि के मुताबिक़ तय्यार किये जाते हैं



गत २ वर्षों में इस गाडी की चाल दुनियां भर की गाडियों से ज्यादा रही।

इस मोटरकार की चाल १३२ मील प्रति घटा है जो ज़ियादा से ज़ियादा चाल मोटरकार (हवा गाड़ा) की है॥

मोर्टज़ यार लिमिटेड गेरा जरमनी इन्जिनियर और कारख़ाना लोहा

सफ़ेद करने और रंगने और साफ व जिला करने और रेशमी कपड़ा के मुतअल्लिक़ मशीन के सब पुर्जों के बनाने वाले और रखने वाले-सिलेन्डर ड्राइंग मशीन यानी सुखाने की कल-गैस जलाने की कल-रेशम के कलप देने और सुखाने की कल-साफ़ करने और धोने की कल-फ़्लेट कलेन्डर कारबोनाईजिंग और हाट येर ड्राइंग मशीन-हाय ड्रालिक प्रेस-हायड्रोएक्सट्रेक्टर्स इस कारख़ाने से मिल सकती हैं॥

इस कारख़ाने में कलों का एक ख़ास सीगा है और भाप के द्वारा कपड़े धोने के सब कल पुरजे भी मिल सकते हैं,

---

जान क्लायने वेफस ज़ोयना क्रीफ़ल्ड जरमनी

लोहा ढालने की कल, इसपात के कलन्डर बनाने वाले, खुदाई का काम करने वाले, फूल पत्ती बनाने के कलेन्डर, रेशम साफ़ करने की कल, वाटर कलेन्डर, गिलेजिंग और फ्रिकशन कलेन्डर और बोटल कलेन्डर आप से आप चलने वाली मरसेरायजिंग मशीन सूत के पेचक बनाने के वास्ते, काग़ज का तख़्ता बनाने और काग़ज़ काटने की कल।

जी० ए० शिलेशटन्डाल लिमिटेड पोस्ट आफिस बक्स नं० १२५ बम्बई

निम्न लिखित कम्पनियों के गुमाशता

ए० बारजिश मुकाम वरलिन लन्दन, लोडस व जानिसवर्ग
के लोहे और इसपात के कारखाने और लोकोमोटिव बनाने वाले

इस कारखाने में खास कर निम्न लिखित चीजें मिलती हैं :—

बोरसिंग वाटरट्यूब बायलर, सूपरहीटर
बर्फ बनाने और ठंढक पहुंचाने के कल
पमपिंग मशीनरी, ऐर लिफ्ट पम्प
हाई और लो प्रेशर के सेन्ट्रीफ्यूगल पम्प
फायर लेस और क्रेन लोकोमोटिव
हायड्रालिक प्रेस

गासमो टोरिन फेबरिक डाइटस-कोयलन डाइटस जरमनी
शाखा मुकाम वरलिन, वायन, मेलान और फिलाडलफिया
ओटो तरीका के इनटरनल कमवशचन इनजन

९६००० से ज्यादा इनजन ७५०००० मजमूई हार्स पावर के चल रहे हैं

एक हार्स पावर से ४००० हार्स पावर तक के ओटो गैस इनजन, बनाने वाले जो जलते हुये गैस से और सकशन प्रोडयूसर गैस से इनथरसाइट पत्थर के कोयला से बनता है और लिगनाइट और ब्लास्ट फरनेस गैस और गेसोलीन और वनजोल (तारपीन का तेल) और पेटरोलियम और अलकोहल से चलाये जाते हैं

असली ओटो आयल लोकोमोटिव
टेकशन आयल इनजन और हल के
हलके तेल के इनजन, टेशिंग मशीन (यानी छांटने की कल) और
दूसरी जिरायती कल के चलाने के लिये
ओटो डीजिल और ओटो मेरीन इनजन

दी पीटर यूनियन टायर कम्पनी फ्रंकफुर्ट ए/एम बरलिन,
लडन, पैरिस और मेलबोरन

मोटर टायर टोस, टायर गाड़ियों और थैलों और ट्रक और बैल गाड़ियो और रिकशा के लिये

हर प्रकार के रबर ट्यूब और पाइप और हलके और फ्रेम इत्यादि

नाना प्रकार के रबर हर पेशा के मुतअल्लिक और आम इस्तेमाल के लिये रबर की तोशक।

सी० ग्रे० राशर

नाइग्यार्स डार्फ (जरमनी)

——:०:⁐:०:——

करघे बनाने वाले

रुई और सन और ऊन और रेशम के कपड़ो के वास्ते-

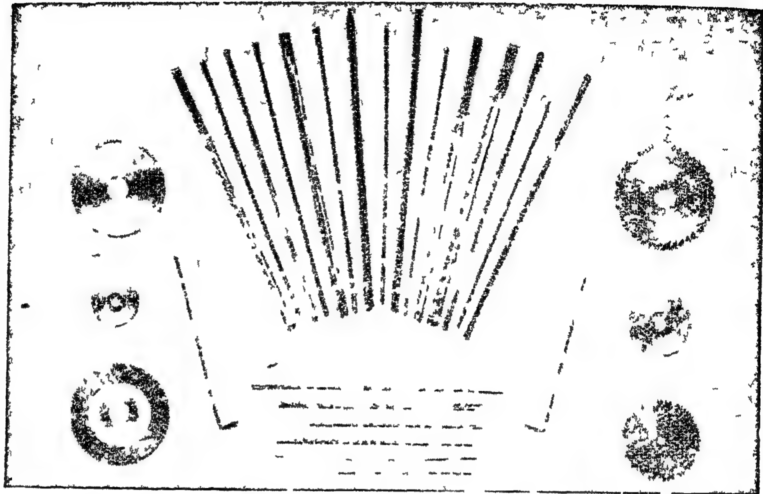
इन करघों की कघो को वसग्रत २४" से २१०" तक होती है और यह कघो ढोली या कसी होती है और इन में ऊपर या नीचे कील होती है-इन में पैर से चलाने का तख्ता अन्दर या बाहर की तरफ़ या डाबी लगा होता है-इन करघों में १, २, ४, ६, १०, या ११ ढरकियां होती हैं।

एजन्ट

जो० ग्रे० शिलेशटन्डाल लिमिटेड

न० १० फ़ार्बस स्ट्रीट

बम्बई



नीडल फाइलस (सूई की रेती) घडी साजों और जौहरियो वगैरः के लिये आरी के फल और इसपात की कमानिया हर किस्म की-ढले हुये इसपात के बेंड
जे० एन एवाले एण्ड को आकसबेर्ग

इलगेस साहब का बनाया हुआ भाप का भवका जो जरमनी और अन्य देशों में पेटन्ट कराया गया है

खास फायदा

लगातार काम करने वाला पूरी तौर से आप से आप काम करने वाला, धूवां की कमी बेशी आप से आप ठीक करने वाला "वाश" "स्पेन्ट वाश" ऐन्ड वाटर और भाप बिलकुल नहीं खराब होने पाती, रोकावट गैर मुमकिन है. साफ करने की जरूरत नहीं, रूह शराव किसी तरह से नुक़सान नहीं होने पाती, इस्तेमाल से बहुत कम घिसता है

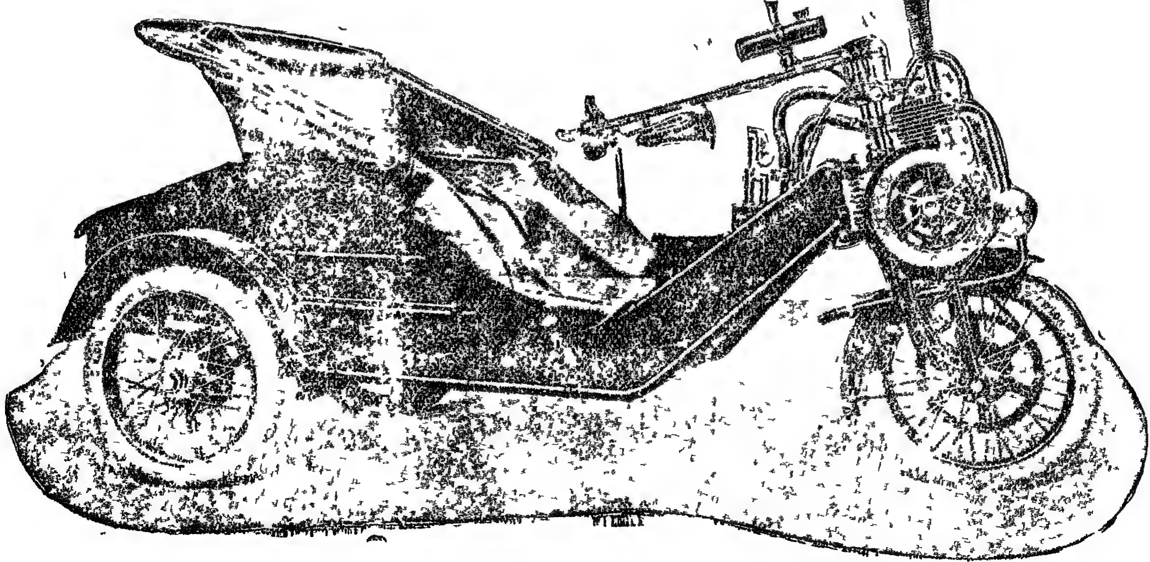
महुआ और शोरा के लिये इलगेस साहब का भाप का भवका जो हिन्दुस्तान के बहुत से भट्ठियों में चलता है

खास बातें

इलगेस साहब का टेपुल यानी तेहरा स्टीम का भवका जिस से आप से आप और बराबर और किसी क़िस्म की "वाश" से खालिस रेक्टीफाईड (साफ किया हुआ) अच्छी और हलकी रूह शराब तैय्यार होती है और यह जमा हुई तेलही चीजों को और दूसरी कसाफ़तों को आप से आप अलग करता है

नक़ली भवकों से ख़बरदार रहना चाहिये
इस को ईजाद करने वाले ने बनाया है
राबर्ट इलगेस कालिन जरमनी

सीक्रोनेट गाड़ियां उस कमरे में देखी जा सकती हैं जहां जरमनी की मशीनरी (यानी कल की चीज़ें) हैं और उसी जगह सूचीपत्र भी मिलेगा—जांच के लिये सवारी का प्रबंध किया जा सकता है।



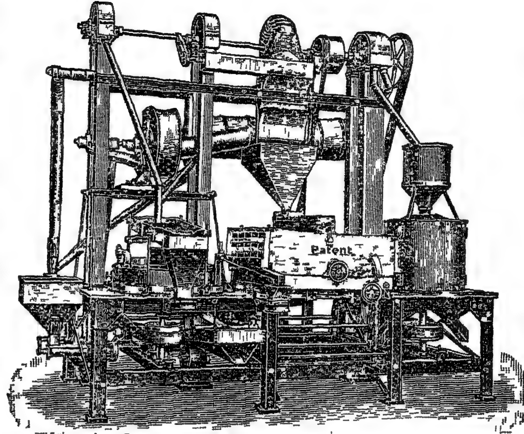
सीक्रोन मशीनन फबरिक

आइज़न वर्क फोर माल्टस नागेल ऐन्ड केम्प हम्बोइश
एजन्ट हिन्दुस्तान और सोलोन (लंका) के वास्ते।

दो वेस्ट्रन मेनोफ़ेकचरिंग कम्पनी लिमिटेड
(भाजोकर एन्ड को) बम्बई

खुद बखुद काम करने वाला।

एक आदमी कुलमिल (चक्की) को देख भाल कर सकता है।

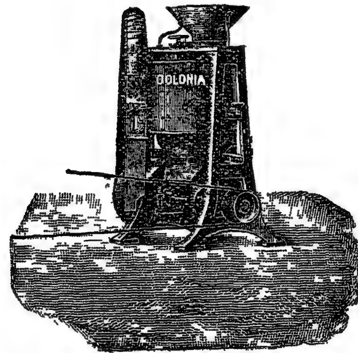


दुनिया भर में कार आमद पाई गई।

बृटिश इन्डिया में पेटंट कराई गई है।

फिलपेना राइस मिल (चावल छटांने की कल)

कम्पनागेल तरीक़ की
राइस मिल



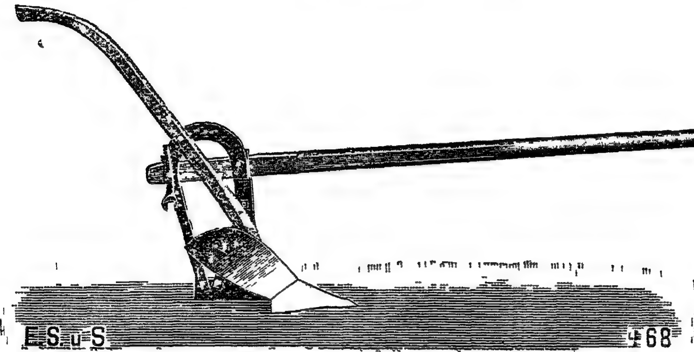
कलोनिया

जरमनी के कृषी विभाग में यह सब चलती हुई दशा में दिखाई जा सकती हैं।। इस सूची के तशरीह को देख लीजिये।

ऐडवर्ड शोरटज एन्ड सन (जरमनी)

इस वक्त के कृषी यत्रो के लिये सब से पुराना और बड़ा कारखाना जावा स्वुइंग प्लाऊ (जावा का एक क़िस्म का हल) बग़ैर पहियों या प्लेन या दस्ता के जिस को किसान आसानी से लगा सकते हैं।

हल का वजन १२ सेर के करीब है। हराई की गहराई ५ या ५½ इंच होती है। चौडाई हराई की ७ इञ्च होती है।



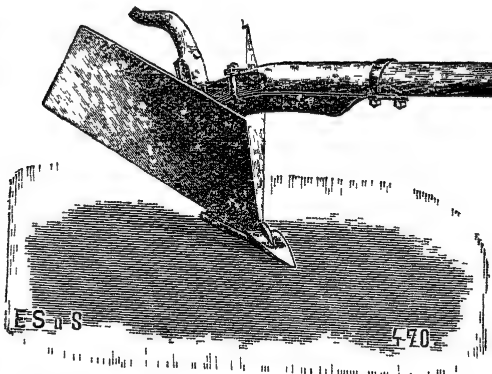
ट्रेडमार्क जावा प्लाऊ।

पैडी प्लाऊ (अर्थात धान का हल) बगर प्लेन या दस्ता के जिसको किसान आसानी से लगा सकते हैं।

हल का वजन ४४ सेर के क़रीब होता है।

हराई की गहराई १३½ इंच के करीब होती है।

चौड़ाई हराई की ३३ इंच के करीब होती है।

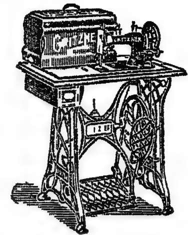


ट्रेड मार्क इन्डिया

कृषी यंत्रों के ख़रीदारों के लिये जब किसी इश्तिहार की जरूरत हो तो सिर्फ़ शोर्टज़ साहब के असली कृषी यंत्रों के इश्तिहार को मंगवाइये।

ग्रिट्जनर साहब की सीने की कल और पैर गाड़ियां।

जो तारीफ़ और सफ़ाई मे एक ही है।



इस कारख़ाने में सीने की कलें योरोप के महाद्वीप के सब कारख़ानो से ज्यादा तय्यार होती हैं। अर्थात् हर रोज दस घंटा काम होता है और एक मिनट में एक मशीन तय्यार की जाती है।

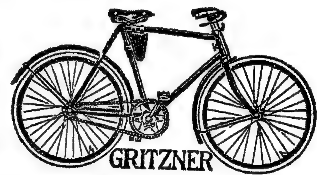
मशीन ख़ास कर हिन्दुस्तान की जरूरत के लिये तय्यार की जाती हैं।

ख़ास इनाम

मुक़ाम पेरिस की दुनियां भर की चीजों की नुमाइश, सन् १९०० ई० में-सोने का तमगा

मुक़ाम लाग की दुनियां भर की चीजों की नुमाइश सन् १९०५ ई० में-डिप्लोमा आफ आनर।

मुकाम मेलान की दुनियां भर की चीजों की नुमाइश सन् १९०६ ई० में—ग्रेंड प्रिक्स और बहुत से इनाम मिले हैं।



सूची जिसमें तस्वीर और दाम लिखे हुए हैं दरख्वास्त देने पर विना दाम दिये मिल सकती है।

जरमनी विभाग के नुमाइश में आइये और हमारी कलों को देखिये।

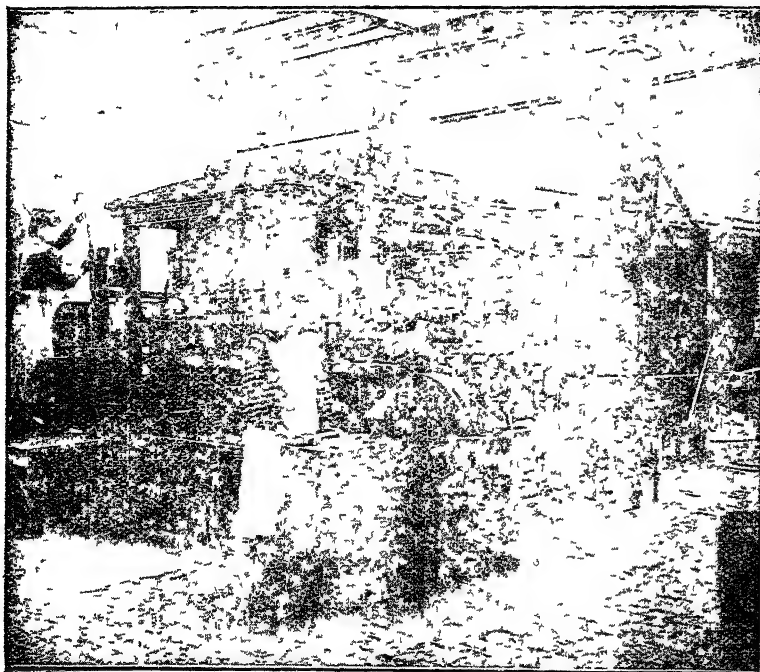
चिट्ठी भेजने का पता

ग्रिट्जनर मशीन कम्पनी लिमिटेड–दुरलख़ (जर्मनी)

यह कारख़ाना सन् १८७२ ई० से स्थापित है।

ए रोलर इन्जिनियरिंग वर्क्स
बरलिन नम्बर २० जरमनी

सन् १८५५ ई० से खास कर दियासलाई और दिया सलाई के बक्स की मशीन, हर किस्म की दियासलाइयों के लिये तैयार होती है



ए रोलर की नई और अच्छी आप से आप
काम करने वाली दिया सलाई की कल

समुन्दर पार के मुल्कों और खास कर हिन्दुस्तान में
दिया सलाई का कारखाना खड़ा करने का इस
कारखाना को बहुत जियादा तजुरबा है।

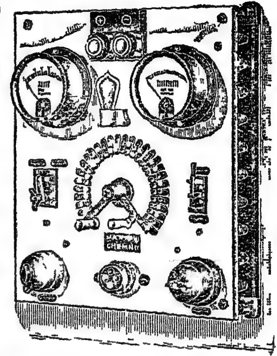
हिन्दुस्तान के क़रीब क़रीब सब दिया सलाई के कारखानों में
और योरोप के नामी दिया सलाई के कारखानों में
ए रोलर के मशीन से काम लिया जाता है।

मेक्लकोल केमेन्टज—जरमनी

फ़िज़िकल आप्रेटस (यानी विज्ञान पदार्थ के औज़ार)

साइनटिफ़िक इन्स्ट्रूमेन्टस (साइन्स के यन्त्र) पूरा सामान साइन्टिफ़िक इन्स्टीट्यूट और लेबुरेटरी का।

फिजिकेल डीमान्स्ट्रेशन आप्रेटस और इन्स्ट्रूमेंट फिजिक्स (इलमतबई) और मेकानिकल (इलम जर सक़ील) और अकोसटिक्स (इलम समा) और आपटिक्स (इलम मनाज़रा व मराया) और हीट (गरमी) और मेकनातीस और कुअत बरक़ी और रसायन विद्या की हर शाख़ की तालीम के लिये।

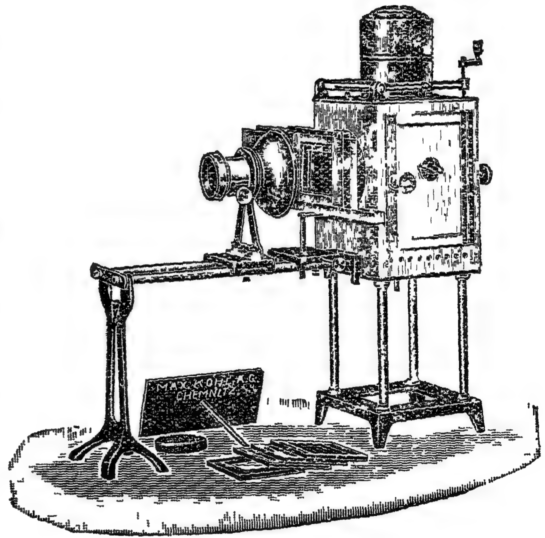


एक्सीपेरीमेन्टिङ्ग स्वेज बोर्ड
नमूना (ए)

आज कल के लेबोरेटरी के सामान और प्रसिद्ध रसायन विद्या जानने वालों की बनाई हुई फ़िज़िकल लिबोरेटरी और विद्यार्थियों के अभ्यास के लिये।

नये नये हाई वेकूअम अर पम्प और बहुत उमदा तरह के रोटेटिंग मरकरी पम्प और आयल अेयर पम्प।

फ़िज़िक्स और केमिस्ट्री के दर्जे के कमरों के लिये सामान, लेकचर टेबुल (मेज़) स्टिक कपबोर्ड (आलमारी) और शीशे की आलमारी, फ़िज़िकल आप्रेटस और डारकिनिंग आउटफिटस (काला करने का सामान) और एक्स पेरीमेन्टल सूइचबोर्ड और प्रोजेक्शन आप्रेटस के रखने के लिये।



रोन्टेजन आप्रेटस मामूली तेज़ और दूर के रेडीयो ग्राफ़ी के वास्ते

सी० जी० हाऊबल्ड लिमिटेड

केमिन्टज़ जरमनी

सन १८३७ से क़ायम है

ख़ास चीज़ें

सफेद करने और रंगने और रेशमी असबाब के मुतअल्लिक़ और
छापने और साफ व जिला करने की मशीन
हायड्रो एक्सट्रेक्टर कुल काम के लिये
बर्फ बनाने की कल
कागज बनाने की कल
गेस जलाने की कल
हाई प्रेशर कियर्स
धोने की कल
हायड्रो एक्सट्रेक्टर
अच्छे किस्म के मरसेराइजिंग रेन्ज
आप से आप काम करने वाला अंडर वाटर जिगर
गन्धक और इन्डेथिरीन रंग के रंगने की कल
नील के रंगने की कल
अनेलीन (पुड़िया का काला रंग) और पेरारेड (लाल)
रंगने की कल
प्रोटीन ब्लाक
छः रंग तक के छापने की कल
कपडे पर कलप चढ़ाने की कल, जल्दी से सुखाने वाला रेंज
और कपडा तानने की कल
कालेन्डर
हायड्रालिक मेंगल (कलप चढ़ाने की कल)
तह करने और नापने की कल

फ़िलिप डिपिनिशमिट माल तयार करने वाले|जौहरी

फ़ोर्टज़हायम जरमनी

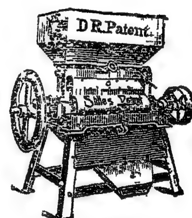
सोना श्रोर चांदी की थैलिया, बेग, डारोथी बेग, चोन की चूड़ी, मेलानी श्रोर सांप की शकल की चूड़ी "श्राइरिस" चूड़ी श्रोर हार श्रोर वेलट (यानी पेटी या कमरबंद) श्रोर हार, वाच ब्रेस लेट (घड़ी की चूड़ी) एनामिल्ड स्नेक जिला किया हुश्रा साप की शकल का श्राभूषण ।

यह सब चीजें तरह २ नमूने की मौजूद हैं

मुफ़स्सिल हाल पत्र द्वारा दरियाफ़्त कीजिये

एफ़ स्थिले साहब का मशीन का कारख़ाना

मिनस्टर वैस्ट फ़ारलेन



स्थिले साहब के पेटन्ट रोलर मिल में महीन या मोटा हर तरह का अनाज पीसा जाता है ।

स्थिले साहब की पेटन्ट मिल (चक्की) ख़ास कर गेहू श्रोर अनाज श्रोर धान इत्यादि के काम में लाई जाती है ।

सरकारी सारटीफ़िकेट को ख़रीदार देख सकते हैं

स्थिले साहब की पेटन्ट मिल (चक्की) तमाम दुनियां में काम में लाई जाती है ।

राटिंगेर नोटेन फ़ेबरिक राटिंगेन जरमनी

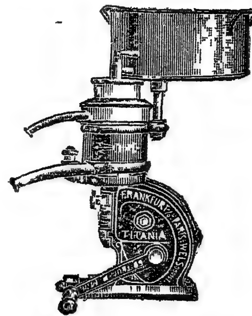
अव्वल दरजे की सीमन्स मारटिन साहब की बनाई हुई इसपात की कील जो जहाज़ बनाने श्रोर दूसरी ग़रज़ो के लिये काम में श्राती हैं

प्रति दिन २० टन बनती है

क़ीमत दरख़ास्त करने से मालूम हो सकती है

जिस जमींदार या रय्यत के पास गाय है मगर "टिटेनिया" कल नहीं है उसका रुपया नुक़सान जाता है

टिटेनियां जो सब से उत्तम दूध अलग करने का



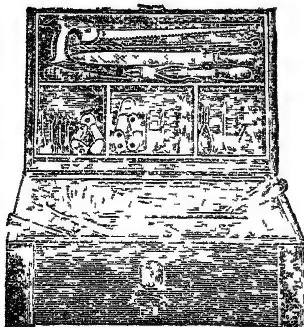
यंत्र है दूध से मक्खन ऐसो उत्तम रीति से निकालता है कि कोई और उसी किस्म की मशीन नहीं कर सकती। इस दुनियां भर के प्रसिद्ध मशीन टीटेनियां के काम में लाने से एक गाय से एक हफ़्ते में सेर भर मक्खन मिल सकता है। जितना मक्खन निकलना मुमकिन है उतना ही इस कल से निकलता है। इसके अलावा टीटेनिया के पाइट आसानी से चलते है। और मजबूत होते हैं। और सादी बनावट होने के सबब से यह बहुत जल्द साफ हो सकती है। और इस में मरम्मत क बहुत कम जरूरत पड़ती है। टाटेनियां की बिक्री बहुत जियादा है और हर एक ब्योपारी इस को बिक्री से बहुत फायदा उठाता है। जरमनी के कृषी विभाग में हमारी दूकान को देखिये और अपना मन भरोता कर लीजिये हर जिले में गुमाश्तों की जरूरत है।

टीटोनियां फ्रेंक फर्ट ओडर जरमनी

डिक् ट्रेड  मार्क डिक्

पूरे यंत्रों का बक्स
हर तरह की आरी
६०० किस्म को

रेती बहुत ही अच्छी हैं। बड़ी रेती से लेकर छोटी रेतियां तक



पलेकूरी टेक्निकल (बिजली की ताकत पहुचाने के लिये) यंत्र
जौहरियों के लिये, घड़ी साजो के लिये, बेल व बूटा बनाने वालों के लिये यंत्र

फ्रिडरिश डिक् एसलिंगन निकार

ब्राश ऐन्ड रुटँस टाइन

आम माल के रवाना करने और धुआँकश के एजेन्ट

सदर दफ़्तर—बर्लिन (जरमनी)

पसीज़र आफिस (मुसाफिरों के मुतअल्लिक़ दफ़्तर)

शाख़

ब्रीमन	अमसटरडम	वेन
ड्रेसडन	ओलडन्साल	टेटशेन
फ्रंकफुर्ट माइन	राटरडाम	निव यार्क
ग्रोनऊ	फिलिसिंगेन	बोस्टन
लाइपजिश	लंडन	फ़िलाडलफ़िया
मुर्नाचन	लिवरपूल	बालटीमोर
वायने	पैरिस	मान्ट्रियेल

इलाहाबाद में जरमनी की नुमायशी चीज़ों की रवानगी के सरकारी एजन्ट यानी गुमाश्ता

अव्वल दरजा की कम्पनियों के साथ बीमा बहुत मुनासिब शरह से किया जाता है

इस कारख़ाना की बहुत से शाखों में बड़े २ गोदाम और तिजारती कार व्यवार करने के लिये इस कम्पनी के ख़ास नौकर चाकर हैं

समुन्दर पार के कुल कारोबार के लिये ख़ास महकमे और तजुर्बेकार नौकर चाकर हैं

दाम और परमट के महसूल वगैरः की बाबत पूरा हाल ख़ुशी से बतलाया जाता है

ताजिर क़ालीन, नं० ४२ मुक़ाम बनारस छावनी

कारख़ाना कालीन मुक़ाम बनारस–ब्रेन्च हेड फ़ेकटरी (शाख़ कारख़ाना) मुक़ाम भदोही–हमारे कारख़ाने में ३०० से ज़्यादा करघे चलते हैं और जो क़ालीन हमारे कारख़ाने से तय्यार होता है उनके ख़रीदने का माहदह अंगरेज़ी व जरमनी के सौदागरान थोक बेचने वालों ने किया है।

हमारे यहां के जमना, मलाबार और फ़राहन नाम के क़ालीनों की बहुत फ़रमाइशें आती हैं और यह बहुत पसंद किये जाते हैं।

ख़ास कर हिन्दुस्तान के लिये सुतली के तल्ले के जूते या बूट
जो रोप सोल शूज़ निटिंग कंपनी लिमिटेड
इलाहाबाद में तयार किये जाते हैं

मामूली स्लीपर से लेकर बहुत उमदे सुहावने बूट तक हर क़िस्म और बढ़िया चमड़े के जूतों से भी साफ़ और हर मौसिम में आराम देने वाले, ख़ुश वज़ा, कम क़ीमत पर मिल सक्ते हैं—

कृपा करके हमारे कारख़ाने इलाहाबाद या इंडस्ट्रियल एक्ज़िबिशन की दूकान में पधारिये और माल को देखिये, और हमारे माल की तसवीरदार फ़ेहरिस्त, दाम सहित ऊपर लिखे कारख़ाने से एक पत्र भेजने पर मुफ़्त मिल सक्ती है—

सांवलदास रामप्रसाद मेनेजिंग एजेंट

मंगलाप्रसाद कम्पनी

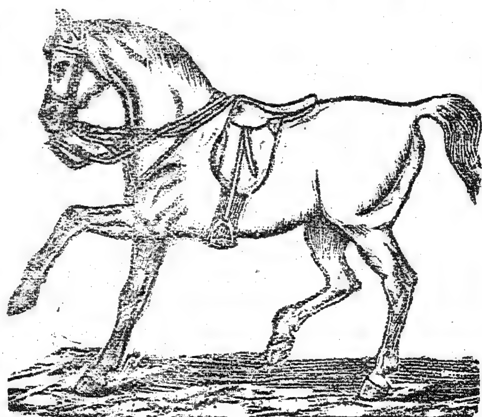
कानपूर के सिर्फ़ इसी कारख़ाने ने ज़ीनसाज़ी के लिये सन् १९०८ की फ्रानको ब्रिटिश प्रदर्शिनी लन्दन में तमगा प्राप्त किया है और इसके सिवाय चमड़े की बनी हुई बढ़िया चीज़ों के लिये और १७ सोने चांदी के तमगे और डिप्लोमे पाये हैं।

प्रदर्शिनी के जेनरल इन्डास्ट्रियल विभाग में इस कारख़ाने के बने हुये, ज़ीन, साज़, चमड़े के बक्स और २ चीज़ें अच्छी देखने योग्य हैं।

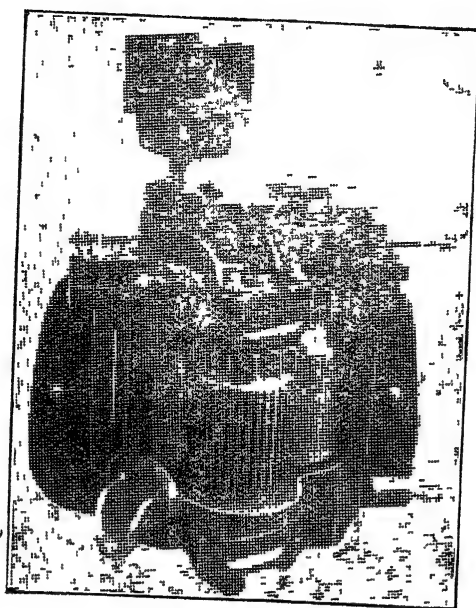
बहुत अच्छा अवसर है आइये, देखिये और सस्ते भाव पर चमड़े की चीज़ों के ख़रीदारों में नाम लिखवाइये।

पायोनियर की राय

यह कारख़ाना यथार्थ में कानपुर के चमड़े की बनी हुई चीज़ों की प्रशंसा क़ायम किये हुये है जो हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तान के बाहर भी फैली हुई है

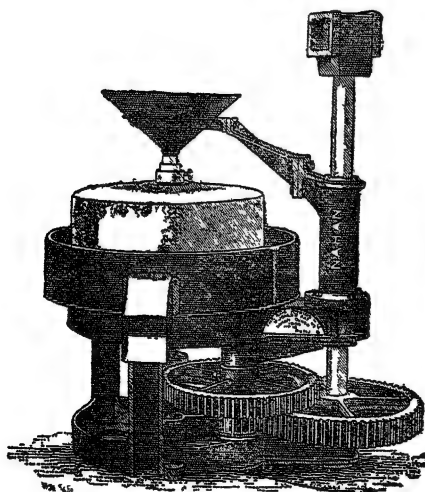


चर्खी अथवा कोल्हू ऊख पेरने का



सब से उत्तम नाहन के लोहे के कारखाने में भारत वर्ष में केवल भारत वासी शिल्पकार बनाते हैं प्रदर्शिनी में ३ प्रकार की तीन २ बेलनी चर्खी दिखाई गई हैं प्रत्येक का मूल्य अम्बाला शहर रेल स्टेशन पर ७५) रु० से ११०) रु० तक है।

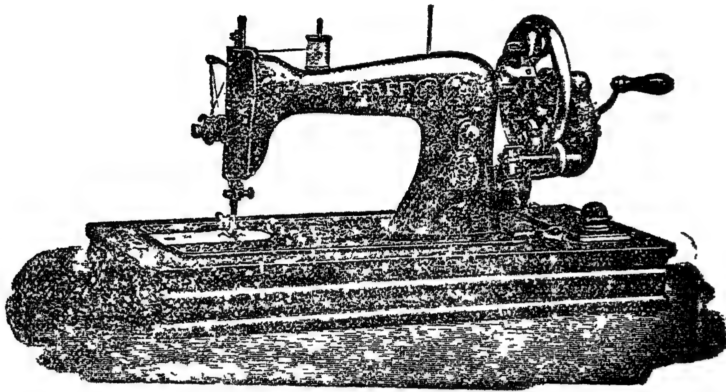
नाहन फान्डरी नाहन पंजाब



THE KAISAR-I-HIND MILL
PATENT

में बैल अथवा इनजन से चलने वाली आटा पीसने व सब प्रकार के वस्तुओं को पीसने की चक्की भारत वर्ष में केवल भारत वासी शिल्पकार बनाते हैं इस चक्की का नाम क़ैसर हिन्द है मूल्य एक चक्की अम्बाला शहर रेल स्टेशन पर बिला इनजन १५०) रु० है प्रदर्शकों को उचित है कि क़ैसर हिन्द तेल से चलनेवाले इनजन को अवश्य देखें इसी से चक्की चलती है।

पफ़ की सिलाई की मशीन



१ः—पफ़ मशीन के मुक़ाबिले की दूसरी मजबूत मशीन नहीं है।

२ः—पफ मशीन नीचे लिखे कारणें से बनाई गई है।

३ः—पफ़ मशीन चलती हुई बिलकुल आवाज नहीं देती।

४ः—पफ़ मशीन मोती की तरह गोल और बिलकुल साफ़ बखिया करती है।

५ः—पफ़ मशीन महीन से महीन और मोटे से मोटे कपड़े को सी लेती है।

६ः—पफ़ मशीन जोड़ पर बिलकुल नहीं रुकती। दरजियें के घर में और दरजियो के कारखानें में यही मशीन होना चाहिये।

पफ़ मशीन नीचे लिखे हुये क़िसमें की बनी हुई हैं

(१)—R. यानी सीधी शटल (ढरकी) वाली (२) K. याने हिलने वाली ढरकी की (३) L. याने K. से बड़ी आड़ी (४) E फिरकीदार (५) F. बड़ी फिरकीदार (६) H डिब्बीदार J. बड़ी डिब्बीदार G. चमड़े की, हर एक नमूना लाजवाब और लासानी है।

सभ्य पुरुषगण जो प्रदर्शिनी में आवे स्टाल न० ९८ G. में इन मशीनें के स्वयं देख सकते हैं।

उत्तरी हिन्दुस्तान और बर्मा के सोल एजन्ट रामलाल औलक कमर्शियल बिल्डिंग मेकलागन रोड लाहोर।

जो थोक बिक्री के बाबत दर और दाम ठीक कर सकते हैं।



दुनियां भर में सब से पुराना

छाता बनाने का कारख़ाना

इस कारख़ाने का सन् १८८४ ई० में कलकत्ते में
साने का तमगा मिल चुका है।

बाज़ार में इस कारख़ाने का छाता सब से उम्दा और सब से मजबूत है।

हिन्दुस्तान के एक मात्र एजेन्ट

डबल्यू० लिंगाचर

अपोलो स्ट्रीट

बम्बई

भरतपुर का प्रसिद्ध रेतीला पत्थर

यह पत्थर तामीर मकानात व खुदाई के कामों में विशेष कर काम में लाया जाता है यह दो प्रकार का होता है-एक बिलकुल लाल व चित्तीदार और दूसरा सफेद व क्रीम (मलाई) रंग का-परंतु दूसरी प्रकार का पत्थर कमयाब होता है और कीमती भी है-और वह हम्बार एक जुजी है जो कैई तहओं में भी चीरे जाने के योग्य है परंतु जब कि यह नया होता है इस पर खुदाई का काम बहुत सरल रीति से हो सक्ता है-इस पत्थर पर वायु, धूप और अन्य ऋतु का विकार नहीं पडता और यह किसी माप का जो दूसरे स्थान को भेजने योग्य हो मिल सक्ता है ॥

लाल पत्थर मौसमी विकार से कठोर हो जाता है-इसके चौके मिल सक्ते हैं और यह १ इञ्च की मोटाई से ले कर बड़े से बडे स्तम्भ (खम्भ) तक की मुटाई का मिल सक्ता है॥

आगरा, फतेपुर सीकरी, मथुरा, और देहली की जो इतिहासिक विशाल इमारतें हैं उनमे विशेष कर भरतपुर का ही पत्थर लगा है ॥

इसी पत्थर का एक उत्तम आदर्शनीय खुदाई के काम का झरोखा (गोख) बनाया जाकर इलाहाबाद की प्रदर्शिनी में २२ नम्बर के नजदीक सड़क के दक्षिण भाग के समीप रक्खा गया है ॥

इस पत्थर के मूल्य तथा और हालात वगैरह एजेन्ट स्टेट स्टोन डिपो बयाना बी० बी० एन्ड सी० आई० रेलवे, से दर्याफ़ करने से हासिल हो सक्ते हैं:-

एजेन्ट

स्टेट स्टोन डिपो

ब्याना (बी० बी० एन्ड सी० आई० रेलवे)

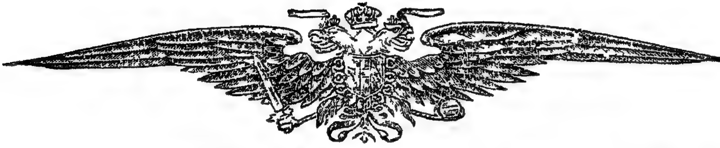
भरतपुर स्टेट

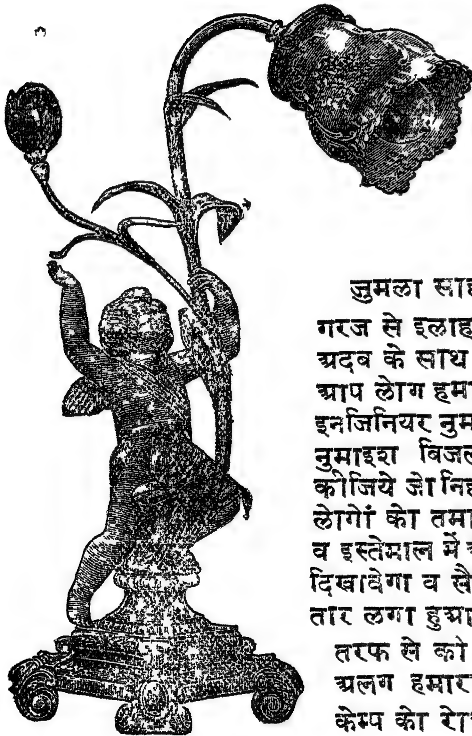
आर डिटमार कलकत्ता

शाख़ आर डिटमार ब्रुनर ब्रादर्स लिमिटेड कारोबार
मुक़ाम वैना और मैलान

ब-हुक्म आला हजरत राजा आस्ट्रिया

ज़रूर आइये   जरूरी इश्तिहार   देखिये





बिजली बत्ती का सामान—पखा, मोटर, डैनमो (रोशनी देने वाली मशीन) शाही सामान वास्ते मकान व इमारात महलात नवाब व राजा व कलबघर व कारख़ाना व दीगर मकान वगैरः वगैरः।

जुमला साहबान जो सैर नुमाइश की गरज से इलाहाबाद तशरीफ़ लावैं बहुत अदब के साथ दरख़ास्त की जाती है कि आप लोग हमारे एजेन्ट और इलेकट्रिकल इनजिनियर नुमाइशगाह से ब मुकाम केम्प नुमाइश बिजली मिशीन घर मुलाक़ात कीजिये जो निहायत ख़ुशी के साथ आप लोगों को तमाम दुनियां की कारआमद व इस्तेमाल में आने वाली नुमायशी चीजें दिखावेगा व सैर करावेगा तमाम केम्प में तार लगा हुआ है और रोशनी भी हमारी तरफ से की जाती है और एक कमरा अलग हमारा है—हमारी मिशीन कुल केम्प को रोशनी पहुंचाती है।

॥ नोटिस ॥

"आइये आइये"

और देखिये ।

एलगिन मिल्स के नुमायशी डेरे तम्बू और दरी जोकि अति उत्तम सन १८६४ ईसवी और अति उत्तम सन १९१० ईसवी में सब प्रकार से अव्वल दर्जे के चले आते हैं । एलगिन मिल्स के डेरे तम्बू और दरी केवल उनकी उत्तमता के कारण सबके सामने पेश किये जाते हैं । माल की खूबी को अच्छीतरह से जांच लीजिये फिर दामका अन्दाज ठीक हो जायगा । कीमत के भूल जाने के बादभी माल की खूबी बहुत दिनों तक याद रहती है ।

एलगिन मिल्स कम्पनी यानी

पुराना पुतलीघर

कानपूर



हिज हाईनेस महाराजा बनारस



हिज हाईनेस नव्वाब रामपूर



हिज हाईनेस राजा टेहरी



हिज हाईनेस राजा कपूर्थला



आनरेबिल सर जान प्रेसकाट हिवेट साहेब बहादुर के सी एस आई सी आई ई



आनरेबिल मिस्टर जस्टिस रिचर्डस



आनरेबिल राय सुन्दरलाल बहादुर सी आई ई



हिज हाईनेस महाराजा बलरामपुर

प्रस्तावना

गत वर्षों से हिन्दुस्तान के अनेक शहरों में कांग्रेस के साथ साथ कई प्रदर्शिनो हुई इन में से जो बनारस, मन्द्राज़ और बम्बई में हुई वह बहुत बड़ी थीं—गत वर्ष के जाड़े में लाहौर में भो एक बहुत बड़ी प्रदर्शिनी हुई थी बहुत सी तो इन में छोटी थीं और सिर्फ कांग्रेस के समय हो तक खुली रहीं—हाल में जो सब से बडो प्रदर्शिनी हिन्दुस्थान में हुई वह नागपुर में १९०८ में हुई थी इस प्रदर्शिनी की सफलता को देख करके बहुत से शिल्प विद्या के अनुरागियों की इच्छा हुई कि एक बहुत बडी प्रदर्शिनो जोकि हिन्दुस्तान के व्यापार के सामान्य हो की जाय और यह भी सोचा गया कि ऐसे प्रदर्शिनी के लिये आबादी और जगह के ख्याल से युक्त प्रान्त से बढ़ कर कोई जगह नहीं हो सकती—लेकिन सन् १९०७ में पानी न बरसने से और १९०८ साल के अन्न काल के सबब से और प्लेग की बार बार आपत्यों से इस की काररवाई शुरू नहीं की गई—लेकिन १९०९-१९१० के फसल की अच्छी होने की उम्मैद से यह तय किया गया कि यह साल प्रदर्शिनी के लिये बहुत उत्तम होगा—इस प्रान्त का अहोभाग्य समझना चाहिये कि इस प्रान्त के हाकिम ऐसे सुयोग्य लाट साहब सर जान प्रेसकाट हिवेट के० सी० एस० आई हैं जिन्होंने सब से पहले बड़े लाट साहब के कौन्सिल के व्यापार विभाग के मेम्बरी की हालत में और उस के बाद इन प्रान्तों की लफ़्टेन्ट गवर्नरी में इस मुल्क के भलाई का बहुत ख्याल रक्खा।

जब कि देश की ऐसी हालत हुई तब लाट साहब ने ऐसी प्रदर्शिनी होने के प्रस्ताव को भली भांति समर्थन किया-इलाहाबाद में एक सभा की गई जिस में इस प्रान्त के हर हिस्से के बहुत से रईस और जिमीन्दार और अनेक पेशों के प्रतिष्ठित पुरुष मौजूद थे यह निश्चय किया गया कि ऐसी प्रदर्शिनी करने का समय आ गया है और यह तै पाया कि २९ जुलाई को एक आम सभा की जाय जिस में इस तजवीज की अमलदरामद की जाय यह सभा इलाहाबाद में मेयोहाल में हुई थी और इस के सभापति सर जान हिवेट लाट साहब थे इस

में करीब ७०० प्रतिष्ठित प्रजा के प्रतिनिधि थे और जिस में नवाब रामपूर महाराज बनारस महाराज बलरामपूर हाईकोर्ट के जज साहबान बहुत से ताल्लुक़ेदार और जिमींदार व्यापार के प्रतिनिधि और वकील लोग सम्मिलित थे—उस सभा में सब लोगों ने जोश से यह तय किया कि आगामी शरद ऋतु में १९१०–११ में इलाहाबाद में प्रदर्शिनी की जाय—बहुत सा चन्दा तो उसी दम एकट्ठा हो गया और एक कार्य कारिणी सभा बनाई गई जिस में माननीय हाईकोर्ट के जज रिचर्डस साहब सभापति नियत किये गये—और एक हफ्ते में सात सब कमेटियां प्रथम सूचना पत्र और प्रदर्शिनी का स्थान चुनने के लिये—दर्शकों का इन्तिजाम करने के लिये और इस के सम्बन्धी बातों को तय करने के लिये उद्योग के साथ कार्य्य करने लगीं—पहले यह सभाये ७ थीं लेकिन बहुत जल्दी २० हो गईं जिस में कि वह लोग जो सर्कारी नौकर नहीं थे बहुतायत से थे—यह कहना तो अयुक्त न होगा कि अगर गवर्नमेन्ट की पूरी तरह से सहायता न होती तो ऐसे लोग अकेले इतनी सफलता न प्राप्त कर सकते—गवर्नमेन्ट के तरफ से बहुत से आदमी नियत किये गये जोकि इस काम के लिये बहुत योग्य थे और जिन्होंने अपने विद्या से बहुत से कार्य को पूर्ण रूप से किया—जिन के समान और लोग कहीं नहीं मिल सकते थे।

३१ जुलाई १९०९ को यह बात सब लोगों ने मिल के तय किया कि यह प्रदर्शिनी प्रयाग में जो कि युक्त प्रान्त की राजधानी है की जाय और इस में तो कुछ कहना ही नहीं है कि यह चुनाव सब से बढ़ कर हुआ है—नक़शा देखने से यह बात साफ़ ज़ाहिर है कि प्रयाग का स्थान कलकत्ता बम्बई लाहोर इत्यादि शहरों से बराबर ही दूरी पर है और यह नगर उत्तरीय हिन्दुस्तान के शहरों से जैसे बनारस लखनऊ दिल्ली कानपूर और आगरा से पास है—अलावा प्रयाग के उत्तम स्थान के इसका एक बड़ा महत्व यह है कि यह तीर्थ राज है जहां सब हिन्दू भक्त गण गङ्गा यमुना और सरस्वती के त्रिवेणी के संगम पर मुक्ति पाने के लिये हर साल स्नान करने को आते हैं—यह पवित्र स्नान का मेला जिस को माघ का मेला या मकर का मेला भी कहते है हर साल माघ या जनवरी महीने में शुरू होता है और एक महीने तक रहता है और लाखों हज़ारों यात्री यहाँ हिन्दुस्तान के सब तरफ़ से नहाने के लिये इकट्ठा होते हैं—यह प्रदर्शिनी भी उसी मौक़े पर खुली रहेगी

और यह उम्मेद की जाती है कि सब यात्री लोग इस को देख कर लाभ उठावेगे और अपने २ घर व गांव में जाकर यहां के तरह से खेती करेंगे जो कि अब तक पुराने चाल से की जाने के सबब से नाश को प्राप्त हो रही है और कारीगरी को सुधारेंगे क्योंकि हाथ से बनी हुई चीज़ कल से बनी हुई चीजो का मुकाबिला नहीं कर सकती।

बड़ी प्रदर्शिनी और दर्बार के मौक़ो पर इस बात की हमेशा दिक्कत होती है कि देखने और आने वालों के लिये क्या इन्तिजाम किया जाय—यहा के शहरो में बहुत थोड़ी होटल या टिकने की जगह हैं और उन जगहों पर भीड़ या ज्यादा ठहरने की गुंजायश नहीं है– और यही हाल हिन्दुस्तानियों का भी है जो प्रायः अपने किसी दोस्त के संग या यात्री लोग पंडा या पुरोहितों के घर में ठहर जाते हैं परन्तु इस प्रदर्शिनी के अवसर पर बहुत से लोग यहां आवेंगे जिनको कि सराय में या पंडा पुरोहितो के मकान में सब के साथ ठहरने से बड़ी दिक्कत होगी– इस लिये प्रदर्शिनी के सफलता के लिये यह जरूरी है कि आने वालों दर्शकों का पूरा तौर से इन्तिज़ाम किया जाय— इस लिये साल भर पहले से एक सभा नियत की गई है जो कि हर तरह के देखने वालों के आराम का इन्तिज़ाम उन खेमों के बड़े पड़ाव मे करे जो कि उन के लिये बनाये गये हैं।

इस पुस्तक में लगे हुए नक़शो को देखने से मालूम होगा कि प्रदर्शिनी के चारों तरफ़ किले के मैदान में खेमे गाडे गये हैं जिसमें देखने वालों के लिये हर तरह का इन्तज़ाम किया जायगा—ज़्यादा हाल इस पुस्तक के अख़ीर के भाग देखने से पता लगेगा और यह कहना यहां पर काफ़ी है कि खेमे मे टिकने वालों को एक और ज्यादा आराम होगा जबकि यहां दिनमें थोड़ी गरमी और रात को सर्दी पड़ती है और जबकि उन दिनो मे तमाशा बिगाड़ने वाली बरसात का कोई भय नहीं रहता है—उत्तरीय शहरों मसलन बनारस, लखनऊ, आगरा दिल्ली और कानपूर और दूसरे शहरों में भ्रमण करने वालों के लिये इलाहाबाद का स्थान मध्य मे है वहां की अच्छी आब हवा प्रदर्शिनी में ठहरने से यहा आने वालो को बहुत ही लाभ होगा।

इस प्रदर्शिनी में आने वालो को हिन्दुस्तान के शिल्प और व्यवसाय का पूरा परिचय होगा और उनको नये कल और हाथ के काम में फ़रक़ जांचने का पूरा मौक़ा मिलेगा—इस तरह से वे कानपूर के

दो बड़ी बड़ी पुतलीघरों के काम के मुकाबले में जुलाहो के काम जो तांत पर करते है फ़रक़ मालूम करेंगे और देखने वालो को यह मालूम हो जावेगा कि मौरूसी लियाक़त कारीगर के भद्दे तरीक़े के बदले मे कितनी कारगर होती है—और उनकी हुनरमन्दी को जो सब नुक़सो को दबा कर ऐसी उम्दा २ चीज़ें बनाते हैं जो कि तमाम दुनिया में पसन्द की जाती है-इस प्रदर्शिनी की ख़ास बात यह होगी कई मुकाबले हों जिस से दिहाती करघो मे जो तरक्की हुई ह जिस से मेहनत कम हो और काम की मिक़दार ज़्यादा हो जाची जावे।

प्रदर्शिनी का शिक्षा दायी प्रभुत्व के अलावा यह भी ख्याल ज़रूरी है कि लोग बहुत दूर दूर से इस को सिर्फ़ देखने ही के लिये और नये तरीक़े सीखने ही क लिये नहीं आवेंगे बल्कि उन के लिये हर तरह के खेल और तमाशे भी होने चाहियें—इस बात की ज़रूरत को प्रदर्शिनी के इन्तिजाम की कमेटी ने अच्छी तरह समझ लिया है और इस के लिये पूरा इन्तज़ाम किया है हर तरह के खेल का इन्तिज़ाम हो—एक पोलो का खेल जिस मे क़रीब २०००) के इनाम दिया जायगा प्रदर्शिनी क खुलने के पहले २ हफ़्ता मे होगा—१२ पोलो खेलने वाली छोटी टीम ने अब तक अपना खेलने वालो में नाम लिखवा लिया है और यह उम्मेद है कि ऐसा पोलो का खेल पहले हिन्दुस्तान में कभी नहीं हुआ-छोटे पोलो क खेल भी जनवरी मे होंगे—फ़रवरी के पहले हफ़्ते में एक घूंसा लड़ने वालो का दंगल होगा जिसमें ८०० आदमी लड़ेंगे-और १६ जनवरी से एक तमाशा हिन्दुस्तान की पुरानी २ बातों का दिखाया जायगा—यानी हर रोज़ एक न एक तमाशा होता ही रहैगा—एक तमाशेदार रेलगाड़ी और नाव जादू का शीशा और विलायत के एक मशहूर कारख़ाने की बनी हुई आतशबाज़ी का तमाशा दिखाया जायगा—और प्रदर्शिनी के भीतर बायसकोप और नाटक भी होगा।

प्रिन्स आफ़ वेल्स के गुरखा पलटन का अङ्गरेज़ी बाजा जिसके सान का और दूसरा विलायत के सिवाय कहीं नहीं है बजैगा—हिन्दुस्तान के मशहूर गाने वालो का गाना भी होगा-और सब से बढ़कर तमाशा जो कि हर एक आदमी को पसन्द आवेगा वह एक बड़ा भारी दङ्गल जिसमें कि यह तय किया जायगा कि हिन्दुस्तान मे सब से बढ़कर पहलवान कौन है और युक्त प्रान्त में कौन है—२६ से ३१ दिस-

म्बर तक होगा और प्रदर्शिनी भर हर हफ़्ते में भी होगा और इन सब से बढ़कर तो यह है कि हवाई जहाज और उड़न खटोले २८ दिसम्बर से ३१ तक उड़ाये जायगे—विलायत वालों ने चाहे यह तमाशा अपने भ्रमण में देखा होय लेकिन हिन्दुस्तान भर में यह तमाशा पहला होगा और देखने वालों को उस पर बहुत दिन तक बात करने का मौक़ा मिलैगा—इस तरह कोई दिन ऐसा न होगा जिस दिन कुछ न कुछ तमाशा न हो इस तरह इलाहाबाद में जाड़े में आने वालों के लिये तमाशा खेल और दिल बहलाव का पूरा मौक़ा मिलैगा प्रदर्शिनी में आने वालों के लिये और भी दिलबहलाव का प्रबन्ध भया है—यमुना के किनारे पर एक सुन्दर वेलकम क्लब हिन्दुस्तानी ढङ्ग से सजाया गया है जहा आराम करने और बात चीत करने और अख़बार पढ़ने का अच्छा मौक़ा रहैगा—लेडीज़ एनेक्स (यानी औरतो की सभागृह) जमना के किनारे पर बना है जहा दोस्तो से मिलने और चाय पानी का इन्तिजाम है—आगे लिखे हुये भागों मे जिसमे कि प्रदर्शिनी का पूरा हाल दिया है सब चीजो का जो यहा पर दिखलाई जायगी और देखने वालों के फ़ायदे मन्द होगी हाल दिया गया है।

टी० ई० बीवान एंड को

लंदन, म्यूज़िकल डिपो कलकत्ता।

कलकत्ता अक्तूबर १९१० ई०

प्रिय महाशय और महिला गण।

अपने बहुतेरे मित्रों और ग्राहकों के कहने से हम लोगो ने सर्व साधारण के सुविधा के लिये इलाहाबाद और मुफ़स्सिल के प्यानो के राग दुरुस्त और मरम्मत वगैरः करने के लिये पहिली नवम्बर से एक छोटी शाखा इलाहाबाद ३३ नं० कैनिंग रोड में खोली है। इस समय हम लोगों की शाखा पश्चिमी देशों के आब व हवा के योग्य गो थोड़े से लेकिन उत्तमोत्तम पियानो ले जायगी।

प्रदर्शिनी के दिनो में हम लोगों का सदर दफ़्तर प्रदर्शिनी के जनरल इण्डस्ट्रीज़ कोर्ट में होगा और हम लोग चाहते हैं कि हमारे मित्र" और ग्राहकगण जो प्रदर्शिनी देखने जांय हम लोगों के यहां आवैं। हम लोग अपनी प्रथा के अनुसार प्रार्थना पूर्वक सब को निमंत्रण देते हैं। कृपा करके इसे न भूलियेगा, हम लोग आप से मुलाकात करना चाहते हैं।

आप का वफ़ादार

टी० ई० बीवान एण्ड को

सन १९०३ ई० से स्थापित

दि ओरियेन्टल मोटरकार कम्पनी, जनरल एण्ड मोटर इनजीनियर लखनऊ

यह कम्पनी छोटे लाट साहब द्वारा खोली गई है। अंग्रेज मनेजर के प्रबंध से चलती है और यहा नई और पुरानी मोटरकार मिल सकती हैं। इस कम्पनी में आज तक के बने हुए उत्तमोत्तम मोटरकार के सामान मौजूद हैं और प्यागनेट की अच्छी तरह मरम्मत की जाती है।

मोटर पर सवारी करने वाले महाशय जो प्रदर्शिनी में आवेगे उन को इन चीजो के देखने से आनन्द प्राप्त होगा। लखनऊ की ओरियेन्टल मोटरकार कम्पनी प्रदर्शिनी में आने वालो से बडी खुशी के साथ अपनी दूकान में मिलेगी, जहां पर कम्पनी ने कुछ ख़ास गाडियां दिखलाने के लिये रक्खी हैं।

यह कम्पनी बहुत उमदा और चुने हुए असेसरीज (यानी मोटर का सामान) रखती है। दूकान पर डनलप के अलहृदा होने वाले पहियें के फ़ायदे समझाये जायगे और यहा डनलप के हर नाप के रबर टायर भी मिल सकेंगे यह कम्पनी नीचे लिखे मोटरकार बनाने वाले कम्पनियों की एजेन्ट है :—डलसली सिडले, अलब्रूना, क्लीमेन्ट, टालबोट, ब्राउन, लैनचेस्टर और रोलसरोजी वगैरः।

सदर फाटक के सामने एक बड़ा गोदाम है, वहा मोटर गाड़ियां नुमाइश में आनेवालो के लिये इकट्ठा की जांयगी और प्रदर्शिनी के भीतर पेटरोल आयेल, चरबी वगैरह और असेसरीज (सामान) मिलेंगे। हर क़िस्म की मरम्मत अंग्रेजो के सिखलाये हुए कारीगरों के द्वारा इस कारख़ाने में की जाती है। टेलीफोन देने से गाडिया भाड़े पर भी मिल सकेंगी। अपर इन्डिया में हरेक मेकरों (यानी बनाने वालों) के बनाये हुये टायर कलकत्ते के दाम पर मिलेंगे और वालकेनाइजड टायरों की मरम्मत एच० एफ० तरीक़े से मामूली बनवाई पर की जायगी।

पेनटिंग (रंगने) वारनिशिंग (वारनिश करने) और अपहोलसटरी (यानी असबाब व परदा वगैरः देना) के सिर्फ अच्छे काम किये जाते हैं और पसन्द किया हुआ रंग दिया जाता है। ग्राहकों के लिये इस्तेमाली मोटरकार की देख भाल की जाती है और उस का दाम भी तै कर दिया जाता है।

अच्छी अच्छी मोटरकार सफ़र के लिये भाड़े पर मिल सकती हैं। पेटरोल, कारबैड आयेल्स (तेल) चरबी वगैरः भी मिल सकती है। संयुक्त प्रदेश में हम लोगों का लखनऊ का गोदाम सब से बड़ा और अच्छी तरह सजाया गया है।

भाग-दूसरा

स्थानों का वर्णन

इस प्रदर्शिनी में ख़ास ख़ास इमारतें बनावट में हिन्दू व मुसल-मानी ढङ्ग की हैं—वे बहुत खूबी के साथ बनाई गई हैं और उन के सफेद गुम्मज और चोटियां हरे पेड़ों के बीच में विशेष शोभा देते हैं वे सब पीले पत्थर की बनी हैं बग़ैर सूर्य के चमक के बहुत ही चम-कीली मालूम होती हैं।

इस प्रदर्शिनी का हाता १२० एकड़ जमीन में है और ख़ेमे वग़ैरह की जगह मिला कर कुल २५० है और जरूरत पर १०० एकड़ और मिल सकती है—प्रदर्शिनी में जाने के ख़ास रास्ते और दूसरे रास्तों के लिये इस किताब में लगे हुये इलाहाबाद के छोटे नक़शे को देखना चाहिये।

इसके जाने का ख़ास रास्ता उत्तर के तरफ़ दर्शकों के ख़ेमो के बीच से है—एक खूबसूरत फाटक बना है उसके भीतर जाने से एक बड़ा सहन है जिसके तीनों तरफ हिन्दुस्तानी कारीगरों का काम है ख़ास सड़क में आने से पूर्वीय महल हैं जिन में प्रदर्शिनी की बहुत सी चीजें हैं—घुसते ही बाय तरफ़ एक गुम्मजदार मकान है जिसमें प्रदर्शिनी का दफ़्तर है जहां हर तरह की पूछ पाछ हो सकती है।

उसी के सामने दहनी तरफ़ के मकानों में डाक व तार घर के दफ़्तर रहेंगे और उनकी चीजें भी प्रदर्शिनी में रक्खी जायंगी—ख़ेमे में रहने वालों के आराम के लिये भी प्रदर्शिनी के आधे रास्ते पर एक डाक व तार घर है और आगे जाने से उत्तम कारीगरी और तसवीरों की जगह है और बायें तरफ दूसरे सहन में भी उत्तम कारीगरी और पूर्वीय हुनर के चीज़ों का मकान है आगे चल कर उन्हीं ख़ास जगहों पर दोनों तरफ़ शालीमार पेन्ट कम्पनी और एसकिय और लार्ड कम्पनी के दर्ज़ीख़ाने की दूकाने हैं-इस जगह पर ईस्ट इन्डियन रेलवे के दो इन्‌जिन हैं जिस्से मालूम पड़ता है कि गत ६० वर्षों में इनमें कितनी तरक्की की गई है पूरब के तरफ़ जो इन्‌जन हैं वह बलवे के वक़्त का कहा जाता है यही ख़ास इन्‌जन सन् १८५७

के आपत्ति के समय में जेनरल हेवलाक साहब की गाड़ी में जोता था जब वह कलकत्ते से बलवे के वक्त विजय पाकर फौज सहित जाते थे-थोड़े रोज हुए तब तक यह इन्जन अच्छी तरह काम में आता था जिस्से इसकी धातु और बनावट की जांच होती है—पच्छिम की तरफ जो इन्जन है वह जमालपुर में बना हुआ सब से भारी इन्जन जो एक हजार टन को गाडी खींच सकता है-यही तरीके से संयुक्त प्रान्त के पुतली घरों में कोयला लाद कर सस्ते भाडे में दिया जाता है।

पक्की सडक को पार कर के दो बडी इमारतें क्लाक टावर (घन्टा घर) के दोनों तरफ़ मिलती हैं (जिसका पूरा हाल जानने के लिये जवाहरात और उत्तम कारीगरों के भाग के वर्णन में किया जायगा, जिसमें लकड़ी पत्थर और धातु के सामान दिखाये जांयगे-ठीक एक खूबसूरत बडे महराब के सामने एक बड़ा सहन मिलैगा जिसके बीच में अङ्गरेजी बाजे की जगह है—बाजे के ठीक सामने उत्तर के तरफ घोषणा स्तम्भ होगा जिसकी अभी हाल में लाट साहब लार्ड मिन्टो ने महाराणी विक्टोरिया के १८५८ के घोषणा के स्मारक की नीव रक्खी है—घोषणा स्तम्भ के लिये रुपया इकट्ठा किया जा रहा है और यह भी सोचा गया है कि यही जमीन मोल लेकर एक बाग बनाया जाय जिसका नाम मिन्टो पार्क रहैगा—यह स्तम्भ महाराज अशोक के स्तम्भों के तरह होगा बैन्ड स्टैन्ड (बाजे की जगह) के आगे हिन्दू मुसलमान और अङ्गरेजों के भोजन का अलग अलग इन्तजाम रहेगा-इस जगह स्वागत कारिणी सभा और औरतों के क्लब के लिये कलकत्ते के मशहूर केलनर कम्पनी को भार दिया गया है।

बीच सहन में रोज गुरखा पलटन का बाजा बजैगा इसके चारों तरफ के हिस्सों मे जापान, अवध, लखनऊ और देशी रियास्तों के सामान दिखाये जांयगे उस महराब से जाकर सहन के अखीर में वेलकम क्लब (स्वागत कारिणी सभा) है और बाये तरफ लेडीज कोर्ट (यूरूपियन औरतों की सभा) और परदानशीन औरतों का स्थान है दाहने तरफ एजूकेशनल कोर्ट है।

वेलकम क्लब एक हिन्दू ढङ्ग का मकान है जिसके भीतर के सजावटके सामान का नमूना डाक्टर हेनकिन साहब ने आगर और फ़तेहपूर सीकरी से भेजा है—पीछे के तरफ़ एक चौड़ा चबूतरा

ठीक जमना के सामने है जहां पनपियाव का इन्तजाम उमदा पर्दों के बीच में रक्खा गया है—इस क्लब के स्थापित करने का उद्देश्य यह है कि संसार को सब जातियां मिलैं और आपस में मित्र भाव उत्पन्न हो—वहां जाने को दरख़ास्त बेलकम क्लब के ज्वाइन्ट सेक्रेटरी के पास भेजना चाहिये प्रदर्शिनी के कुल भागों में और ख़ास सड़क पर रात को खूब रोशनी होगी और मकानों में बिजली की रोशनी होगी।

वहां की शोभा बढ़ाने के लिये दो परीदार फ़वारे एक ख़ास दरवाजे पर और एक बेलकम क्लब के सामने रक्खे गये हैं।

क्लाक टावर (घन्टा घर) जोकि प्रदर्शिनी भर में सब से ऊंचा है यहां पर आते ही दिखाई पडेगा और वहां पर सिपाहियों का पहरा रहेगा जोकि आग लगने या और ख़तरे के समय पर निगरानी करैंगे इस मीनार पर एक बड़ी रोशनी रहेगी जिस्से बहुत दूर तक उजियाला रहैगा—इसी इमारत के पूरब में खेल और तमाशे का मैदान है जहां अद्भुत रेल हंसी की गैलरी है और नाटक और दंगल का अखाड़ा उत्तर के तरफ़ है—बीच में बायसकोप और तरह तरह के तमाशे का इन्तजाम है।

किले के दीवार के पूरब के तरफ पोलो खेल का और हवाई जहाज़ का मैदान है-पोलो क्रिकेट, हाकी, फौजी तमाशे और पूर्वीय लूस अथवा हवाई जहाज का तमाशा इसी जगह होगा-यह हवाई जहाज जमना के किनारे से चलेगा और मैदान में किले के चारों तरफ़ होकर फिर अपने जगह पर आजायगा प्रति सप्ताह में आतशबाजी भी किले के धुस पर से दिखाई जायगी जोकि बैंड स्टेन्ड और लेडीज़ कोर्ट से भी साफ साफ़ दिखाई पडेगी।

शिल्पीय और बिने हुये कामों का दृश्य रेल की सड़क से ख़ास सड़क तक रहैगा-यह ऐसी जगह बनाई गई है कि जिसमें इन चीजों का भारी सामान सुगमता से रेल के द्वारा आ सके-दक्षिण के तरफ से चल कर बाये तरफ म्यूनीसिपल और चिकित्सा सम्बन्धी चीजों का दृश्य रहेगा-उत्तर के तरफ रुड़की इन्जिनियरिङ्ग कालेज का सामान रहेगा-इसके पीछे के तरफ़ कलकत्ते की लेसली कम्पनी का बनाया मकान है जिसमें कानपुर के नामी इम्पायर इन्जिनियरिङ्ग कम्पनी का सामान रहेगा-उत्तर के तरफ़ बड़े कमरे में कल और यंत्रालय सम-

बंधी विषय रक्खे गये हैं। इसके आगे कई नामी कम्पनी के बनाये हुये मकान यानी जैक्स क० पिरजनी का वसल का वर्न क० मैन क० और औसतर क० हैं-इसके आगे एक बड़े मकान में बुने हुये सामान हैं और जिसमें कानपुर की तीन बड़ी पुतलीघरों एलगिन मिल म्योर मिल और कानपूर काटन मिलस के खेमों के नमूने भी रक्खे गये हैं रेल-के दीवार से मिले हुये मकान मे पश्चिमोत्तर प्रान्त के बुने हुये सामान रहेंगे-उत्तर के तरफ आगे बढ़ कर बाराबंकी वीविंग स्कूल का मकान है और उसी के पास सीसा और पीतल ढालने की भट्टियां हैं और आतशबाज़ी बनती है इसी तरफ़ पुलिस और आग के बचाव का और चोट इत्यादि लगने पर इलाज करने का अस्पताल है-रेलवे लाइन के पास एक लम्बी कतार चौडा सायबान बनाया गया है जिस में मोटर गाड़ियां वाईसिकिल और तरह तरह की गाड़ियां दिखाई जांयगी-सब जगह बिजुली पहुंचाने और कलों के चलाने के लिये भी यहीं पर पावर हाउस है जहां पर ख़ास इन्जिन और बुआइलर दिखाये गये हैं-जिस का पता दो लम्बी चिमनियों से फौरन लगता है-नदी के किनारे पर पानी खींचने की कल लगी है और पानी खींच कर चिकित्सा खण्ड के निकट इकट्ठा किया जाता है-ईस्ट इण्डियन रेलवे का किले का स्टेशन सिर्फ प्रदर्शिनी में चीज लाने के लिये है और उत्तर के तरफ मुसाफ़िरों के लिये भी स्टेशन बना है रेल की सड़क पर चलने के लिये एक पुल बना है जहां से कि इन्जिनियरिंग और कृषी विभाग में जाने का रास्ता है या यहां से जमुना बैंक रोड पर जा सकते हैं-यहां से पानी खींचने के कल के पास से होते हुये शिक्षा विभाग है जहां प्रदर्शिनी सम्बधी पुस्तके विकती हैं-इस मकान के पीछे एक महादेव का मन्दिर है जहां यात्री लोग भी दरशन के लिये जाते हैं और उनके वहा जाने के लिये एक ख़ास इन्तजाम किया गया है।

रेल के स्टेशन के ठीक सामने औरतो और मर्दों के मिलने की सभा का स्थान है जोकि पुराने वक्त के बने हुये घाट पर बनाया गया है-यहां एक सजा हुआ कमरा है जहा चाह पानी का इन्तज़ाम है जहा औरते और मर्द लोग आपस में बात चीत और भोजन कर सकते हैं इसी के बाद एक गुम्मजनुमा धुवाकश के लिये इमारत है जिसको कि इण्डियन टी सेस कमिटी ने तैय्यार किया है। इस के बाद

वाटर शियुट है अब यहां से दर्शक लोग कृषी खण्ड में जांयगे जो कि बहुत लम्बे चौड़े जगह में रेल के पश्चिम के तरफ़ है और उसी में बन सम्बधी वस्तु इकट्ठा है।

जमना बैंक रोड से चल कर सामने कृषी विभाग का सहन है और वहां कई सड़क है जो सब झील को जाती हैं—पूरब का रास्ता कृषी सम्बंधी यन्त्री के विभाग में जाता है-यहा से दाहिने तरफ़ पाट कलचर हाउस है और बांई तरफ़ जानवरो के खाने की चीजो का दिखाव है फिर बाई तरफ़ रेशम के कोडे पालने कातने और बिनने का काम दिखाया गया है--इसके सामने कृषी विभाग का दफ़्तर है जहां हर तरह के खेती की बात पूछने से पता लग सकता है-कृषी यन्त्रों के बाद नहर की कार्रवाई बहुत पूरी तरह से दिखाई गई है और बिलकुल दहिने हाथ की गोल सड़क से चलने से दर्शक लोग वहा पहुच जायगे जहां चीनी बनती दिखाई जाती है और जहा जानवरों और पक्षियों के पालने की विधि बताई जाती है वहा से लौटने पर बीच मे डेयरी फ़ार्म है जहा गाय और दूध से लगाकर तैय्यार मक्खन और उसके बनाने तक का तरीक़ा दिखाया जाता है वहां से दो सड़क जाती है एक बन विभाग को और दूसरी डिमान्सट्रेशन ग्रौन्ड पर जहां से उत्तर की तरफ़ बन विभाग को रास्ता गया है बन विभाग के खण्ड मे पूर्व के तरफ़ नगीना-होशियारपूर और बर्मा के लकड़ी के काम दिखाये गये है और शिकार मे पाई हुई चीजे शेर के और और जानवरों के चमड़े भी रक्खे गये है हर तरह की शहतीरों का नमूना और पेड़ की तसवीरें भी दिखलाई गई हैं-उत्तर के दरवाजे से जाने पर एक जङ्गल का दृश्य दिखाया गया है जहा कि बनैले जानवर अपनी असली हालत में रहते है-और बन्दूक़, मछरी फ़साने का सामान मशहूर बनाने वालों के कारख़ाने से नमूने के लिये आये हैं उसी खण्ड मे पच्छिम के तरफ़ जङ्गल की छोटी छोटी पैदायश जैसे रङ्ग का सामान मोम, शहद इत्यादि चीजे दिखाई गई है और अजायब घर से आये हुये सांप, प्लेग के चूहे मछलियां वग़ैरह भी मगाई गई हैं-आगे पच्छिम के तरफ़ तारपीन निकालने की गुद्दा बनाने की और लकड़ी का सामान बनाने की कले दिखाई गई है इसके बाद दो मकानो में लकड़ा की छोटी २ चीजे बनाने का सामान है वहां एक लाह की भी कल है।

यहां पर एक जङ्गली ज़ात थारुओं को जो कि नैपाल के जङ्गल में रहते हैं बुलाये गये हैं जो वहां के तरह झोंपड़ा बना कर यहां भी रहते हैं।

सर्व साधारण के लिये यहां पर दो फाटक हैं शहर के तरफ एक तो जमना बैंक रोड से और दूसरा नेलसन रोड से-क़िले के तरफ नेलसन रोड से खेल के मैदान में जहां पोलो वग़ैरह होंगे निकलती है और वहां से यह सब तमाशे के देखने के लिये सस्ते टिकट रक्खे गये हैं-इस फाटक से हिन्दुस्तानी औरतें जो कि परदा क्लब मे जांयगी जासकती हैं और यह फाटक रोज तड़के यात्रियों के लिये जो मन्दिर में दर्शन करना चाहेंगे खुला रहेगा ॥

B

रिचार्ड और क्रूडास

इनजीनियर और ठीकादार

इस कारखाने में आला दरजे के फौलाद के काम जैसे पुल, छत, लोहे की इमारत, पकाने के बरतन, टब, सादे और नकाशीदार सांचे के बनाये जाते है।

हर तरह की चीजें जैसे मशीनरी, भाप तेल और गैस के इनजिन, पम्प और साधारण इनजीनियरी के सामान मौजूद रहते हैं।

विशेषता यह है, कि यह कम्पनी हिफ़ज़ान सेहत के मुतअल्लिक़ ठण्डे और गरम पानी के इनजीनियर है

यह कम्पनी किटसन इनकैनडीसेण्ट आयेल लाइट की जो म्यूनीसिपैलिटी और रेलवे में रोशनी करने के काम में आता है एक मात्र एजेण्ट है।

इस कम्पनी का वहुत सा माल जैसे रोल्ड स्टीम बीम (लोहे की धन्नियां), प्लेट, एङ्गिल (कोनिया), टीज जस्त चढ़ा हुआ लोहा नाली और सादी चादर, ढले और बने हुये लोहे के नल वगैरा पश्चिमी हिन्दुस्तान में जाते है।

यह कम्पनी पूली शैफ़्टिङ्ग और साधारण इनजीनियरिंग के सामान लोहे की चीजें और इमारती लकड़ी की सौदागर है।

पूरे हाल और सूचीपत्र के लिये ऐगरी कलचरल और हाईजीन कोर्ट में हमारी दूकान पर दरयाफ़्त कीजिये।

दाम और ब्योरेवार हाल के लिये हमारे सदर दफ़्तर को लिखने से मुफ़्त मिल सकता है।

वाई कल्ला आयेरन वर्क बम्बई।

भाग तीसरा

(अ) ख़ास जाने वाली चौकी का वर्णन

प्रदर्शिनी के दर्शकों को इस दरवाजे में जाते हुए एक बड़ा सहन मिलैगा जिसके तीन तरफ मे १०० कोठरियां जो ८ फ़ीट लम्बी और ८ फीट चौड़ी है और जिनके सामने ७ फीट बरांडा है मिलती है-सिवाय दो कोठरियो के जो दर्शको के आराम के लिये नियत की गई है इस में जाते ही प्रदर्शिनी की मनोहरता आरम्भ हो जाती है और इन कोठरियो मे कारीगर लोग पुराने चाल से काम करते मिलैंगे-इन कोठरियों मे हिन्दुस्तान के पैदावार का सक्षेप में नमूना दिखाया गया है यह कारीगर चुने भये होंगे जो इस प्रान्त मे काम करते हैं इन कोठरियों मे अलग २ काम के कारीगर अलग २ रक्खे गये हैं-यहां पर सक्षेप में वर्णन कर के इसका पूरा हाल इस पुस्तक के अख़ीर के सूची में दिया जायगा बाये तरफ़ बुनने वालों का कारख़ाना है इस मे ख़ास कारीगर गलीचा बनाने वाले है जो कि बनारस आगरा मिर्जापुर लखनऊ जौनपुर और अमृतसर से बुलाये गये है और इनके काम के नमूने देखने से इस प्रान्त और पंजाब के काम मे फर्क का पता लग जायगा-मेरट के कम्बल बनाने वाले और बहराइच के नमदा बनाने वालो का काम भी दिखाया जायगा-सूत के काम करने वाले मन्द्राज और इन प्रान्तो के भी बुलाये गये हैं-और बाराबकी के हिवेट साहिब के बुनने के स्कूल का काम दिखाया जायगा—देशी करघो का अच्छा काम मन्द्राज का होगा और फैजाबाद जिले के टान्डा का जामदानी का काम भी रहैगा—फ़ैजाबाद से पेशावर तक के तैय्यार काम के नमूने होगे किन्तु पेशावर का बना हुआ कपड़ा अत्यन्त मनोरंजक होगा—लखनऊ, सीतापुर और बुलन्द-शहर के कपड़ा छापने का काम भी दिखाया गया है और इन महीन कामो के खूबसूरती को देख कर दर्शक लोग ज़रूर अचम्भे में होंगे—और लखनऊ का चिकन का काम बेल, बूटा की काट और किनारी का काम और बहुत तरह का काम बड़े ख़ूबसूरती के साथ बनाया गया है-इन चार कोठरियों में आगरा के गोटा

किनारी व सलमा सितारे का काम भी लखनऊ के काम की तरह मनोरंजक होगा रेशम के काम के लिये बनारस की कारीगरी का तो पूछना ही क्या है-यहा एक कारीगर ज़रदोज़ वनाता हुआ भी मिलेगा-वनारस के कपड़ो के वनाने का सामान बहुत वड़ा होने के सबब से दूसरी जगह रक्खा गया है जिस का हाल बारहवे भाग में देखने से पता लगैगा जहा कि जुलाहे लोग कीनख़ाब, पोत, सारी दुपट्टा ओर रेशम के काम बनावैंगे-अमृतसर के ओर कामो के अलावा दुशाले की कारीगरी भी दिखलाई जायगी वहां का मशहूर कारख़ाना जोकि देवीसहाय चम्पामल का है इन सब चीजो का उत्तरदायी है।

हिन्दुस्तान के लकड़ी का काम तमाम ससार में विख्यात है लेकिन इसके रक्षा करने का कोई प्रबध नहीं भया है-यहा नगीना ओर सहारनपुर के कारीगर लकड़ी पर हर तरह का काम बनावैंगे फ़तेहगढ़ बुलन्दशहर आगरा ओर जालन्धर के लकड़ी के हर तरह के सादे ओर धातु के मिले भये काम दिखलाये जांयगे जिससे कि दर्शकों को उनके काम जाचने का अच्छा मौक़ा मिलेगा।

मैनपुरी के तारकशी के काम का नमूना भी दिखलाया गया है जिस पर कि वे बड़ी खूबसूरती के साथ पीतल के महीन तार का काम करते हैं-इसी तरह काश्मीर के काम के तरह जौनपुर का काम भी दिखलाया गया है।

हाथी दात पर काम करने वाले होशियारपुर के एक कारीगर का काम भी दिखलाया गया है।

इसी तरफ ईस्ट इन्डियन रेलवे के प्रदर्शिनी का दफ़्तर ओर काग़-ज़ात रखने का दफ़्तर भी है जहां सर्वसाधारण के जाने की मुमानियत है।

शाहजहानपुर ज़िले के तिलहर शहर का लकड़ी पर रोगन का काम मशहूर है ओर ओर यह काम कमरों के लकड़ी के सामान के ऊपर बड़े खूबी से किया जाता है-यह काम कुर्सियों पर बहुतायत से होता है ओर उसी का नमूना यहां दिखाया गया है-फाटक के दहने तरफ़ मथुरा जी के मशहूर सांचो का काम भी दिखाया गया है जिसकी ख़ास तारीफ़ महीन पेचदार रंगीन बनाने की है-यहां फ़र्रुख़ाबाद के मशहूर सुमेरचन्द के कारख़ाने के काम का नमूना दिखाया गया है-यहां छापने का काम चिकन साटन ओर रेशमी

कपडों पर बडे होशियारी और मेहनत के साथ लकड़ी के छापे से कई मरतबा में छापा जाता है और दर्शकों के लिये अवश्य ही मनोहर होगा।

फाटक के दहिनी तरफ जाने से इत्र बनाने की तरकीब बतायी जाती है कि किस तरह से वे लोग ताज़े फूल या तेल के आधार पर इत्र तैय्यार करते है।

हिन्दुस्तान में सब से मशहूर लखनऊ के अशगरअली के कारख़ाने का सामान रक्खा गया है-सुगन्धित पदार्थ के लिये जौनपुर और गाजीपुर भी बिख्यात हैं गाजीपुर में तो बहुत बढ़िया किस्म का गुलाब का इत्र तैय्यार होता है और बहुत बिलायत को भी जाता है और जौनपुर की चमेली इत्यादि की चीजें मशहूर हैं जौनपुर के कारख़ानों का काम कृषी विभाग में होगा—इसके बाद वीणा आदि गाने की चीज़ों के सामान बनाने वाले लखनऊ और दिल्ली के कारीगर होंगे।

युक्त प्रान्त में अमूल्य पत्थरो की कमी है और आगरा और मथुरा के कारीगर लाल पत्थर पर बहुत बारीक काम बनाते है-इन स्थानो में भ्रमण करने वाले ने आगरा के एतमादुद्दौला और फतेहपुर सीकरी के उजाड खण्ड में और मथुरा के मन्दिरों में इनके कारीगरी की खूबी देखी होगी-इन जगहों के चुने हुये कारीगर यहा रहेंगे- और दूसरे किस्म का काम जो यहां का परिचित है वह सङ्गमरमर की कारीगरी है जिसमें वे खोद करके बहुत बारीक काम तैय्यार करते हैं-यहां के भी दो कारीगर प्रदर्शिनी के दर्शकों के लिये काम करेंगे-मिरजापूर के पत्थर महल का काम जिसमें जाली का काम वारजा और खिड़कियो के लिये तैय्यार होता है दिखाया जायगा-इन कामों को लोगों को ख़ास तौर से देखना चाहिये-इन प्रान्तो में सिर्फ एक ही जगह यानी बादा मे भी केन नदी से निकाले हुये पत्थरों के छोटे छोटे काम तैय्यार होते हैं जिनका भी दृश्य दो कोठरियों मे दिखलाया जायगा—फिर इसके बाद मट्टी के बरतन के काम का दिखाव है जो कि आजमगढ़ और निजामाबाद से मगाये गये हैं जहां काली और खैरी मट्टियों पर रुपैहले काम बनाये जाते हैं उनकी मट्टी और हाथ से बनाने का काम दिखाया गया है इसमें फूल के उठे हुये काम बहुत ही उम्दा हैं।

खुरजा शहर का भी काम जो उसी के बराबरी का है पूरी तौर से दिखाया जायगा जिसमे देखने वाले दोनों जगहों के काम उम्दगी को जाच कर सके इन जगहो के अलावा सीतापुर उतरौला जो जिला गोन्डा में है और चुनार जो मिर्जापूर के जिले मे है और इलाहाबाद के कुम्हारों का काम दिखाया जायगा जिस से मालूम होगा कि पुराने ढङ्ग से भी बनाने से कितना खूबसूरत और फूलदार काम तैय्यार हो सकता है-लखनऊ के मट्टी के खिलौने की तारीफ़ तो संसारभर में मशहूर है और वहीं सब से बढ़िया बनाने वालों का काम भी दिखाया जायगा।

ग़ाजीपूर भी शीशे की चूड़ी के काम के लिये मशहूर है और वहा क़रीब २००) रु० जोडे की भी चूड़ियां तैय्यार होती हैं-वही काम यहां एक स्थान पर दिखाया जायगा।

इस प्रान्त में पीतल के काम के लिये बनारस विख्यात है लेकिन सस्ते माल के मांग के सबब से यहां की चीजें कुछ ख़राब बनने लगी हैं जो कि वाहरी आदमी लेजाते है और यह आशा की जाती है कि इस प्रदर्शिनी से उनको अपने काम में उन्नति करने का मौका मिलेगा—मुरादाबाद में क़लई के वरतन बहुत उत्तमता से बनाये जाते हैं-यह बहुत उम्दगी से बनाया जाता है और तैय्यार होने पर बहुत खूबसूरत बन जाता है-मुरादाबाद के मशहूर मोहम्मद यारख़ा के कारख़ाने के आदमी इस काम को करने के लिये यहां आये हैं— लखनऊ के बोदरी का काम जो कि बनारस और मुरादाबाद के कामों के आगे नहीं चलता जिसमें मुसलमानी नमूने का काम कड़े लोहे के ऊपर बड़े खूबसूरती से किया जाता है इस प्रदर्शिनी मे रहेगा-इस काम की ख़ास जगह हिन्दुस्तान में गो हैदराबाद है लेकिन लखनऊ का काम इस से कम नहीं है और इस प्रदर्शिनी की सफलता को देख कर उनको उसमें उन्नति करने का ज़रूर साहस होगा- थोड़े दिनों से अलीगढ़ के तालों की भी बहुत तारीफ हो रही है— इस काम का महत्व इसी से जान पड़ता है कि डाक विभाग में कितने आदमी ऐसे काम बनाने के लिये नौकर हैं इस विभाग में ताले और मोहरे बहुत बनते हैं-इस प्रदर्शिनी में भी डाक विभाग का काम दो कोठरियों में दिखाया गया है-यहां पर यह कहना बेजा न होगा कि प्रदर्शिनी के चपरासियों की चपरास और हाथ में पहनने का टप्पा

एक अलीगढ़ के कारख़ाने का बना है-यहां एक अलीगढ़ के चाक़ू का कारख़ाना भी है जिसका कि हर तरह से शफ़ील्ड (विलायत) के चाकू से मुकाबला हो सकता है यहा के सुनारों के काम की वहुत तारीफ है और इन प्रान्तों में इनका मध्य लखनऊ है-लेकिन इसके सिवाय और जगहों में भी काम अच्छा वनता है-इस प्रदर्शिनी में दो स्थानों में प्रयाग और लखनऊ के सुनार काम करेंगे।

हिन्दुस्तान में मट्टी के बरतनों का ज्यादा काम न होने से यहां के गरीब से गरीब आदमियों के यहां दो चार पीतल या लोहे के बरतन रहते हैं-इस प्रदर्शिनी में बहरायच और बलिया के ढले हुये धातु के बरतन बनने का कारख़ाना भी है और एक जगह इलाहाबाद के पीतल का सामान वनते हुये भी दिखलाया गया है-इसी जगह सीमा प्रान्त के पिशुरा शहर के आबनूश और शीशम का काम बनाने वाले रहेंगे जिसको वह पहले ढाचा खींच कर बड़े खूवी से बनाते हैं फिर बना कर वगैर किसी किस्म के मसाले व गोंद के वे लकड़ी में कस देते हैं जिससे वे मजबूत जुड़ जाते हैं—काम बहुत मेहनत का तो जरूर है लेकिन चीज बहुत उम्दा तैय्यार हो जाती है-टेबुल-जाली और बक़स भी इसी तरह का बनता है।

इलाहाबाद बेंक जो कि उत्तर प्रदेश में बहुत ठीक और चलता हुआ बंक है और इसका बड़ा दफ़र यहीं होने के सबब से उसकी एक शाखा यहां भी खुल गई है यहां आने वालो को रुपया के लेन देन में और हुन्डी भुजाने में बड़ा सुभीता होगा और शहर में दूर जाने से बच जायगे॥

तार और धाक विभाग की चीज़ें

बायें तरफ की खूबसूरत गुम्मजदार इमारत में प्रदर्शिनी का दफ़र है--उसी तरह के दाहने तरफ़ वाले मकान में सिर्फ डाक और तार घर ही नहीं है किन्तु वहा की बनी हुई चीजें भी देखने के लिये रक्खी गई हैं--डाक विभाग के अद्‌भुत वस्तुओं में से दो जहाज मोरिया और सालसेट नामक का जिन पर डाक जाती है नमूना है उस का नमूना बहुत ही ठीक २ बनाया गया है--यह सब डाक विभाग की

चीज़ें हैं और उस के डाइरेक्टर ने बड़े मेहरबानी से युक्त प्रान्त के प्रदर्शिनी में रखने के लिये दिया है उस में कम्पनी की झण्डियां लगी हुई हैं और इन नमूने के जाहाज़ों को देख कर दर्शकों को एक बड़े जहाज़ जिस का नाम पी० एन्ड० ओ० स्टीम नेविगेशन कम्पनी है और जिस का विलायत और उस के बड़े पूर्वीय राज्य का बहुत लगाव है हाल मालूम होगा कलकत्ता के बड़े डाक घर का नमूना रक्खा गया है जिस को मशहूर बाबू बंकेश्वरपाल कृष्ण नगर वाले ने बड़े परिश्रम से तैय्यार किया है--इस से देखने वालों को कलकत्ते के नामी फ़ोर्ट विलियम का हाल भी दृश्य होगा जिस के ठीक ठीक पीछे काल कोठरी थी और जहाँ अब एक सङ्गमरमर का स्मारक चिन्ह है।

डाक विभाग के नौकरों के उर्दी का नमूना और हर तरह के डाक ले जाने वाली जहाज़ों और गाड़ियों के भी बहुत उत्तम नमूने तैय्यार कर के रक्खे गये हैं—रेल में लगी हुई डाक के कमरे का और जिसमें चिट्ठियां छांटी जाती हैं और बम्बई और कलकत्ते के जाने वाली विलायती डाक के अन्दर का नमूना बड़े होशियारी से ठीक ठीक बनाकर रक्खा गया है—यह सब चीज़ें जी-आई-पी कम्पनी के परैल के कारखाने में तैय्यार की गई हैं और बहुत दिनों के अनुभव से तरक़्क़ी की हुई डाक की और गाड़ियों का नमूना भी है।

अलीगढ़ के डाक विभाग के कारखाने की सब से अद्भुत चीज़ एक लेटर बक्स का खम्भा है जो आप से आप बन्द हो जाता है और जिस में थैला भी लगा रहता है जिस से चपरासी के चोरी करने का मौक़ा किसी तरह से नहीं लग सकता—थैले के ताला की ईजाद तो मन्द्राज में हुई थी लेकिन आप से बन्द और खुलने वाले ताले की ईजाद अलीगढ़ में हुई है—इस कारखाने के सफ़ाई की तारीफ़ वहां के बने हुये ताले तराज़ू और चाज़ों से साफ़ साफ़ पता लगती है—लोहे की मोहर जो कि १८ हज़ार से ज़्यादे डाक घरों में काम में आती हैं सब अलीगढ़ में बनी हैं और शायद कुल हिन्दुस्तान भर में ऐसे लोहे के कारीगर नहीं हैं।

प्रदर्शिनी में डाकख़ाना के पास ही एक मुहर बनाने वाला कारीगर बैठता है जो कि दर्शकों के लिये भी लोहे पर या रबड़ की मोहर तुर्त दाम देने पर बना देगा पास ही पास एक ताला बनाने वाला कारीगर है जो कि हर आदमी के आर्डर देने पर उसी दम ताले बना देगा।

उसी पंक्ति के अखीर में एक जगह पर हिन्दुस्तान में काम में आते हुये १८५४ से अब तक के टिकट के नमूने होगे वहा के दीवालो पर डाक विभाग के भिन्न २ चित्र होगे-सब से मनोहर बात उसमें सिलीगुरी मे यान्टसी जोकि तिब्बत में है) तक की डाक लाइन के नमूने का दृश्य है तसवीर देखने से मालूम होगा कि उस तरफ रोज डाक लेजाने में कितनी दिक्कत ग्रोर तकलीफ होती है ग्रोर जिसके रास्ते में एक १७ हजार फीट ऊचा टीला है ग्रोर उसी पर १६२०० फ़ीट ऊचे पर दुनिया भर में सब से ऊचा तार घर है।

प्रदर्शिनी में डाक के चपरासियो की डडे ग्रोर घन्टी भी दी गई हैं जैसे हिन्दुस्तान भर मे डाक विभाग में काम में आती है-बल्लम तो उनके बचाव के लिये है ग्रोर घन्टे से दूसरे चैाकी वालो की तैय्यारी की आगाही दी जाती है कि जिसमे डाक के रवानगी में देर न होने पावे-ज्यो ज्यो रेल की ग्रोर तागा सडक बढती जाती है वैसे वैसे ही इन चपरासियो का नम्बर कम होता जाता है लेकिन जगल ग्रोर पहाडों पर सिवाय इनके ग्रोर कोई काम नहीं करता-ये सब बडे सच्चे होते हैं ग्रोर निडर होकर अपना पूरा काम अच्छी तरह से करते हैं।

इन थोडी चीजो के देखने से डाक विभाग के कार्रवाई का पूरा पता नहीं चल सकता इस लिये वहा के रिपोर्ट में से थोड़ा सा हाल बताया जायगा॥

तार विभाग के दृश्य

बिजुली वाले खण्ड में तार विभाग के तरफ से बगैर तार की तारबर्की दिखाई गई है ग्रोर उस के यन्त्र ऐसे सुगमता से रक्खे गये हैं कि उस को समझने में किसी किस्म की दिक्कत न होगी इस की काररवाई एक निपुण पुरुष दिखायेगा-यहा बिजुली से मधुर ध्वनि निकलती है उस का भी दृश्य रहेगा-ग्रोर वहा पर बाडो के छापने के कल का नमूना रहेगा जिस से तार के काग़ज में आप से आप संदेशा लिख जाता है।

तार में काम आने वाले यन्त्रों का नमूना जो अलीपूर के कारखाने में बना है दिखाया जायगा—ग्रोर उस के बनाने की पूरी तरकीब भी दर्शायी जायगी।

इन चीज़ों के बनाने में जो औजार काम में आते हैं और जिस से बिजली के प्रवाह को इकट्ठा करते है दिखाया जायगा--यह लोहे के औजार बड़े बड़े समुद्र और नदियों के तार में काम आते हैं।

यहां पर झील के ऊपर जो पुल कृषी विभाग से नहर खण्ड तक बना हुआ है उस से मालूम होगा कि जङ्गलों में तार के लिये रस्सो से कैसे पुल बांधा जाता है जब तार की लाईन को जाच करना होता है।





कारख़ाना लखनऊ आइरन वर्क्स लखनऊ

हर तरह का नया व पुराना काम होता है और बहुत तरह का सामान तयार होता है।

सामान सफर व दफ़्तर-ट्रंक, यूनीफार्म बक्स, टोपो व बरफ़ के बक्स, केश बक्स, टोकरी, छापने के प्रेस, ख़जाने के बक्स, अलमारी आदि।

रेल—लालटेन, वालटू, ढिबरी, रेवट, टाली, हौज, ताला, मुहर आदि।

सामान म्युनिसिपेलिटी-मूत गाडी, कूडा व छिडकाव की गाड़ी, पेशाब घर, पाख़ाना बालटी, नाली और पानी के बहुत तरह के सामान लालटेन आदि।

सामान इमारत व पी डबल्यू डी-फडुआ, दुर्मुट, पचागुर, कुवां के चक्कर, पानी की गाडी, पलग, आव गर्मा किट बक्स, लोहे की छत, मकान, जगला, फाटक।

सामान बाग व स्कूल—बेच, कुर्सी, मेहराब, मेज, डम्बेल, मेज बोर्ड, अलमारी, और बहुत तरह की चीजे बनती हैं और जंगला, खभा, जीने (सीढ़ी) व मेहराब हर नाप व नमूने के ढल सकते हैं और हर तरह का रेल का सामान भी तैयार रहता है।

नवलकिशोर प्रेस लखनऊ

ब्रांच—लाहोर व कानपुर

सन् १८५८ ई० मे स्थापित हुआ

हर प्रकार की छपाई लीथो ग्राफ, टाइप हाई, आदि का काम, मेशीन से रूल, जिल्दबन्दी इत्यादि उत्तम प्रबंध से होता है—

यह यंत्रालय बहुत प्राचीन और बडा है, इसमें नूतन बनी हुई मेशीन और टाइप भी हैं-हर प्रकार की पुस्तकें और तरह तरह की छपाई का काम होता है—संस्कृत, हिन्दी, मरहटी, अगरेजी, अर्बी, फ़ारसी, उर्दू, उड़िया भाषाओं की पुस्तकें उत्तमता व योग मूल्य पर छपती हैं—फर्माइश की तामील शीघ्रता से की जाती है—

ग्रन्थकर्ताओं और लेखकों तथा व्यापारियों को विश्वास दिलाया जाता है कि एक बार अपना काम भेज कर परीक्षा ले—

हर प्रकार की पुस्तकों का स्वत्व उचित मूल्य पर क्रय किया जाता है और हर काम की लागत का हिसाब शीघ्र बिना मूल्य भेजा जाता है।

ब्रिटिश एण्ड फ़ारेन

बाइबिल सोसाइटी

संयुक्त प्रदेश के प्रदर्शिनी के सम्पूर्ण दर्शकों से जनरल इण्डस्ट्रीज कोर्ट में इस सुसाइटी के सेकशन में दुनियां की प्रचलित भाषाओं की १५० प्रकार की बाइबिल के अद्वितीय संग्रह को देखने के लिये विनीत भाव से प्रार्थना करती है।

यह फ़ेहरिस्त समस्त जगत की भिन्न २ भाषाओं में से जैसे, यूरोप, अमेरिका, एशिया, अफ्रिका और ओशेनिया की ४२४ भाषान्तरों के अनुवाद में से चुनी गई है। ब्रिटिश एण्ड फ़ौरेन बायबिल सोसाइटी, बाइबिल, न्यूटेस्टमेन्ट और स्क्रिपचर के हिस्से के भिन्न २ संग्रहों को, जिनका अनुबाद हिन्दुस्तान वर्मा और लका के प्रधान २ भाषाओं में किया गया है प्रदर्शित करेगी।

ये सब संग्रह प्रायः सब छपे हुए हैं और देशी दफ़्रियों के द्वारा, कलकत्ता, बम्बई, मदरास, इलाहाबाद, लाहौर, कोलम्बो, रंगून आदि के देशी छापेख़ानों में इन की जिल्द बधी है। इसी एक पुस्तक बाइबिल या इसके कुछ हिस्सों का पृथ्वी के प्रत्येक ७ में से ५ मनुष्यों की मातृभाषा में अनुवाद किया गया है और यही १५० अनुवाद जोकि दुनियां भर के हृदय लगाने वाली फ़ेहरिस्त से संग्रह किये गये हैं और इलाहाबाद की प्रदर्शिनी में पाये जा सकते हैं। इस प्रदर्शिनी को उन लोगों के लिये जो भाषा, धर्म और सदाचार और प्रत्येक विज्ञान विद्या जिनका हम लोगों की बुद्धि से साधारणतः सम्बन्ध है, पढ़ने में चाव रखते हैं बहु मूल्य और अद्वितीय बना दिया है।

भाग चौथा

महीन कारीगरी और लगाव के हुनर का बयान

नकाशी के काम का नमूना महीन कारीगरी (फाइनआर्टस) के इमारत के पश्चिम के तरफ़ हैं जिसका नकशे में नं० ५ है इस को याद रखना चाहिये कि पुरानी नकाशी के असिल काम के यहां पर लाना या उनकी नक़ल थोड़े समय के लिये करना बिलकुल असभव बात है इस लिये जो यहां है वह ख़ास बनवाया हुवा नहीं है उनका वर्णन इस प्रकार है किन्तु संयोग वश सजाई हुई चीज़े हैं।

(१) ईसामसीह के २५० वर्ष पहिले से लगाकर इनके बाद ५० वर्ष तक के बौद्धों की कारीगरी।

(२) यवन और बौद्धो का जो मसीह के बाद ५० वर्ष से ३०० वर्ष तक का है।

(३) गुप्त बंश के समय का जो ईसा के बाद ३०० वर्ष से ६०० वर्ष तक का है।

(४) पौराणिक हिंदू और महायन बौद्धों के समय का जोकि ६०० वर्ष से ८५० वर्ष ईसा के बाद का है।

(५) यवनीय बौद्धों के समय का जो ईसा के बाद ९५० वर्ष से १४०० वर्ष तक के हैं।

(६) हिंदू मध्य काल सम्बंधी समय का जो ८५० से १४०० वर्ष ईसा के बाद का है।

(७) नैपाली बौद्धों का जो ईसा के बाद से आज तक की कारीगरी बताती है।

(८) बाद के हिन्दुओं के समय का जो ईसा के बाद १४०० से १९०० तक का है।

(९) विलायती हिन्दुस्तानी ईसा के १८०० से १९०० तक का।

इन में से (१) विभाग का सिर्फ चित्र दिखाया गया है और (२) का लाहोर के अजायब घर का ढला हुआ ढाचा और मेजर बमू का एकत्रित समूह और गुप्तवंश के समय के नकाशी की भी बहुत सी तसवीरे हैं हिंदू और महायन बौद्धों के समय का नमूना लंका (सीलोन) से मगाई हुई कपिल मुनि की मूर्ति है-इस मूर्ति की मर्यादा का नमूना एक ढली हुई कासे का अवलोकितेश्वर की मूर्ति जो लंका से मगाई गई है देखने से मालूम होगा-और एक बहुत सुन्दर कुबेर की मूर्ति का प्रतिरूप भी रक्खा गया है-एलोरा और अजन्टा के नक़ाशी का नकशा भी रक्खा गया है-हिन्दुओं के मध्य समय के नकाशी का नमूना एक कांसे की तामील के साधु सुन्दर मूर्तिस्वामी की मूर्ति के देखने से अच्छी तरह मालूम होगा-बङ्गीय साहित्य परिषद के एकत्रित किये हुये वस्तु भी रक्खे गये हैं हिन्दू और बौद्धों के समय की बची हुई कारीगरी नैपाल में बहुत दिन तक रही और उसका भी नमूना यहा दिखलाया गया है-दक्षिण के सिवाय हिन्दुओं की कारीगरी का नमूना अब बहुत कम मिलता है और इस शताब्दी १९ वीं में कोई उम्दा काम नहीं तैय्यार किया गया जिसका हाल दिया जाय या नमूना रक्खा जाय बम्बई प्रान्त के कुछ नकाशों ने काम करना सीखा है लेकन वह सब विलायती ढग स करते हैं और उनमें मिस्टर जो० के० मातरे ने बहुत सफलता प्राप्त की है।

हाल की बनी हुई कारीगरी में से बंगाल का कुछ दृश्य रक्खा गया है और उनमें से नन्दलाल बोस का बनाया हुआ श्री शिवजी के नृत्य की मूर्ति है—मन्द्राज प्रान्त के अजायब घर के नटराज की तसवीर देखने से मालूम होगा कि दक्षिण में अब तक कारीगरी का काम होता है-इससे भी अच्छा काम जयपूर के मालीराम कारीगर का है उसका बनाई हुई चीजों के देखने से मालूम होगा कि उसमें कितनी उम्दा विचार शक्ति है-मोगल लोगों के समय की कारीगरी ताजबीबा के रौजे और दूसरी इमारतो को देखने से मालूम होगा-इस गिरे हुये समय में भी कारीगरी काम ओरिसा, आगरा, मथुरा और युक्त प्रान्त के दूसरे शहरों में होते हैं-आगरा के बने हुये नक़ाशी के काम लकड़ी पत्थर और धातु वाले इमारतो में मिलेंगे।

सुन्दर नकशे और लेखों का वर्णन

हिन्दुस्तानी चित्रकारी के दो विभाग हैं एक तो बौद्धों के समय का जैसा कि अजन्ता के मन्दिरों में है और ईसा के ६५० वर्ष के पहले ही के हैं और दूसरा अजन्ता के पिछले समय की चित्रकारी यह सब चित्रकारियां एशिया और यूरोप भर के तस्वीरों के समय से पहिले की हैं-हाल की बनी हुई मिसेस हेरिंगम और हिन्दुस्तानियों की बनाई हुई तसवीरें का दृश्य पूर्वीय कारीगरों के शाला में है-सन् ६५० ई० से १९५० तक के चित्रकारी विद्या का ठीक पता नहीं लगता किन्तु ये विद्या रही जरूर होगी क्योंकि उसी विद्या का प्रचार राजपूताना में अब तक है-ऐसे काम एक तो राजपूताना में ख़ास जयपुर में और दूसरे हिमालय परवत के कांगरा घाटी मे पाये जाने है-जयपुर की कारीगरी अजन्ता के अस्तरकारी पर तसवीर बनाने के हुनर का नमूना है इस कारीगरी में मुसलमानी मिलाव नहीं है और कहीं २ यह अब तक जारी है-मुसलमानी चित्रकारी का इतिहास बहुत संक्षिप्त है-मोगल लोगों ने जिनका घर तुर्किस्तान में है अपने साथ इस हुनर को यहां लाये-अकबर के समय में इस विद्या मे बड़ी उन्नति हुई अकबर के बाद भी उन्नति होती रही और हिंदू मुसलमानी मिलाव की तसवीर बनने लगी-इस समय की बनी हुई तसवीरों से मुसलमानी ढंग का असर मालूम होता है जैसा कि तैमूर लङ्ग के तसवीर से जाना जाता है-फारस चीन और यूरूप के ढंगों के मिलाव की भी तसवीरें बनती थीं यहां तक कि इस हुनर की हद्द शाहजहां बादशाह के समय में पहुंच चुकी थी लेकिन यह अब लोप हो रही है और इसका काम दिल्ली मे अब बजाय हुनर के व्यापार के लिये किया जाता है।

एक हुनर जिसको कि बादशाह लोग भी खुद करते थे वह लिखावट की सफाई और उम्दगी थी जिसमे कि अकसर वह लोग कविता इत्यादि लिखते थे इसका ढङ्ग तो फारस का है लेकिन मुगल बादशाहों ने हिन्दुस्तान में इसकी बहुत उन्नति की थी।

नकाशी की तरह चित्रकारी मे भारत वर्ष के १९ वीं शताब्दी में यहां वालों ने बड़ी गफलत की-बहुत जांच करके इस प्रदर्शिनी में ऐसी चित्रों का संग्रह किया गया है बाकी और छुटी हुई तसवीरें महीन काम और चित्रशाला में लगी हुई हैं।

इन में से (१) विभाग का सिर्फ चित्र दिखाया गया है और (२) का लाहोर के अजायब घर का ढला हुआ ढाचा और मेजर वमू का एकत्रित समूह और गुप्तवंश के समय के नकाशी को भी बहुत सी तसवीरे है हिंदू और महायन बौद्धो के समय का नमूना लंका (सीलोन) से मगाई हुई कपिल मुनि की मूर्ति है-इस मूर्ति की मर्यादा का नमूना एक ढली हुई कासे की अवलोकितेश्वर की मूर्ति जो लंका से मगाई गई है देखने से मालूम होगा-और एक बहुत सुन्दर कुबेर की मूर्ति का प्रतिरूप भी रक्खा गया है-एलोरा और अजन्टा के नकाशी का नक़शा भी रक्खा गया है-हिन्दुओ के मध्य समय के नकाशी का नमूना एक कासे की तामील के साधु सुन्दर मूर्तिस्वामी की मूर्ति के देखने से अच्छी तरह मालूम होगा-वङ्गीय साहित्य परिषद के एकत्रित किये हुये वस्तु भी रक्खे गये है हिन्दू और बौद्धो के समय की बची हुई कारीगरी नैपाल में बहुत दिन तक रही और उसका भी नमूना यहा दिखलाया गया है-दक्षिण के सिवाय हिन्दुओं की कारीगरी का नमूना अब बहुत कम मिलता है और इस शताब्दी १९ वीं में कोई उम्दा काम नहीं तैय्यार किया गया जिसका हाल दिया जाय या नमूना रक्खा जाय बम्बई प्रान्त के कुछ नकाशों ने काम करना सीखा है लेकन वह सब विलायती ढग से करते हैं और उनमें मिस्टर जो० के० मातरे ने बहुत सफलता प्राप्त की है।

हाल की बनी हुई कारीगरी में से बंगाल का कुछ दृश्य रक्खा गया है और उनमें से नन्दलाल बोस का बनाया हुआ श्री शिवजी के नृत्य की मूर्ति है—मन्द्राज प्रान्त के अजायब घर के नटराज की तसवीर देखने से मालूम होगा कि दक्षिण मे अब तक कारीगरी का काम होता है-इससे भी अच्छा काम जयपूर के मालीराम कारीगर का है उसकी बनाई हुई चीजों को देखने से मालूम होगा कि उसमें कितनी उम्दा विचार शक्ति है-मोगल लोगो के समय की कारीगरी ताजबीबी के रौजे और दूसरी इमारतो को देखने से मालूम होगा-इस गिरे हुये समय में भी कारीगरी काम ओरिसा, आगरा, मथुरा और युक्त प्रान्त के दूसरे शहरो में होते हैं-आगरा के बने हुये नक़ाशी के काम लकड़ी पत्थर और धातु वाले इमारतों में मिलेंगे।

सुन्दर नक़्शे और लेखों का वर्णन

हिन्दुस्तानी चित्रकारी के दो विभाग हैं एक तो बौद्धों के समय का जैसा कि अजन्ता के मन्दिरों में है और ईसा के ६५० वर्ष के पहले ही के हैं और दूसरा अजन्ता के पिछले समय की चित्रकारी यह सब चित्रकारियां एशिया और यूरोप भर के तसवीरों के समय से पहिले की हैं-हाल की बनी हुई मिसेज हेरिंगम और हिन्दुस्तानियों की बनाई हुई तसवीरें का दृश्य पूर्वीय कारीगरी के शाला में है-सन् ६५० ई० से १२५० तक के चित्रकारी विद्या का ठीक पता नहीं लगता किन्तु ये विद्या रही ज़रूर होगी क्योंकि उसी विद्या का प्रचार राजपूताना में अब तक है-ऐसे काम एक तो राजपूताना में ख़ास जयपुर में और दूसरे हिमालय परबत के कांगरा घाटी में पाये जाते हैं-जयपुर की कारीगरी अजन्ता के अस्तरकारी पर तसवीर बनाने के हुनर का नमूना है इस कारीगरी में मुसलमानी मिलाव नहीं है और कहीं २ यह अब तक जारी है-मुसलमानी चित्रकारी का इतिहास बहुत संक्षिप्त है-मोगल लोगों ने जिनका घर तुर्किस्तान में है अपने साथ इस हुनर को यहां लाये-अकबर के समय में इस विद्या में बड़ी उन्नति हुई अकबर के बाद भी उन्नति होती रही और हिंदू मुसलमानी मिलाव की तसवीर बनने लगीं-इस समय की बनी हुई तसवीरों से मुसलमानी ढंग का असर मालूम होता है जैसा कि तैमूर लङ्ग के तसवीर से जाना जाता है-फ़ारस चीन और यूरूप के ढंगों के मिलाव की भी तसवीरें बनती थीं यहां तक कि इस हुनर की हद्द शाहजहां बादशाह के समय में पहुंच चुकी थी लेकिन यह अब लोप हो रही है और इसका काम दिल्ली में अब बजाय हुनर के व्यापार के लिये किया जाता है।

एक हुनर जिसको कि बादशाह लोग भी खुद करते थे वह लिखावट की सफ़ाई और उम्दगी थी जिसमें कि अकसर वह लोग कविता इत्यादि लिखते थे इसका ढङ्ग तो फ़ारस का है लेकिन मुग़ल बादशाहों ने हिन्दुस्तान में इसकी बहुत उन्नति की थी।

नक़्क़ाशी की तरह चित्रकारी में भारत वर्ष के १९ वीं शताब्दी में यहां वालों ने बड़ी ग़फ़लत की-बहुत जांच करके इस प्रदर्शिनी में ऐसी चित्रों का संग्रह किया गया है बाकी और छुटी हुई तसवीरें महीन काम और चित्रशाला में लगी हुई हैं।

चित्रकारी के सम्बंध में सब से बढ़ करके चित्र के नमूने कलकत्ते वाली सभा मन्दिर में है जहां बाबू अवनिन्द्र नाथ टगोर और उनके शिष्य नन्दलाल बोस अथवा सुरेन्द्रनाथ गङ्गोली के चित्रों के नमूने है-इन सब चित्रों में अच्छी हिन्दुस्तानी झलक है कलकत्ते के चित्रकारों ने भारतीय पौराणिक और ऐतिहासिक विषयों के दृश्य दिखलाये हैं जिस्से उनका उत्तमता प्रकाशित होती है—इनमें यूरूप और जापानी विषयो का सार भी मिलता है लेकिन आशय अवश्य अजन्ता इत्यादि के मन्दिरों से लिया गया है यह पुराने ढग के चित्रों से नहीं मिलतीं तो भी अपने ढग की निराली हैं-इसके भविष्य में उन्नति करने का मार्ग बहुत सुगम है क्योंकि इसमें सच्चा भाव का बहुत आसरा है।

इन विषयो की दो सभायें हैं एक तो जो पुराने समय के चित्रों का भाव प्रकट करती है और दूसरी जो नये ढग की है।

लकड़ी—पत्थर व धातु पर खुदे हुये काम-बहुत से जिलों से आई हुई लकड़ी में नकाशी का काम बहुत उच्चश्रेणी का होता है-लकड़ी के छापे बनाये जाते हैं और उन से रंग बिरंगे काम भी किये जाते हैं।

इसको जांचने के लिये लाहौर संगनीर और मुसलीपटम के छींट के कामों को देखना चाहिये।

इनका ढग तो पुराना ही है किन्तु माल उनमें अब विदेसी लगाया जाता है-इसी नमूने का सब से महीन काम लखनऊ में होता है जिस को छापने के बाद सूत और रेशम से काढ़ते हैं—छापे का दाग धोने से छुट जाता है-इस वजह के माल का नमूना लखनऊ के केदार-नाथ रामनाथ के कारख़ाने का काम दिखलाया गया है।

पत्थर और धातुओं पर रंग का काम अब तक हिन्दुस्तान में बहुत जगह पर होता है और धातुओं पर तो काम बनाये ही जाते हैं लेकिन तरह २ का काम तांबे और पीतल पर बहुत ख़ूबी के साथ भी होता है।

हाथ के बुने हुए माल

इस हुनर में हिन्दुस्तान ने जितनी तरक्की की है शायद और किसी ने नहीं की है-यहां के सादे ही यन्त्रों से ढाका की महीन मलमल जरी का काम और अहमदाबाद व बनारस की कीनख़ाब और काशमीर के दुशाले भी बनते हैं-यहां की हालत व पसन्द बदलने से इन सब कारख़ानों का काम मद्धिम पड गया है और यहां के लोगों के सस्ती चीजों के मांगने के सबब से इन किस्मों का माल बनना बन्द हो गया है इस लिये प्रदर्शिनी में आने वालों को इन चीजों को बहुत गौर से देखना चाहिये—इसमें की बहुत सी देखने लायक चीजों का संग्रह बुने हुए कपडों के सहन में मिलैगा—काशमीर विभाग में दुशालों का काम मिलैगा जिसका नम्बर ५ है—बनारस की कीनख़ाब और फूलदार मलमल इत्यादि के सामान भी वहीं दिखाये गये हैं—ढाका के फूलदार मलमल ख़ाकी और सुनहले किस्म के कपडे भी वहीं रक्खे गये हैं—बहुत तरह के टसर और रेशम के कपडे जो मामूली करघे में बनते हैं दिखाये गये हैं—मैडूरा के सूती रेशमी और सुनहली साड़ियां मन्द्राज के विक्टोरिया शिल्पीय विद्यालय के बने हुये हैं।

इसी तरह का जरूरी काम रंगने और छापने के विभाग में दिखाया गया है-रंगने का काम सिवाय कुछ देशी रियासतों और आगरा अमृतसर के होता है-दरी व गलीचे के कारख़ाने के सिवाय यहां से इस विद्या का प्रचार उठता जाता है-विलायती रूखे तरह २ के रंग के यहां आने से यहां का काम दिन पर दिन बन्द ही होता जाता है-जब तक लोगों को सस्ते का ख्याल रहेगा और दूकानदारों को मुनाफे का ख्याल रहैगा तब तक इस विद्या का पुनरुद्धार होना असम्भव ही सा प्रतीत होता है—इन पुराने रंगों की तेजी को शायद ही नये मिलावट वाले रंग पा सकें और इसकी वजह से हिन्दुस्तान का जो नुकसान हुआ है उस का हिसाब ही नहीं लगाया जा सकता।

छींट का या छापने का काम अभी तक यहां बहुत गिरा हुआ नहीं है क्योंकि अब भी लखनऊ फर्रुख़ाबाद और फ़तेहपुर में इसका काम चलता है और मन्द्राज लाहौर सगनार के काम का नमूना इस प्रदर्शिनी में दिखलाया गया है-राजपूताना और गुजरात के चुन्दरी

का काम भी बहुत अच्छा बनता है और यह उन्हीं की नकल करके विलायत वाले चुन्दरी का रूमाल बनाते हैं—इसका थोड़ा सा नमूना अजमेर से आया है।

जरी बूटी व चोपकारी का काम

यहां के जरी और बेल बूटे के काम बडी ही शिक्षा प्रद हैं इस हुनर से उत्तर और पश्चिम के तरफ अच्छी तरक्की हुई है-शायद सब से बढ़ कर इस का काम लखनऊ की चिकन का है—यह काम बहुत बारीक तरह से मलमल व चिकन के ऊपर रेशम और सूत से बनाया जाता है—इस मेल के बिलकुल बिपरीत काम दिल्ली और लखनऊ में चमडे की जूतियों पर बनाया जाता है-और राजपूताना हैदराबाद और सिन्ध में जीन सवारी का पूरा सामान इन्हीं कामों का मिलता है—काशमीर के दुशाले की बनावट इतनी महीन होती है कि उस में और कल के बने हुये दुशाले में बडे मुशकिल से फ़रक़ मालूम होता है—काशमीर में अब भी चोपकारी का काम बहुत उम्दा बनता है लेकिन पहिले के मुकाबिले में घटिया बनता है-गुजरात, काठियावार, पञ्जाब, सिन्ध, राजपूताना में औरतों की ओढनियां और चादरों में उम्दा जरी का काम रहता है—अमेरिका के सस्ते परदों के वजह से पञ्जाब के मशहूर चद्दरों की बिक्री कम हो गई है।

गोरखपुर से चमडे पर जरी के काम का नमूना भी आया है बुख़ारा और पेशावर की बनी हुई सुजनी भी देखने में आवैगी लेकिन इसमें हिन्दुस्तानी पना नहीं है—गो यह सब काम ज्यादातर मर्द लोगों का होता है लेकिन इस में बहुत ज़्यादा मेहनत औरतों ही की रहती है।

इस जगह पर ख़ास २ जगहों की जैसे लखनऊ की चिकन बनारस की कीनख़ाब और चिनियापोत ढाके की चिकन सांगानेर का छपा भया कपड़ा अमृतसर और आगरा की दरी और तरह २ के बरतन जवाहरात और बाजा की चीजें मगाई गई हैं दिल्ली और बनारस के हाथी दात का काम मैनपुरी के पच्चीकारी का—काशमीर और नगीना के लकडी में नक्काश का—और तरह २ के मशहूर काम यहा पर इकट्ठा किये गये हैं।

कोर्ट नम्बर पाच के पूरब के तरफ का हिस्सा दूकानदारों को उठा दिया गया है—लेकिन प्रदर्शिनी को और उधार आई हुई चीज़ें यहा रक्खी जा सकती हैं।

यहा पर लखनऊ और जयपुर के अजायब घर से भेजी हुई अद्भुत चीजो का सग्रह है और सागानेर के छींट का सामान लखनऊ कलकत्ता हुशियारपुर और तन्जोर से बाजे का सामान जयपुर, सिन्ध, और कच के जरी के काम के नमूना भी दिखाये जावेगे— और तरह २ के पुराने और नये पीतल और तांबे के बरतन भी रहेंगे और बहुत सी चीजो में यहा पर आसनगञ्ज रियासत से भेजी हुई १०० वर्ष की एक तसवीर है और इटावा से हाथी दात सींघ और चांदी के काम के नमूने और बहुत से पुराने सामान दिखलाने के लिये आये है जिन का पूरा हाल इस पुस्तक के द्वितीय सस्करन् में दिया जायगा—सीमा प्रान्त से हाथ की लिखी हुई कई कुरान की प्रतिया आई है—उन की लिखावट बहुत उत्तम और बारीक है।

जवाहरात सोने व चांदी के असबाब

हिन्दुस्तान मे जवाहरात बहुत तरह के और बड़े खूबसूरत होते हैं इसी के सिर्फ जाचने से यहां के हुनर का इतिहास का पता लगता है—पुराने समय के भद्दे बने हुये गहने से लगा कर आज तक के महीन काम के गहने जैसे अमृतसर इत्यादि ने बनते हैं छटवे खण्ड में दिखलाये गये है-दक्षिण के सोने के बढ़िया काम का और उत्तर के मीनाकारी का काम और राजो महाराजो के यहा के मोतियो के हार भी दिखलाये गये है इन चीजो मे सब से अद्भुत बात ता यह है कि इन को बनवाई का दाम असल माल के कीमत से भी ज्यादा है- एक विलायती हीरे का हार का दाम यहा क गहने की बनवाई में लग जाता है और यहा ज्यादा पसन्द किया जाता है क्योंकि इस को बनावट बहुत कारीगरी की रहती है—यह एक दुख की बात है कि इन चीजो के बहुत दाम के सबब से ये यहा के अजायब घरो में नहीं रक्खी जाती और जब कभी गहना बनवाने को ज़रूरत होती है तो लोग विलायत के दूकानदारों की सूची को देखते हैं।

इन सच्चे आभूषणों के साथ ही साथ यहां के फूलों के गहने बनाने का सामान रक्खा गया है—फूलों के हारों का नाम उन्हीं फूलों से लिख दिया गया है—और यह पौराणिक ढङ्ग पर अब तक बनते है—यहां के हीरे काट करके और गोल करके गहनों में लगाये जाते हैं—हिन्दुस्तान में जवाहरात सिर्फ़ गहने के लिये नहीं काम में आते किन्तु प्याले वगैरः जैसी चीज़ो में जड़े जाते है और तरवार और कुखडी के मूठियों में भी लगाये जाते हैं—मीनाकारी का काम खूबसूरती के सबब से ज़्यादा पसन्द किया जाता है और ख़ास करके ऐसी चीज़ें जैसे इत्रदान, तशतरी, हुक्का की गुड़गुड़ी वग़ैरह जिस में जड़ाऊ का काम होता है—लखनऊ और जयपुर जड़ाऊ काम के लिये मशहूर हैं सेठ गोकुलदास की भेजी हुई एक तशतरी जोकि जयपुर मे बनी थी और बनारस के राय कृष्ण जी का लखनऊ का बना हुआ हुक्का भी देखने के लिये रक्खा गया है—इन चीज़ो का और सामान पूर्वीय एकत्रित वस्तुओं में भी है जहां लोटा थाली और नैपाल के जड़ाऊ काम का नमूना दिखाया गया है—अगर इस हुनर में उन्नति की जाय तो शायद इन चीजो की दुनिया भर मे मांग हो लेकिन बर्मा (ब्रह्म देश) और दक्षिण के तनजोर के गफ्फिन काम के देखने से यह बात असम्भव ही जान पड़ती है—(सुलतापुर के सब तरह के मिले हुये सामान का दृश्य—) सुलतापुर के तालुक़ेदार और रईसों ने डिप्टी कमिश्नर साहब से मिल कर यहां की बहुत तरह की चीज़ो का नमूना संग्रह किया है—इस खण्ड में सब से ज्यादा सामान डेयरा के राजा ने भेजा है जहां कि सब चीज़ो के बनाने के लिये ख़ास कारीगर तैय्यार हैं और जिन का तोशह खाना इस के लिये मशहूर है—डेयरा के राजा रुस्तम शाह का फ़ोटो दरबारी कपड़े पहने हुये की फ़ोटो जैसे बड़े लाट केनिङ्ग साहब के १८५८ के दरबार में आये थे दीवाल पर टङ्गा है एक शीशम का चौखटा राजा रुद्रप्रताप साही के आज्ञानुसार डेयरा में तैय्यार किया गया था वह भी हैं—एक हाथी दांत ८॥ फ़ीट लम्बा चांदी से मढ़ा हुवा दिवाल पर लटकता है।

एक बहुत पुराने ज़माने की घोरी की मशहूर हरी तशतरी दिखाई गई है जिस में अगर किसी तरह का विष रक्खा जाय तो उसी दम दो टुकड़े हो जायगी।

हाथ को लिखी हुई एक तो कुरान जिस के बारे में यह कहा जाता है कि पैगम्बर के नाती ने लिखा था और दूसरी शाहनामा का सरल अनुवाद भी देखने के लिये रक्खा गया है।

डेयरा के राजा ने अपने यहा का एक तो मोतियो का हार और एक जोड़ा हीरे और लाल और नीलम जड़ा हुवा सोने का सरपेच जो पगडी मे लगाया जाता है यहा रखने के लिये दिया है।

इस स्थान के दीवारो पर एक स्कूल के मास्टर की बनाई भई दो तसवीर है सात फोटो स्कूली लडके और लड़कियो की काररवाई की है—जिस मे पढ़ते हुये—कसरत करते हुये—भोजन करते हुये-लडकों के चित्र दिखलाये गये हैं—यहा पर सुलतापुर के एक ग्वालिन का चित्र पूरे नाप का और जो हर क़िस्म का गहना पहने है दिखाया गया है—यहा के कामो मे औरतों के भी बहुत से काम है और यह प्रदर्शिनी की एक अमूल्य वस्तु है।

पूर्वोत्तर के तरफ़ बर्मा के उत्तम कारीगरों का नमूना और धातु के सामान जिस को कि वहा के प्रान्तीय अफ़सर ने भेजा है रक्खे गये हैं—और वहा के बने हुये रोगन के और चांदी के काम बहुत सी मूर्तिया और जरूरी काम के सामान बिक्री के लिये भी रक्खे गये हैं।

कलकत्ता और बम्बई के विख्यात सेठ बदरीदास एन्ड सन्स का भेजा हुआ छत्रपति मणि और एक ऐतिहासिक सरपेंच हीरा जड़ा लाल मणि जिसका लम्बाई २१ इञ्च की है और यह कहा जाता है कि इस चमकीले मणि के समान संसार भर मे मणि कही नहीं है।

एक अति उत्तम मोतियो का हार जिस के काम मे ३० बरस व्यतीत हुये हैं और अनेक प्रकार के हार दिखलाये गये है—एक हार मे तो तेरह प्रकार के रङ्गो के मोती और हीरे जड़े हैं रक्खा गया है--इतिहासिक बनस्पति मणि जड़ा हुवा एक अर्द्ध चन्द्र है।

प्रयाग के नामी बेचलर कम्पनी का सामान न० ६ के मकान मे दिखलाया गया है।

घनटा घर का घड़ा यही कम्पनी के उद्योग से रक्खी गई है—एक घड़ी लोहे की बनी हुई है और हर घन्टे पर एक दफ़ा बजती है और चौथाई पर दो दफ़ा—यह बिक्री के लिये रक्खी गई है और जहा चाहे वहा से लोग लगा देंगे।

प्रदर्शिनी की चैाबीसों घड़ियों की चाबी बिजुली के तार से दी जाती है और इस तरह से सब जगह समय मालूम हो सकता है—और यह घड़ी बड़े कारखाने या विश्वविद्यालय या हाईकोर्ट या रेल के स्टेशन या महलों में लगाने के लायक है।

बिलायत के बड़े नामी कारखाने की घड़ियां जो कि वहां सैकड़ो बरस से बड़े मजबूती और खूबसूरती के साथ बनाई जाती हैं रक्खी गई हैं और इस के देखने ही से बिलायत के हुनर और मजबूती का हाल मालूम होगा।

स्वीजरलैन्ड जोकि घड़ी के कारखाने के लिये एक विख्यात स्थान है वहां के कारीगरों का काम भी मगाया गया है।

चांदी के प्याले वगैरः में बनावट की भी खूबी दिखाई गई है और कसकुट का सामान जिस में एक स्वर्गीय सप्तम एडवर्ड की मूर्ति है यहा पर बिक्री के लिये रक्खा गया है—और यहां पर एक बिजली का फौहारा भी रक्खा गया है।

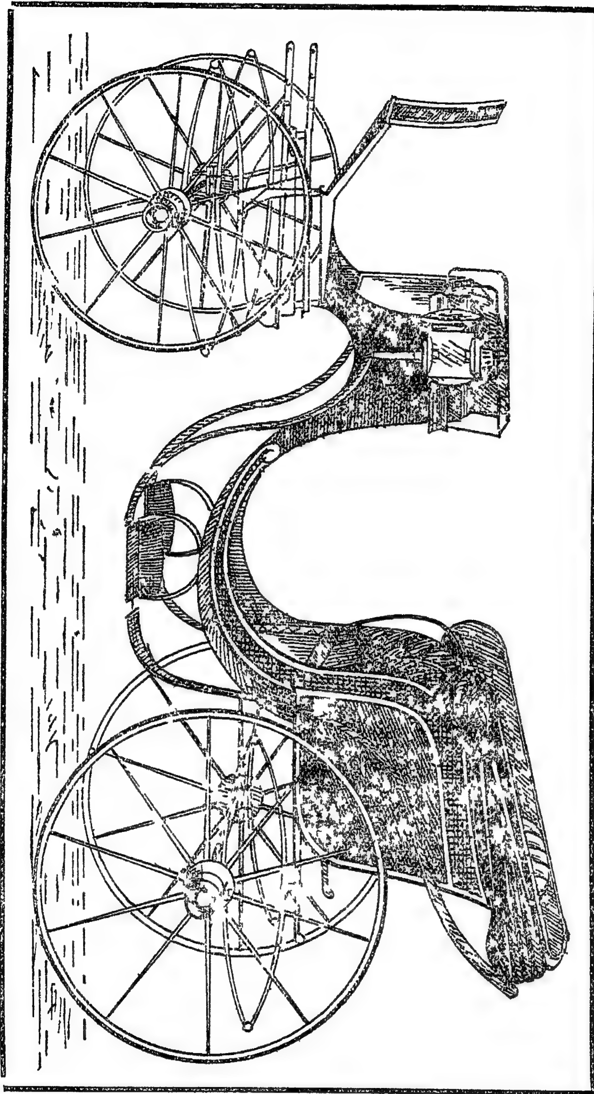
इस कारखाने का बहुत सा हीरे का सामान का संग्रह है और बहुत से इनाम के तमगे बिक्री के लिये तैय्यार रक्खे गये हैं।

दारजिलिङ्ग पर्वत से भी तिब्बत के अद्भुत वस्तुओं का संग्रह और लकड़ी के काम बुद्ध देव की मूर्तिया वहा के कम्बल और लेपसा की चादर भी दिखाई जायगी।

जरमनी के दो कारखानों से नक़ली सोने की घड़ी की चैन चांदी और सोने की अगूंठिया कान के बाले और घडीदार चूड़ी, पेटी, लाकेट इत्यादि भी दिखाये गये हैं—सब धातुओं की बनी हुई घड़िया भी तैय्यार रहैंगा—इस के मजबूती का यह कारखाना गारन्टी करता है और सब चीज बेचने के लिये रक्खी गई है।

और जिन कारखानों की चीज यहां आई हैं उन के नाम यह हैं—इलाहाबाद की डिल कम्पनी, कलकत्ते के सामचन्द मोतीचन्द लखनऊ के दुरगाप्रसाद मनोहरदास—दिल्ली के रामचन्द हजारीमल और दिल्ली आगरा लखनऊ कलकत्ता झांसी और कटक के कारखानों के सामान॥

फ़्रेज़र विक्टोरिया।



गाड़ी और हवा गाड़ी का कारख़ाना।

१७१-१७६ नं० धर्मतल्ला ष्ट्रीट, कलकत्ता।

तार का ठिकाना—"ब्रैकवैल को कलकत्ता।"

स्टेण्ड नम्बर ई १००

यू, पी, एक्ज़िबीशन।

भाग पांचवां

लकड़ी पत्थर और धातु के सामान फ़ाइन आर्ट्स कारीगरी के बाद ख़ास फाटक से जाने से दो सहन मिलते हैं जिसमें कि सिर्फ़ लकड़ी—पत्थर और धातु के सामान हैं।

यह दोनों इमारतें घन्टा घर के दोनो तरफ छज्जे की तरह बनी हैं—इन दोनो स्थानो में बहुत तरह की युक्त प्रान्त में बनी हुई चीजा का संग्रह है और करीब २ सब तरह के लकडी—पत्थर—धातु के इस्तेमाल के चीजो का नमूना है—पश्चिम या दाहने तरफ वाले मकान में हर जिलो की चीजें उन के हिसाब से सजाई गई हैं-यहा की चीजो का चुनाव बहुत बहुत रूप से है—इस जगह के सामान को वर्णन करने मे सब चीजों को घूम कर देखने की कल्पना करना चाहिये—घन्टा घर के सामने के दरवाजे से चल कर यह मालूम होगा कि इन चीजो का दृश्य दिवाली के आड से चबूतरो पर सजाया गया है—और ७ फीट के फासले पर दूसरा इन्हीं चीजों का दृश्य है—बाये तरफ लकड़ी के सामानो का समूह होगा।

लकडी के काम का सामान

लकड़ियों में खोदने का काम बहुतायत से शिल्पीय प्रकार का है—आज कल के बने हुये काम छोटे और मामूली हैं और इसी तरह का हाथी दांत का—हड्डी का और पच्चीकारी का काम भी है जो होशियारपूर और मैनपुरी के हैं—सब से बढ़कर लकड़ी के कामों का नमूना गाने बजाने की चीजो से मालूम होगा जोकि अब तक पुराने ढङ्ग से बनाये जाते हैं इन चीजो का विशेष कर दृश्य सहन नम्बर ५ में पूरी तरह से दिखाया गया है।

इन चीजो का सामान ज्यादातर सहारनपूर और नगीना का है और इसमें टेबुल कुर्सिया और कमरे के सामान शीशम चन्दन और आबनूस के लकड़ियो का है—सहारनपूर विभाग में सब से बढ़िया चीज देखने लायक़ लकड़ी का काम है जिसके ऊपर पीतल और

तांबे का महीन काम रहता है-यह काम सब बहुत सादे और हलके हैं और फोटो के रखने इत्यादि के काम में आते हैं—खुदे हुये काम की जालियां भी देखने लायक हैं जोकि नगीने के काम का मुकाबला करती हैं-यह आबनूस का काम ख़ास बुलन्दशहर के नगीने का है जिसके पहले के हाल का पता नहीं है—नगीने के आस पास कहीं आबनूस की लकड़ी नहीं होती और यह दक्षिण मिर्जापुर और मध्य प्रदेश से आती है—इसके पेचदार महीन घुमाव का काम बहुत ही खूबसूरती से बनाया गया है—इन कामों की लकड़ियों की मूंठ इत्यादि छोटी चीज धरने के टेबिल--शीसे का ढकना, कुरान आदि पुस्तकों के पढ़ने की तिपाई और तशतरी वगैरह बनती है-इस तरह का सामान बन विभाग में भी है—नगीने के कारीगर लोग अकसर इन कामों में हाथी दांत जड़ते हैं लेकिन उसमें बहुत सफलता नहीं होती—एक अठपहल चौकी के देखने से मालूम होगा कि बुलन्द-शहर में किस तरह का काम बनता है-दहिने तरफ आखीर के हिस्से में नेकराम मिस्तरी का जोकि फर्रुख़ाबाद के बाबू श्रीकृष्णदास के कारख़ाने में काम करता है दिखलाया गया है—इसने एक जाली का काम १८ फीट लम्बा बनाया है जिसका कि तीन भाग किया है और एक देखने के लायक चीज है इसी मिस्तरी ने एक चौखटा भी देखने को रक्खा है जिसको कि उसके बाप ने बहुत दिन भया बनाया था और यह एक बहुत सुन्दर हिन्दुस्तानी कारीगरी का नमूना है—नेकराम और उसके सहकारी गण वहां काम करते हैं-बाक़ी लकड़ी के सामान का संक्षेप में वर्णन यह है।

फैजाबाद से बक्स, लिखने के डिकस या गहना रखने के बक्स लकड़ी के काम का और पीतल जड़ा भया मौजूद है-एक देवकली बढ़ई का बनाया हुआ गहने का बक्स बहुत ही उम्दा और देखने लायक है-उसी कारीगर ने हिन्दुस्तानी जलसों के योग्य दो बरतन भेजे हैं--तारकशी काम के लिये मैनपुरी बहुत दिनों से मशहूर है—यह काम पीतल के पतले पतले तार खींच कर लकड़ी के काम में हथौड़ी से मिला दिया जाता है—यह पेचदार काम महीन तार के और बनावट के वजह से बहुत रोचक है—इस काम का सब से बढ़ कर नमूना बुलन्दशहर के टौन हाल के दरवाजे पर जिसको कि वहां के कलक्टर साहब और म्युनिसिपैलिटी ने बड़ी उदारता से

प्रदर्शिनी के लिये दिया है मालूम होता है कि कारीगरों के खण्ड में ऐसा काम मैनपुरी से आये हुये मिस्तरी कर के दिखावेंगे—और भी ज़िलों में इसी तरह का काम बनता है लेकिन उसके यहां वर्णन की कोई आवश्यकता नहीं है—आगरा के लकड़ी पर रोग़न का काम ख़ूबसूरत बनता है और दर्शकों को ज़रूर देखना चाहिये।

कामदार पत्थर के काम

इस बात को हर एक मानते हैं कि भारत वर्ष का उद्धार उसके कारीगरी ही से होगा-यह एक दुर्भाग्य की बात है कि गत शताब्दी में यहाँ रद्दी मेल का विलायती ढङ्ग प्रवेश हो गया है और राजे महाराजे और अमीर लोग भी उसको क़ायम रखने की कोशिश नहीं करते—यह एक भाग्य की बात है कि इनके नाश करने की इतनी कोशिशों पर यह अब तक यहां पाई जाती है-इस प्रदर्शिनी की इमारतें भी जहां तक हो सका इसी तरह की बनाई गई हैं लेकिन मथुरा, आगरा, फ़तेहपूर, सीकरी, कोटा, भरतपुर, जोधपुर, ग्वालियर, बीकानेर, के खम्भों पर और पत्थर के कामदार जाली के कामों के नमूनों को देखने से इसकी ख़ूबी मालूम पड़ती है।

इस प्रदर्शिनी में हर तरह के कामों का नमूना मिलना तो असम्भव है लेकिन मन और धन लगाने से यह गुण पूरी तरह से उन्नति कर सकता है और उन विलायती भद्दे मालों की अपेक्षा यहां की कारीगरी और अन्य देशों से उत्तम हो सकती है—जैसी कारीगरी का नमूना दिखलाया गया है यह हिन्दू और मुसलमानी ढङ्ग के मिलाव की बनी हुई है और एक बिलकुल नई तर्ज़ ज़ाहिर करती है।

ऐसे कामों का नमूना यहां दिखलाया गया है और मिर्ज़ापूर आगरा और मथुरा की कारीगरी का सब से बढ़िया दृश्य है-मथुरा की कारीगरी का नमूना एक १५ फ़ीट ऊंचा मन्दिर है जिसको

देखते ही दर्शक गण अचम्भे में होंगे- मिर्ज़ापुर से दो जगह के सामान आये हैं एक पत्थर महल का जोकि सरकार की जायदाद है और बङ्गाल की पत्थर की कम्पनी का-सरकारी महल से खुले हुये दारजे का सामान आया है और मकान के बहुत से सामान और सब तरह के पत्थरों का सामान जो बन सकता है दिखलाया गया है और चुनारगढ़ के पत्थर की खान से १६ अनूठे दृश्य आये हैं-बङ्गाल पत्थर के कम्पनी का बना हुवा हरे पत्थर का एक सिंहासन है जिस नमूने का मिलना बिलकुल दुर्लभ है--और आगरा के पत्थर की कारीगरी के काम में मुग़ल राज्य के समय के पदार्थ हैं—यहां की तीन महराब जो खम्भों पर बनी हुई बहुत बढ़िया हैं।

ढली हुई और पच्चीकारी का काम

इस विभाग में आगरा के पच्चीकारी का काम बना हुवा है यह ताजमहल और दूसरे मुसलमानी इमारतों की नक़ल है-कुछ लोगों की यह राय है कि इसका नक़शा विलायती ढङ्ग का है किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि बनावट बिलकुल हिन्दुस्तानी है--अब ये काम बहुत मामूली चीज़ों पर बनता है जिसका विस्तार करने की आवश्यकता नहीं है-लेकिन आगरा मारबेल वर्क्स के पच्चीकारी का काम अपूर्व और शोभाजनक है।

बाक़ी पच्चीकारी का काम जड़ाऊ चीज़ों में बनाया जाता है-तश्तरी और साबुन दानी की ख़ूबी भी देखने योग्य है।

पीतल तांबे और लोहे के बरतन

भारतवर्ष के मामूली पीतल और ताम्बे के बरतनों की बनावट और ख़ूबसूरती बयान करने के लिये एक किताब चाहिये-इनकी ख़ूबसूरती इनके बनावट और रङ्ग की है जोकि रोज़ मांजने धोने के

लायक़ नहीं है हिन्दू लोगों के यहां लोटे का प्रचार बहुत है-ठीक ऐसाही टोटीदार मुसलमान लोग बर्तते हैं गङ्गा जल भरने के वास्ते पतले मुंह का बहुत ख़ूबसूरत बरतन बनता है—लेकिन पवित्रता के ख्याल से कांस और कूसी के बर्तन से पूजा होती है।

लेकिन मन्दिरों की डांवट और घन्टा घरियालो ने बहुत तरक्की की है—नैपाल के पीतल के बरतन का सामान बहुत अच्छा होता है लेकिन बहुत सर्द। भई कारीगरी के काम के कारण बिगड़ जाता है और यहा वहां दिखाई गई है धातु की मूर्तियां पुराने समय की जो हिन्दू और नैपाली ढङ्ग की बनी है बहुत रोचक है—पीतल और ताम्बे के बरतन और मूर्तियों का दृश्य फ़ाइन्टआर्टस के खण्ड में दिखाया गया है—पीतल का काम जयपुर मुरादाबाद और बनारस में ज़्यादा बनता है—जयपुर का काम तो जयपुर विभाग मे रक्खा है—बनारस और मुरादाबाद के बरतन का लकड़ी के काम से मुक़ाबला करने का दर्शको को अच्छा मौक़ा मिलेगा—बनारस के काम मे ज़्यादा नक़ाशी के चित्र रहते है और जिसके बीच अनेक प्रकार की रेखाओं का दृश्य रहता है—इस नमूने का एक मन्दिर बना हुवा है-मुरादाबाद के काम मे नक़ाशा रहती है और बीच बीच में रंगीन काम रहता है—यह काम जब तैय्यार होता है तो बहुत भला मालूम होता है—मुरादाबाद से आये हुये तशतरी मोमबत्तीदान--हुक्का, पीकदान और तरह २ के काम दिखाये गये है—यहां पर एक गहना रखने का भी बकस है जिस मे कई कई तरह के रंगीन काम की मिलावट है।

फूलदार और उठे हुये धातु के काम

पुराने कारीगरी का नमूना काम जिस में फूल और पत्ती का धातुओं पर काम बनाया जाता है-रक्खा गया है-इस काम का दो भाग है एक तो सियालकोट और दूसरी जगहों का कोफ़्तगारी का

काम जहाँ सुनहले और रुपहले तार लोहे के काम पर जड़े जाते हैं और क़ीमती धातु भी लगाई जाती है-इसका काम शस्त्रों पर किया जाता है और नये क़ानूनों के सबब से इसका काम बन्द हो गया है—दर्शकों का चित्त राजपुताना के पुराने हथियारों की कारीगरी के तरफ़ आकर्षित किया जाता है।

बीदार का मशहूर बिदारी का काम जिस में पच्चीकारी की जाती है दिखाई गई है-इसमें टिन जसता शीशा और ताम्बे इत्यादि पर चांदी का बेल बूटा बनाया जाता है-क़रीब क़रीब इन सब कामों में महीन खसखसी का काम बड़े ख़ूबी से किया जाता है आज कल के कामों में इसको ज़मीनों पर चांदी का काम होता है जो पतला हो जाता है इस तरह का काम लखनऊ विभाग के कारीगरों के समूह में रक्खा गया है।

ज़िलों के दृश्यों में गोरखपूर के मुक्तिसेना के काम का उम्दा नमूना है—यह सेना ज़िले की जङ्गली ज़ातों को अपने मध्य में ग्रहण करती है और उनके कामों से मालूम होगा कि उनमें कितना भीतरी बल अच्छे काम करने का है जिससे वे थोड़े दिनों में प्रतिष्ठा के पात्र होंगे।

पीतल के और काम का अलीगढ़ के डायमन्ड जुबली लाक फ़ेक्टरी के भेजे हुये ताले के देखने से मालूम होगा-और इटावा ज़िले के जसवन्तनगर के बने हुये कई डाल के समादान का है।

जिस मकान का अभी वर्णन कर चुके हैं उसी के सामने ठीक उसी तरह का मकान बना है—यहां के चीज़ों का वर्णन करना एक असम्भव बात है क्योंकि इस में तरह २ की चीज़ें रक्खी हैं—एक ही कमरे में भिन्न २ प्रकार की वस्तुयें हैं जैसे तुर्की ग़लीचे आज कल के

कमरो का सामान तरह तरह के कारतूस और उद्‌भेजन पदार्थ और रेल की गाड़ियों के नमूने हैं सब से उत्तम सग्रह इस स्थान पर लाजरस कम्पनी के मशहूर कारखाने का कमरे के सामान का है—यह सामान सजा सजाया रक्खा हुआ है जिस की लागत लग भग ५० हजार रुपया है—और लकड़ी का सामान कमरे के लिये बम्बई के विमब्रिज लखनऊ के एडल जी इलाहाबाद के गजदर और भूपतलाल का बरैली के याकूबमुहम्मद का और लाहौर हयात ब्रादस के कारखानो का है इस का और ज्यादा हाल इस पुस्तक के द्वितीय ससकरन मे दिया जायगा क्योंकि इन कारखानों का अभी किसी का असवाब प्रदर्शिनी में नहीं आया है।

कोटा से सीमन कम्पनी ने फ़ारसी ढङ्ग का सामान भेजा है इस कम्पनी के सामान बड़े दामी और बढ़िया है जिस से कम्पनी की योग्यता झलकती है इस में फ़ारस की अनोखी चित्रकारी है और पीतल के सामान है और बेबीलोनिया असीरिया के सगमरमर के कारीगरी का नमूना है और इस मे ४०० वर्ष का शाह इसमाइल का गलीचा है—एक बहुत पुराना लकड़ी का वकस जिस के अन्दर दो ऐने है और पेगम्बर की तारीफ़ में अरबी और फ़ारसी की शैरे उठे हरफों मे बड़े खूबसूरती से लिखी गई है यहां पर नोबेल कम्पनी के बने हुये उद्‌भेजन पदार्थों का दृश्य है—इस कम्पनी में दुनियां भर में सब जगहो से ज़्यादा काम होता है।

हिन्दुस्तान में बारूद का काम होता है इस लिये इस को अच्छी तरह देखना चाहिये हिन्दुस्तान में शायद ही कोई शिकारी हो जो इन के यहा की बारूद को काम मे न लाता हो।

यहां पर पहाड़ तोड़ने से पेड़ के जड़ उड़ाने के काम की बारूद बनाते हैं।

यहां का बारूद कोयले के खानों में बहुत काम आता है--यहां की जलाटीन से पानी के अन्दर का काम होता है और नदियों में बड़ी २ कोठियां भी इसी से गलाई जाती हैं—लोगों के भयभीत होने के ख्याल से यहां पर इन बारूदों का काम नहीं दिखलाया जाता है॥

ब्रूक बांड की चाय



हम लोग सिर्फ़ उन लोगों के लिये चाह मोहय्या करते हैं, जे हरेक चीजो में से उम्दा चोज को पसन्द करते हैं श्रोर जव उन के चीज मिलती है तो उस को पहचानते हैं।

हमारा दावा है, कि हम लोगों को चाह उन सव चाह से जे मिलतो हैं बढ़ कर है।

हम लोगो को चाह बहुत अच्छा है इस वजह से विज्ञापन छपा जाते हैं।

अगर आपने कभी ब्रूक वाण्ड को चाह न पी हो, तो उ अभी से शुरू कीजिये, क्योंकि इस के लिये आज कल से बढ़ कर दूसर वक्त नहीं है।

यह हिन्दुस्तान भर के थोक बिक्री करने वालों के

यहा पाई जाती है।

खुचरा दाम एक पाउन्ड का ॥।), १), १=), श्रोर १।)

ब्रूक वांड एण्ड कम्पनी लिमटेड

न० १० गवर्नमेन्ट प्लेस, इस्ट्रीट, कलकत्ता

पोस्ट बक्स न० १८७

दि एशियाटिक पेट्रोलियम

कम्पनी लिमिटेड

नं० १ इनजीनियरिंग कोर्ट

इस कम्पनी में हरेक प्रकार के जलाने का मट्टी का तेल जैसे, हंस मार्का, सर्प मार्का, सूर्य्य मार्का, वग़ैरः पाया जाता है।

प्रसिद्ध "शेल" पेट्रोल भी पाया जाता है

कमर्शियल बेनजेन जो ख़ास कर के जलाने और सूखी चीजों के साफ करने के काम में लाया जाता इस कम्पनी में पाया जाता है

एशियाटिक कम्पनी का लिक्विड फ्यूयेल भी इसी जगह मिलता है।

बह डाइसेल और दूसरे "इन्टरनल कम बशजन" इन्जन-सड़क पर छिड़कने प्लेग के रोकने में और मसों के बरबाद करने और मोर्चा साफ करने के काम में आता है।

बेचिंग आयल भी जो जूट बेचिंग में काम में लाया जाता है यहां पाया जाता है

टरपेनी

यह बहुत ही अच्छा और सस्ता तारपीन की जगह काम में लाने की चीज है।

लब्रिकेटिंग आयल्स (यानी चिकना करने वाला तेल) हरेक प्रकार का इस कारखाने में पाया जाता है, जो हर एक तरह के चिकना करने के काम में आता है।

मोटर चिकना करने का प्रसिद्ध "शेल" भी मिलता है

इस कम्पनी की एजेन्सी-मद्रास, करांची, और कोलम्बो में है

शाखाये कलकत्ता और बम्बई में हैं और मट्टी का तेल बेचने के लिये सम्पूर्ण भारतवर्ष में इसकी सब एजन्सियां हैं।

भाग छठवां

साधारण शिल्पीय खण्ड

इस विभाग का अभिप्राय यह है कि कारीगरों और महाजनो का चित्त आकर्षित किया जाय जोकि शिल्पीय सम्बन्धी विषयों में यथा योग्य समय नहीं देते और इस प्रान्त के कारीगरों का नमूना दिखलाया गया है जिस मे कि वे लोग इस मे उन्नति कर सके—इस विभाग में उन चीजो की पूर्णता की गई है जोकि दूसरे खण्डों में नहीं रक्खी गई हैं यह विभाग प्रदर्शिनी के सम्बन्ध के सब विषयों पर दृष्टि रक्खेगी—घरेलू और मामूली कारीगरी की उन्नति दिखाने वालों को प्रदर्शिनी की सभा और सरकार के तरफ से खास इनाम दिया जायगा मुकाबला करने वाली वस्तुओं के सूची के लिये प्रदर्शिनी के पुस्तकों के कर्तव्य का इश्तहार देखना चाहिये—जो पुरुष एक चूल्हा बना कर दिखावेगा उस को एनड्रियूल साहब के कारखाने से १०००) रुपये का इनाम दिया जायगा—यह चूल्हा ऐसा होना चाहिये कि जिस मे कोयले से हिन्दुस्तानी ढङ्ग का भोजन सुगमता से बन सकै—इस कम्पनी ने प्रदर्शिनी के खर्च के लिये कोयला मुफ्त में दिया है चमडों की सफाई और रंगने का कारखाना इन प्रान्तो के बिनी हुई चीजो के कारखाने के बाद ही है—कानपुर के चमडे का काम बहुत दिनो से मशहूर है गो और जगहो पर भी इस का काम होता है जो कि प्रदर्शिनी में देखने से मालूम होगा-यहा पर चमड़ों का नये किस्म का सामान जोकि इन प्रान्तो मे बिलकुल नहा बनता है दिखाया जायगा जिस का काम बहुत बढ़ कर होगा—कानपूर के मशहूर शेवन कम्पनी के कारखाने के हर तरह के चमडे के सामान यानी जूते जीन और भ्रमण के वस्तु बनाने के लायक सामान दिखाया जायगा—चमड़ा बनाने के काम के अलावा यहा घड़ियाल या साम्भर इत्यादि जानवरो के चमडे की सफाई भी होती है—कानपूर के मङ्गलीप्रसाद कम्पनी के कारखाने का जहा कि जीन सवारी और चमड़े के सामान बडे उत्तमता से बनाये जाते हैं अपने सामान के साथ पाये हुये १८ तगमे और सार्टिफ़िकट भी लाये हैं—इन में से ५ चांदी

के ४ सोने के हैं और ९ सनद हैं—इन को विलायत के प्रदर्शिनी में भी १ तगमा मिला था और २ सोने के जो लाहौर के प्रदर्शिनी में मिले हैं लाये हैं—चैटरटन साहब के मैसूर टेनरी के क्रोम चमडे का सामान जिस में इन को बड़ी सफलता हुई है दिखाया जायगा—इस कारख़ाने में सिर्फ़ क्रोम चमड़े का सामान तैय्यार होता है।

इस कम्पनी के बने हुये जूतों से पानी का बहुत बचाव होता है और इसी चमड़े के जूतों को हिन्दुस्तानी के सब प्लैन्टर्स पहनते हैं इस कारख़ाने मे मशकों चमड़े का सामान भी बनता है जो कुरसियों और गाड़ी के सामग्री में काम आता है—इसके हर रंग के चमड़ों का नमूना जो कम्पनी में तैय्यार रहता है दिखाया गया है—जीन सवारी के दोनो पल्ले दो दफ़ा के काररवाई से बना कर तैय्यार किये जाते हैं—मन्द्राज के चेम्बर्स कम्पनी के कारख़ाने के जूते जूतियां और तरह २ के चमड़े के सामान का नमूना दिखलाया गया है जोकि हर तरह से मज़बूत होते है-और इनका पूरा हाल भी यहां से मिल सकता है।

सीमा प्रान्त के पेशावर और कोहाट के जूते और ड़ाऊ के कारीगरी के काम बहुत अच्छे होते है बहुत से तो इनमें से देखने में सुडैाल और खूबसूरत है और पठान जूतों में और चीजों के अपेक्षा ज्यादा ख़र्च करते है—इस प्रदर्शिनी मे जिन जूतों का नमूना आया है वे उन पर चढ़ने वालों के नोकदार जूतों का नमूना है या तो शौकीन मर्द और औरतों के पहिनने के जूते हैं जिस के बजाय वे लोग अब विलायती ख़रीद कर पहिनते है।

फूल पत्तियों का सच्चा और नक़ली काम इन पर सिर्फ़ बाहरी तरफ़ नहीं होता है बल्कि भीतर की तरफ़ भी होता है—इसका चमड़ा यहीं बनाया जाता है चांदी और सोने का तार जरमनी से बन कर आता है—काबुल में ख़ास किस्म का हलके रंग का चमड़ा इसके लिये मगाया जाता है—पेशावर के बने हुये खड़ाऊं क़रीब २ पञ्जाब के बने हुये खड़ाउओं से मिलते हैं-ये इन सब चट्टियों में भैंसे के चमड़े का दोहरा तेहरा तल्ला लगा रहता है और ऊपर की तरफ़ से उसी के तसमे से बांधा जाता है-इसमें भैंस, गाय, बकरे, और दुम्बे के चमड़े काम में आते हैं।

जिल्दबन्दी के काम का हाल जो इसी प्रान्त में होता है दूसरे जगह पर दिया जायगा—कच्चे माल चमड़े और कागज के काम में इस प्रान्त में अच्छी तरक्की की है-ब्रिटिश और फ़ारेन बाइबिल सोसाइटी का सामान नम्बर जी-३ ए में ४२५ भाषाओं में से १'५० भिन्न २ भाषाओं में बाइबिल की प्रतियां रक्खी गई हैं जिसका प्रचार यूरुप अमेरिका एशिया अफ्रीका और ओशेनियां में है।

इस संसार भर के अद्भुत संग्रह के अलावा हिन्दुस्तान में प्रचलित बाइबिलों के ३०० संस्करन का नमूना है जोकि हर प्रकार के नाप और छपाई की है—इन में पैसे वाली प्रतियों से लगा कर बडे गिर्जा घरो में पढ़ी जाने वाली कीमती बाइबिलों का नमूना है-हिन्दुस्तान के साठ मसाओं के क़रीब २ सब प्रतियां यहीं छापी और यहीं जिल्द बन्धी हैं और इस में कागज और काम हिन्दुस्तान ही का है—कलकत्ते की फ़ोटो टाइप कम्पनी के सादी और रंगीन तसवीरों के बनाने के तरीक़े दिखलाये गये हैं।

उत्तरीय भारत भर में सिर्फ लखनऊ की अपर इन्डिया कूपर पेपर मिल्स में कागज बनता है-इस कारखाने में उत्तम प्रकार का लिखने, छापने, और बांधने का सफेद, रंगीन और बदामी रंग का कागज और ब्लाटिंग पेपर तैय्यार होता है—यही कम्पनी हिन्दुस्तान के संयुक्त प्रान्त पञ्जाब और सीमा प्रान्त सरकार के कृषी विभाग के डाइरेक्टर के मध्य प्रदेश सरकारी के दफ़्तरों के खर्च के लिये कागज़ पहुचाती है—यहां का कागज बहुत सी देशी रियासतों में भी जाता है—यहां से सरकारी स्टाम्प का कागज भी जाता है और यहां के काम के खूबी के लिये कम्पनी को बहुत से तमगे भी मिले हैं—हुगली की टीटागढ़ पेपर मिल हिन्दुस्तान में सब से पुरानी है-हर एक मिलों में चार चार कलें हैं और हर साल १५००० टन तैय्यार कागज यहां बनता है-यहां बहुत बडे कागज सफेद ख़ाकी, महीन, चिकना, बदामी आसमानी और किताब बनाने के सादे और रंगीन कागज बनते हैं यह कागज साहब गंज और नैपाल के तराई के सहाई घास का बनता है और टाट और कपडों का चीथड़ गूदड़ भी काम में आता है-और नारवे से मंगाये हुये लकड़ी का छीलन भी काम में आता है-२५०० आदमी इन मिलों में नौकर हैं और उनका निरीक्षण निपुण अंग्रेज़

यूरोपियन करते हैं—इलाहाबाद में इस कारखाने के एजेंट विशम्भर नाथ निरंजन लाल है।

बम्बई की गुजराती टाइप फौन्डरी का काम भी रक्खा गया है जहाँ अंगरेजी, हिन्दी, संस्कृत, गुजराती, फारसी, अरबी, सिन्धी कनारी के टाइप बनते हैं—अंगरेजी, उर्दू और हिन्दी के टाइप किनारे फूल और छापे का सामान भी देखने को मिलैगा—इन सब चीजों से काम करने से बहुत समय और मेहनत बचती है यहा प्रिन्टर के कमरे में इस का काम दिखाया गया है सागवन के लकड़ी के बने हुये चौखटा और फ़र्मा भी रक्खे गये हैं।

इस प्रान्त में खनिज तेल का व्यापार नहीं होता है तब भी इसके बहुत तरह के काम के इस्तेमाल की वजह से यहां इसका दृश्य रक्खा गया है—बरमा के आयल कम्पनी का तैय्यार किया हुआ एक खूबसूरत पगोडा इस प्रदर्शिनी में बहुत मनोरंजक वस्तु है।

खेल तमाशे और औजारों के विषय में इस प्रान्त ने सिवाय खिलौने के काम में और किसी में तरक्की नहीं किया लेकिन पञ्जाब प्रान्त से आये हुये खेल तमाशे के असबाबों की बनावट की पूर्ण सफलता का परिचय दर्शकों को होगा।

सियालकोट के नामी झंडासिंह उबरोई के कारखाने के खेल तमाशों के सामान को देखकर यह ज्ञात होता है कि जो स्वर्णपदक इन प्रदर्शिनियों को दिये गये हैं वे वास्तव में बहुत ठीक हैं—उसी नगर के गंडासिंह उबरोई के कारखाने का जहां २०० आदमी काम करते हैं और जिनको ६ इनाम के तमगे मिले हैं काम की खूबी दिखलाई गई है—नन्दलाल बी० ए० कम्पनी का काम तीन प्रकार का है एक तो खेल तमाशे का दूसरा स्कूली असबाबों का और तीसरा गणित के काम के औजारों का है जिसका नमूना यहां दिखलाया गया है इस कारखाने के बने हुये नक़शे युक्त प्रान्त और पंजाब के स्कूलों के लायक़ बनाये जाते हैं—लाहोर प्रदर्शिनी में इस कारखाने को भी तमग़े मिले हैं।

कलकत्ते की रे कम्पनी का फुटबाल और मछली फंसाने की चीज़ों का सामान दिखलाया गया है।

बाजे के सामान का पूरा संग्रह दिखलाया गया है क्योंकि इस प्रान्त में इस हुनर को रवाज बहुत कम है और यहा पर उनको सिर्फ़ मरम्मत हो सकता है बेवन कम्पनो ने पियानो अमेरिकन आरगन और हरमोनियम वेडर कारखानों के बने हुये दिखलाये हैं यह बाजे हिन्दुस्तान के लिये बनाये गये हैं-और इनसे बढ़कर इन चीजों का कहीं काम नहीं होता उन्होंने यह बैण्ड का पूरा सामान मसलन आरकेस्टन ड्रम ब्रास इन्स्ट्रूमेन्ट इत्यादि दिखलाया है उन्होने वायलिन, मेन्डोलिन, वेन्जोज, सितार, एकारडियन, कनसर, टोना, कारनेट, क्लोरे ओनट बिगुल कलूटश म्युसिकल वाक्स निगर वाक्स इत्यादि यहा पर भेजा है-मसुरी के लाइवशन कम्पनी में भी तरह तरह के बाजे दिखलाये हैं।

जरमनी के वेल्ट एण्ड सन्स के कारखाने का बना हुआ कई प्रकार का बाजा रक्खा गया है-कलकत्ते के पेथोफ़ोन कम्पनी का पेथोफ़ोन बाजा जिसमें को सुई बदलने का काम नहीं पड़ता-क्योंकि होरे को एक सुई लगी है दिखलाया गया है-इसमें सुई बदलने को तकलीफ़ और उसके खर्च से बचत होती है-यह बहुत साफ़ और अच्छा बना है इसमें आवाज में किसी तरह का फ़र्क़ नहीं पडता। इस के पुरजे बडे मजबूत होते हैं और बहुत दिन चलते हैं-इस को चूड़ियां भी नही ख़राब होती क्योंकि इसमें को सुई को नोक गोल है-और लोहे की सुई की तरह नुकीली नहीं है-ग्रेमोफ़ोन ट्रेडिङ्ग कम्पनी ने यहां बहुत तरह के बाजे दिखलाने को रक्खे हैं।

यहां के भट्टी के लाह और सीसे के काम मशहूर हैं आजकल के उन्नति किये हुये इस खण्ड और दूसरे खण्डो में सामान मिलेंगे और बने हुये सामान विक्रयार्थ भी रक्खे जायंगे।

आज़मगढ़ के निजामाबाद के मट्टी के काम जिसपर काली और ललछर मट्टियों पर रुपहला काम बनाया जाता है-और पकाने के बाद अंगुठे के नहों से पारा और रुपहली काम बनाया जाता है यहां पर रक्खा गया है-इस तरह के चायदानी चीनीदान बत्तीदान और गुलदस्ते तैय्यार होते हैं इसमें उठा हुआ फूल का काम काले ज़मीन पर बहुत ख़ुशनुमा मालूम होता है-सब तरह के मट्टी का पूरा सामान बहुत होशियारी से रक्खा गया है-खुरजा के अबदुल हफ़ीज और अबदुलमजीद का मट्टी का काम बहुत उम्दा और ख़ुशनुमा

बना है और इसके लिये इनको हिन्दुस्तान और बाहर तगमे भी मिले हैं-यह काम रामपूर के काम की तरह है लेकिन उससे उम्दगी में बढ़कर है।

सीमाप्रान्त के पेशावर के बरतन की भी खूबसूरती बहुत बढ़कर है यह काम यहां बहुत पुराने जमाने से होता है-यहां के कारीगर लोगों में नये ढङ्ग के बनाने की शक्ति नहीं है किन्तु प्रदर्शिनी के लिये उनको मदद देकर के बहुत अच्छा काम बनवाया गया है-यहां के बरतनों मे खरिया मट्टी के काम का ढकना होता है जिसमें मट्टी के ललाई का बचाव हो सके इस पर लाल काम लाल रङ्ग के खरी से और काला काले पत्थर से जोकि खैबर की घाटी में मिलते हैं नीला लजवर्द से और हरा तम्बे के चूर और वार्निश को मिलाकर के बनाया जाता है-यह रोगन सीसे के आसार से बनता है-और फिर बरतन भट्ठे में रख कर गरम किये जाते हैं।

इनसे सुराही बराकट हुक्का काग़ज दबाने की चीजें गुलदस्ते और पिरच प्याले बनाये जाते हैं।

घरैलू काम के लिये बरतनों का ढङ्ग अफ़गानी होता है इन लोगों के उत्साह उठाने के लिये अच्छा काम और ढङ्ग सीखने को उत्तेजित करना चाहिये—कुछ फारस के पत्थर के बरतन भी यहां आये हुये हैं—इमारते बनाने के सामान के लिहाज से प्रदर्शिनी में बनी हुई इमारतों को गौर से देखना चाहिये—इस विभाग का लोहे स्टील और धातु का सामान भी यहां है।

प्रदर्शिनी में अनाज दरने और आटा पीसने इत्यादि की आई हुई कलों का नमूना यहां नहीं आसक्ता किन्तु उनमें तैय्यार हुये चीजों का पूरा नमूना है और इसके लिये कृषी विभाग मे जाना चाहिये।

सुगन्धित पदार्थों का व्यापार ते यहां बहुत पुराना है लेकिन तेल साबुन और रसायनिक पदार्थों का उन्नति पर है—साबुन बनाने में जो उन्नति हुई है उसको बहुत लोग नहीं जानते—नार्थ वेस्ट सोप कम्पनी का असाधारण सामान देख कर उनके काम की उत्तमता मालूम होती है—उन्हों ने बीच में एक साबुन का मकान बनाया है जिसमें हर तरह के साबुनों का नमूना रक्खा है और ख़ास कर के घोड़े का साबुन जोकि हिन्दुस्तान भर के पल्टनों मे काम में आता है

खम्भों के ऊपर के चोटी पर साबुन में पड़ने वाली चीजों का दृश्य है—यह साबुन बहुत शुद्ध बने हुये हैं और इसकी उम्दगी का हाल वहां काम होते हुये सामान से जान पड़ेगा—यहां पर ख़ास २ उम्दा साबुनों के नमूने रक्खे गये हैं और हिन्दुओं के ख्याल से यहां बग़ैर चरबी का साबुन भी तैय्यार होता है—उनके यहां के चमड़े में लगाने को रोग़न भी देखने लायक है—शीशे के बरतनों में ऊनी कपड़े धोने का मसाला है—उसी जगह पर उनके मोमबत्तियों की सजावट है जोकि ख़ास यहां के मौसिम के लिये माफ़िक है—खुर इत्यादि साफ़ करने का सामान भी अच्छा है।

क़ैसर सोप मेनुफेकचरिङ्ग कम्पनी में सिर्फ़ सुगन्धित साबुन तैय्यार किया जाता है इसी कारख़ाने ने पहले पहल ख़स, हिना और केवड़े के महक के साबुन तैय्यार किये थे—नीम इत्यादि औषधियों के बने साबुन भी तैय्यार होते हैं—हिन्दुस्तानी फूलों का सत सुगन्ध और रुमाल वा नहाने के लिये यहां निकाला जाता है—फ़र्रुख़ाबाद जिले के कन्नौज में तरह २ के अतर का काम होता है यहां पर कलकत्ते के ओरियन्टल सोप फैक्टरी और बम्बई के आनन्दराव भाऊ कम्पनी का माल भी देखना चाहिये।

लखनऊ और कलकत्ते के अमीर मुहम्मदख़ां ने सूखे मुश्क और अम्बर के इत्र बनाने में बहुत ज्यादा तरक्की किया है-इसमें ताजे फूलों से काम नहीं लिया जाता किन्तु कई कई तरह के सुगन्धित पदार्थों के मेल से यह इत्र बनाया जाता है जिस्से कि इसकी ख़ुशबू बहुत दिनों तक उम्दगी के साथ रहती है—अगर यह रेशम के कपड़ों में लगाई जाय तो उसमें कीड़े नहीं लगते—कई फूलों के मेल से रूह गुलाब बनाया जाता है और अगर डाट खोल कर या सूरज के रोशनी में रक्खा जाय तो फ़ौरन महक आजाती है गुलाब जब भरी पूरी हालत में रहते है तभी यह तेल उनमें से निकाला जाता है।

बनस्पति से निकाले हुये तेल का काम भी देखना चाहिये क्योंकि यहां के पैदायश के तरह तरह का इस्तेमाल हो सकता है-लखनऊ, सोलन, सिमला और मन्डाले के डायर कम्पनी के मशहूर शराब के कारख़ाने का दृश्य भी बहुत अच्छा है—इस कारख़ाने ने हाल में पिलसनर शराब तैय्यार करने का इन्तज़ाम किया है यह शराब विला-

यत के बोहेमिया नगर के नामी पौधे से बनाई जाती है और इसका इन्तजाम इस कम्पनी ने अपने यहां किया है—इन शराबों का नमूना प्रदर्शिनी में चीखने को मिल सकता है।

मछलियों के व्यापार की यहां हमेशा से बड़ी ढिलड्डी है थोड़े दिनों से मन्द्राज के सरकार ने इसका व्यापार खोला है जहां मछलियों का तेल निकाला जाता है और चाय काफी के खेतों में खाद के काम आने वाली मछलियां तैय्यार की जाती हैं यहां कई तरह के मछलियों का नमूना दिखलाया गया है तूतोकोरिन में सरकार का शंख और सीप का व्यापार अच्छी तरह से होता है जिसका गहना वग़ैरह बनाया जाता है।

बनी हुई तम्बाकू की चीजों का सामान १८९० ई० में लखनऊ के अहमदहुसेन दिलदारहुसेन ने बाजार में बिक्री के लिये रक्खा था—यह तम्बाकू पान के संग खाने लायक होती है और इसका नमूना भी देखने योग्य है।

हिन्दुस्तान का इम्पीरियल टोबैको कम्पनी की तम्बाकू और सिगरेट का माल जोकि विलायत के एक बड़े मशहूर कारख़ाने का बनाया हुआ है यहां दिखलाया गया है—और यहां के मौसिम के बचाव से बचाव के लिये बन्द टीन में रक्खी गई है—इजिप्त के मासपेरो फ्रेरो कम्पनी के ख़ास सिगरेट का नमूना दिखलाया गया है जोकि जांचने के लिये वहां पर और इलाहाबाद की ग्राहम कम्पनी में मिल सकता है—टुर्की और अमेरिका की तरह तम्बाकू पैदा करने की कोशिश की जा रही है और यह आशा की जाती है कि थोड़े दिनों में हिन्दुस्तान के संसार के एक बड़े हिस्से के ख़र्च के लिये तम्बाकू जाया करेगी।

यद्यपि यहां दियासलाई बनाने के लायक़ लकड़ी मिल सकती है यह बड़े खेद की बात है कि अब तक दिया सलाई के विषय में यहां उन्नति नहीं हुई—युक्त प्रान्त के व्यवसाय विभाग के डाइरेक्टर के यहां से या प्रदर्शिनी से इन बातों का पूरा हाल दरियाफ़्त हो सकता है।

आगरा के सत्यनारायण कम्पनी का बना हुआ ब्रुश का सामान रक्खा गया है—बालके—घोड़े के रङ्गने बन्दूक़ के बाइसिकल और कलों के ब्रुश जिनका दाम ।॥ पैसे से लगाकर ५) रुपये तक है इसी

कारख़ाने के बने हुये हैं ये बहुत उम्दा और बढ़िया बने हुये हैं—यहां के बने हुये कलम लाह को मोहर—ब्लाटिङ्ग का रोलर काग़ज दबाने को चीजें भी दिखलाई गई हैं।

बटन और छोटे मोटे व्यवसाय के सामान यहां मौजूद हैं—इसी तरह के मसाले, चटनी, अचार, छापने का सामान, लकडी और धातु का सामान आतशबाज़ी काफ़ी और नशे की चीजों का हाल भी जानना चाहिये।

मुजफ़्फ़रनगर के हर मौसिम के हमेशा फल बेचने वाली कम्पनी का नमूना मसलन तिरहुत के बम्बई लगड़ा और रानी भोग आम मुज-फ़्फ़रनगर की लीची और सिलहट के अनन्नास बंद टिन में विकते हैं—इन फलों का स्वाद कभी बिगडताही नहीं और यह वैज्ञानिक रीति से बंद किये जाते हैं—और इसमें साफ़ चीनी काम में लाई गई है और दिल्ली के हिन्दू बिसकुट कम्पनी का हिन्दुओं के खाने लायक़ बिस्कुटों का दृश्य है।

कलकत्ता के इनटेलिजेन्स सेंडिकेट विभाग के मनेजर एस-एस-बोस २६ कारख़ानों का काम लाये हैं—दास कम्पनी के मशहूर कार-ख़ाने का बना हुआ एक ताला दिखाया गया है जिसमें दूसरी ताली लगाने ही से फिर ताले से ताली नहीं निकलती और चोर झट पकड़ जाता है इसका दाम २५) रुपया है लोहे के सन्दूक़ और अलमारियां भी हैं जिन पर ५० मन का बोझा रक्खा जा सकता है।

पानी ठंडा करने के यत्र को युक्त प्रान्त के पुरुष बहुतही पसन्द करेंगे—एक बंगाल की कम्पनी की बनाई हुई स्याही बहुत अच्छे मेल की है।

बन्देमातरम दिया सलाई और स्माल इनडस्ट्रीज डेवलपमेन्ट की बनाई पेनसिल का नमूना जो स्वदेशी वस्तु से बनाया गया है सराह-नीय है।

सब से अनूठी चीज बोस बाबू का आरारूट है यह एक बंगाल के गांव में बहुतायत से होता है जोकि साये में उगता है और छोटा रहता है कुछ थोडे से पौदे तो यहा आये हैं लेकिन इसका तैय्यार माल टिन के बद बक्सों में है—जे-बी-दत्त बाबू ने स्वदेशी हल चल के समय में इस का पूर्णरूप से व्यहार किया था।

सब से तारीफ का काम के-सी-बोस के मोतिया जव (पर्ल बारली) का होना है जोकि हर तरह से विलायती वाले का मुकाबला करता है और इसको कलकत्ते के डाकटरों ने बहुत उपयोगी बतलाया है।

कलकत्ते के मट्टी के बरतन का काम भी अच्छा है बंगाल सोप फैक्टरी और नेशनल सोप फैक्टरी की चीज़ें तो योहीं बहुत मशहूर हैं-बड़े दिन के मौक़े पर डा-सेने एन्ड कम्पनी और पायनिअर कन्डीमेन्ट कम्पनी की चटनी अचार की चीजें बहुत होंगी—इन कारख़ानो का बाहर बहुत नाम है—कविराज राखाल चन्द्र सेन का भेजा हुआ सुगन्धित पदार्थ और फूलों का नमूना भी है इस विभाग का बहुत लम्बा चौड़ा दृश्य होगा।

तरमीम किया हुआ

——:o:——

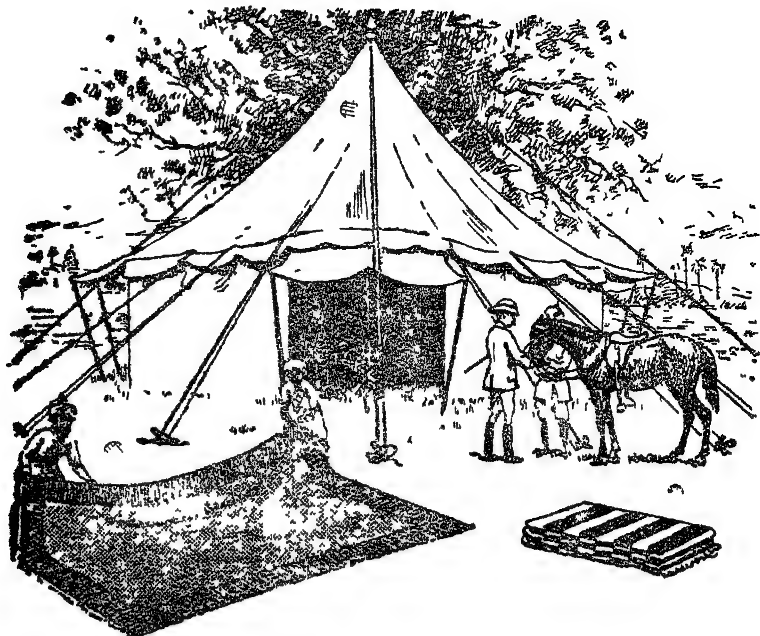
डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर संयुक्त देश

आगरा व अवध

———

मुफ़स्सल हाल के लिये साहब सुपरिन्टेन्डेन्ट गवर्नमेन्ट प्रेस

संयुक्त देश इलाहाबाद के पास दरख़ास्त आनी चाहिये



खेमा और दरी

म्यूरमिल के खेमों ग्लौमेन्ट का मुकाबिला करते हैं। ये खेमे तमाम दूसरे खेमों से बढ़ कर है।

म्यूरमिल की दरियों को

सन १९१० के लाहोर के प्रदर्शिनी में सब से बड़ा इनाम सोने का तमग़ा मिला है।

तरह तरह के डिज़ाइन चीजों की उम्दगी किनारे की उत्तमता रंग का चटकीलापन के अलावा ये दरियां बहुत दिनों तक चलती हैं।

ये दरियां लासानी हैं।

हर तरह के नमूने की तसवीरदार फेहरिस्त के लिये लिखिये। सब चीजे जो कि म्यूर मिल कम्पनी में बनती हैं इलाहाबाद की प्रदर्शिनी में टेक्सटाइल कोर्ट से मिले हुए खेमे में सजाई जायगी।

शाखाये कलकत्ता लाहोर और क्वेटा।

दि म्यूर मिल्स कम्पनी लिमिटेड कानपुर

भाग सातवां

(अ) देशी रियासतों का विभाग

इस खण्ड में कई प्रकार के शिल्प सम्बन्धी और देशी बने हुये सामानो का संग्रह है और बहुत सी चीजें इसमें बिकाऊ भी हैं।

ग्वालियर, काशमीर, जयपुर, मालेर कोटला और बीकानेर की रियासतो से आई हुई वस्तुओ का विशेष समूह है—और हर एक रियासतों का सामान अलग २ रक्खा है—कोटा और जोधपुर से छोटी चीजें आई हैं किन्तु वे सब पूरी पूरी हैं और भरतपूर करौली धौलपूर, शाहपूर, छोटापूर और धेर का अति उत्तम और मनोरञ्जक सग्रह है।

जगह के ख्याल से रियासत ग्वालियर का सामान बहुत है यहां के चमड़े का सामान जैसा घोड़े और हाथी के जीन और तरह २ के विदेशी चमडे दिखाये जांयगे—ग्वालियर राज के अजायब घर के चमड़े बने हुये आये हैं—ग्वालियर के धातु का काम यानी ताले स्टील बक्स और तरह २ के बक्स मोहर चपरास और पट्टे वगैरह भी दिखाये जांयगे—और छापेख़ाने की किताब की जिल्दबन्दी का और रङ्गीन काम का नकशे इत्यादि का नमूना भी वहां रहैगा।

छापे के टाइप बनाने की ग्वालियर के कारख़ाने की तरक़ीब यहां पर दिखलाई जायगी।

सूती कपडों में धोती पलंग के चद्दर तौलिया वग़ैरह दिखलाई जांयगी।

ग्वालियर के निब के कारख़ाने की जिसने कि हिन्दुस्तान की प्रदर्शिनियों में कई पदक भी पाये हैं तरह २ की निब दिखाई जांयगी वहां की पीतल की बनी हुई चीजें भी रहैंगी।

ग्वालियर के पत्थर के खान के सुपरिन्टेन्डेन्ट ने वहां के मशहूर बलुआ पत्थर के नमूने भेजे हैं ऐसे पत्थर में बहुत बारीकी का काम किया जाता है महराब बारजे इत्यादि हर तरह के सामान सब प्रकार के बड़े छोटे बन सकते हैं।

कारपेट फैक्टरी के पक्के वनस्पति से निकाले हुये रंगों का और खूबसूरत काम के ऊनी गलीचों का नमूना भी रहैगा-यह निपुण आदमियों की राय से बनाया जाता है और विलायत और अमरीका को बहुत भेजा जाता है—कम्बल चटाई और बड़े २ गलीचे भोजन गृह और कमरे और दरबार के कमरों के लायक़ भी हर नमूने के बन सकते हैं अकोवा में उद्भिजी पदार्थ के रेशम और रोयेदार बिने हुये सामान खास तरह के बनते हैं।

इतिहास में विख्यात चन्देरी का जरी का काम जो अपने बारीकी और खूबसूरती के लिये मशहूर है कई तरह के और सूती और रेशमी दोनों क़िस्म के मिल सकते हैं—इन सब चीजो की सारी, रूमाल धोती, पगड़ी और औरतों के कपड़े अच्छे बन सकते हैं।

वहां के शिल्पीय विद्यालय के भेजे हुये लकड़ी का सामान लोहे के सन्दूक और दफ़्तर के लायक टिन के बकस टिन के डिब्बे रंगसाजी का काम मट्टी के खिलौने और फल बने हुये आये हैं-ग्वालियर के खनिज विभाग में एक बहुत बड़ी रसायन शाला है जहां हर तरह के खनिज पदार्थों की जाच और कार्रवाई होती है—इस राज्य का खनिज धन बहुत है जहां लमोनाइट, मेगने टाइट, हेमे टाइट, रेड ओकर, येलो ओकर, आयरन बिराइट, मेलकाइट, गलेना, बारटीज, माइका, फेलडेपर, ह्वाईटक्लेज और लाइमस्टोन पैदा होता है-जिससे आशा है कि थोडे दिनों में यह बहुत उन्नति करैगा मालेर कोटला ने सब से पहले प्रदर्शिनी में जगह लेलिया था और उत्तर और पश्चिम के तरफ़ वहां का सामान है।

शेख़ महमूद का बक्स का बनाया हुवा चांदी का काम कशमीर और बनारस के काम का मुक़ावला करता है और यह अङ्गरेजी और हिन्दुस्तानी ढङ्ग के बने हुये हैं।

मालेर कोठला की बनी हुई औरतो के हाथ की चूड़ियां बहुत ही खुशनुमा हैं-यह सिवाय इस जगह के और पञ्जाब भर में कहीं नहीं बनतीं।

यहां बन्दोबस्त और इनजिनियरिङ्ग के काम का पीतल का बना हुआ नापने का सब सामान मिलता है और यहां के बने 'पैता' को अङ्गरेज और हिन्दुस्तानी दोनों काम में लाते हैं।

हाथी दांत की बनी हुई बहुत खूबसूरत सुरमेंदानी और बटन भी तैय्यार होते हैं और महगे भी नहीं हैं-यहां पर नन्दराम मिस्तरी का बनाया हुआ लकड़ी का एक सन्दूक़ है जिस में ख़ाने २ में रखने की चीज़ों का नाम अङ्गरेजी, फ़ारसी, संस्कृत और गुरमुखी में लिखा है देखने लायक है ।

अब्दुलसमद के कारख़ाने का बना हुआ मखमल के पर्दे पर एक मोर का चित्र बड़ी शोभा सहित तैय्यार किया गया है ।

यहा की बनी हुई जरी का काम बनारस से मिलता हुआ है-और पंजाब में सिर्फ इसी जगह पर मिलता है इस कारख़ाने के संरक्षक यहां के नवाब साहब ख़ुद हैं ।

मालेर कोटला के तस्सू का काम बहुत उम्दा होता है और यहा के सलेमशाही जूते देखने के लायक हैं सूती कपडे की लुङ्गिया चौ-तहियां और दो तहियां और खेश रंग बिरंगे पञ्जाब में बनते है-लुङ्गियां तो पहिनने के काम में आती हैं और चौतही दुइतही बिछाने के काम में आती हैं ।

यहा के सामान ऐतिहासिक रूप से देखने योग्य हैं और यहा के नवाबों की तसवीर आभूषण और हथियार भी देखने के लिये आये हैं ।

काश्मीर राज्य का पदार्थ दक्षिण के तरफ वाले हिस्से में है

दरी और रेशम के काम के लिये काश्मीर बहुत विख्यात है और यहां अच्छी तरह दिखाये गये हैं—यहा की सूची बनाना तो असम्भव है और सिर्फ़ इसी के देखने में लोगों का पूरा दिन लग जायगा ।

जयपूर का सामान दक्षिण पूरब वाले कोने मे है-जयपूर के का-रीगर धातु जवाहरात रोगन और झिलमिल कामदानी और कागज पर के काम के लिये मशहूर हैं-राज्य के अजायब घर और आर्ट स्कूल की चीजें और कारीगरों का काम देखने से पूरा परिचय मिलैगा और इन चीजों की नक़ल दाम देने से मिल सकती है ।

बीकानेर राज्य के पदार्थों का दृश्य पश्चिम के तरफ़ बढ़िया ग-लीचों और फ़र्शी चीजों का सामान है-और इन चीज़ों में यहां पर ख़ास तरक्की हुई है ।

पूरब के हिस्से में जोधपुर राज्य के पत्थर का काम ऊनी कपड़ों का नमूना चिकन का काम और प्राचीन समय के ख़ज़ाने का दृश्य रहैगा।

रियासत कोटा के पत्थर के खान के नमूने का दृश्य नदी तट पर रक्खा गया है और यहां दो छतरी हैं-सफेद पत्थर जो एक छतरी में लगा है महीन काम के लिये बहुत योग्य है और इस की बाहर से बहुत मांग होती है—दूसरे छतरी का लाल पत्थर भी नक़ाशी के काम में आता है और सफ़ेद वाले से मज़बूत होता है और मकान बनाने में भी काम में आता है और बाहर को भी भेजा जाता है इस जगह पर कोटा राज्य का और ज्यादा नमूना नहीं है किन्तु थोड़े से कालीन डोरिया और मलमल जिसकी सफ़ाई और मजबूती मशहूर है यहां पर दिखाई गई हैं—यह माल विलायत को बहुत भेजा जाता है और भारत वर्ष में भी बहुत काम आता है—इस राज्य का और सामान कृषी विभाग में है।

भरतपुर के पत्थर का सामान भी नदी के किनारे पर रक्खा गया है—यहां पर एक ३० फ़ीट लम्बा और तीन फ़ीट आगे निकला हुआ बारजा जिसके नीचे १० दोहरे और ६ एकहरे तोड़े लगते हैं सफेदी लिये हुये पत्थरों का बना हुआ है—इस में फूलदार खोदे हुये खम्भे से तीन विभाग कर दिये गये हैं—इन बारजों के खम्भों में भरतपुर का मशहूर जाली का काम बनाया गया है—इस के अलावा दो सिंहासन एक सफ़ेद और दूसरा लाल भरतपुर के पत्थरों का बना हुआ रक्खा गया है—सफ़ेद और दूसरा पत्थर एकही तरह का है किन्तु उसके लेमिली में फट जाने का डर है जब यह नया होता तो इसमें आसानी से काम बनाया जाता है इसमें खुले रहने से असर नही होता और बाहर भेजने के लायक़ हर नाप में मिल सकता है—लाल पत्थरों को खुला रखने से कड़ाई आ जाती है और एक इञ्च मोटे टुकडो से लगाकर बड़े भारी २ भी हर नाप के मिल सकते हैं—आगरा फ़तेहपुर सीकरी मथुरा और दिल्ली की पुरानी इमारतों में यह पत्थर काम में लाये गये हैं।

इस सहन के भीतर के भाग के लिये भी भरतपुर के राज्य ने चीजें भेजी हैं और यहां पर लकड़ी में बना हुआ करौली राज्य का भी काम रक्खा है बाक़ी राजपूत रियासतों में से धौलपुर से एक चांदी

का एक नमूना एतमादुद्दौला का है शाहपूर से पुराने हथियारों और लकड़ी व धातु के काम आये हैं।

धार रियासत से बुने हुये काम आये है—इन्दौर से एक आदमी ने स्याही का नमूना भेजा है बुन्देलखंड के छतरपुर की रियासत का काम देखने योग्य है।

अवध मन्दिर

इस भवन के तय्यार करने में इलाहाबाद के हेमिलटन साहब, नवाब गुलामहुसेन खां और लखनऊ के चौधरी बासिटहुसेन साहब ने बहुत मेहनत की है—इस भवन में लखनऊ के नवाबों और अमीरों की दी हुई चीजे हैं जो कि बहुत रोचक हैं—बहुत सी तो इस मे से पुरानी चीजें हैं और बहुत सी ऐतिहासिक समय की हैं—बहुत से काशमीर के कीमती दुशाले भी रक्खे गये हैं—इनकी रवाज अवध के नवाबों के यहां बहुत होती थी और अब तालुक़ेदार और रईस लोग ख़रीदते हैं—पहले यह पहिनाव की ख़ास चीज थी और कोई खिलअत बगैर दुशाले के नहीं बख़शा जाता था—सब से बढ़ कर इनाम तब दुशालाही समझा जाता था—उसी तरफ़ इन दुशालो की नक़ल लखनऊ की बनी हुई दिखाई गई है—ज़रदोजी का काम जो मखमल और रेशम पर जरी के काम से बनाया जाता है अब तक अवध के घरानों में इस्तेमाल होता है—यहा पर लखनऊ के मशहूर चिकन के बेलबूटों का काम दिखाया गया है जिसके सबब अब तक हज़ारों आदमी रोटी पाते हैं—चीन का थोड़ा सा संग्रह जिस में घोरी की तशतरियां भी (क्योंकि घोरी के वंश के समय में यह तशतरिया हिन्दुस्तान में मगाई गई थीं) हैं और जिसकी तासीर यह है कि ज़हर रखने ही से टूट जाती है यहा रक्खी गई है-यहां पर कुछ सोने और चादी के बरतन भी रक्खे गये हैं।

फ़ारसी—अरबी और सस्कृत की लिखी हुई पुस्तकें जैसी कि अब नहीं मिलतीं रक्खी गई हैं—बहुत सी किताबें शमसुलउलमा डाक्टर सैयद अली बिलग्रामी एम-ए-डी-एल की हैं जिसने विद्या में अच्छी उन्नति की है—इन किताबो में एक अबुल फ़ज़ल के हाथ की लिखी हुई अकबर नामा भी है जिसमें बादशाह ने ख़ास अपने हाथों से अदल बदल किया था और छपने के पहले बहुत सा हिस्सा निकाल भी दिया था-और अबुल फज़ल के हाथ के बनाये हुए और बढ़ाये हुए सुधार और ख़ाली जगहों में शैर भी लिखे हैं।

और कुंवर दुरगाप्रसाद ताल्लुक़ेदार के हाथ की लिखी हुई बड़ी खूबसूरत २५० पुस्तकें भी हैं जिसको उन्होंने गत १० वर्ष में तैय्यार किया है ऐतिहासिक चित्रों का संग्रह भी अपूर्व ही है जिसमें अवध के नवाबो की बड़ी २ तसवीरे हैं-और भारतीय जीवन के अवस्था बताती हुई भी कई चित्रकारियां हैं।

लखनऊ से विदार के कारीगरी के नमूने की नक़ल आई है जोकि उसके हर तरह से बराबर है और कुछ लोगे की तो यह राय है कि ये उससे बढ़ कर है-इस विचित्र भवन की शोभा बढ़ाने के लिये पुराने वक्तों के हथियारों का नमूना भी रक्खा गया है।

लखनऊ की म्युनिसिपैलिटी की चीज़ें

अवध भवन के दक्खिन की तरफ़ के हिस्से में लखनऊ की म्युनिसिपैलिटी का भेजा हुआ सामान है और वहां के सेक्रेटरी वारिंग साहब ने इस कार्य में बड़ी मेहनत की है।

धातु के कामों की चीजो में चादी का भी काम है जिसमें बड़ी खूबसूरती के साथ बन का दृश्य दिखलाया गया है और पीतल के पीटे हुये वीदरी के काम भी हैं-लखनऊ के मशहूर मट्टी के खिलैाने जिसमें हर तरह के काम के चित्र हैं और हाथी दांत चिकना और हड्डी का काम करते हुये दिखलाये गये हैं।

लखनऊ में जितना काम होता है या होता था सब का नमूना इस जगह दिखलाया गया है।

जापान के हुनर का दृश्य

जापान का कुछ बढ़िया काम उसके ख़ास भवन मे दिखलाया गया है-इनमें जवाहरात के चादी सोने के लकड़ी में खुदे हुये रोगन के रेशम के बेलबूटे के या और जापानी अद्भुत वस्तुओं के चीजों का संग्रह है-जापान के हिन्दुस्तान में रहने वाले अफ़सर अलग २ सब चीजों के मगाने का इन्तजाम किया है जो दूसरे भवन में रक्खा जायगा-जापान भवन के दक्खिन भाग में जापान की बनी हुई चीज़ो का सग्रह है जो यूरूप में मिली है और ख़ास इस प्रदर्शिनी के लिये भेजी गई है-और ज़्यादा हाल इसके दूसरे सन्सकरण में दिया जायगा॥

जब कि आप प्रदर्शिनी देखने जांय

हम लोगों के स्टेण्ड को अवश्य देखिये

हम लोगों को विश्वास है, कि यहां आप को बहुत सी बातों में आनन्द मिलेगा।

आप लोग यहां पर कुछ ऐसो सुन्दर गाड़ियों का नमूना देखेगे जैसी कि आज तक दुनियां में बनो नहीं थीं और जिनका दाम ऐसा रक्खा गया है, कि सब कोई ख़रीद सकें।

हम लोग नीचे लिखे हुए प्रसिद्ध कारीगरों के एजेन्ट हैं।

वर्लिएट—मिनारवा
डिलाउने-बेलोवाइल
डीडायेटरिच
क्लोमेंट बयार्ड
बेबी पेगोट

यहां हिन्दुस्तानियों द्वारा प्रस्तुत बोडी (ढांचे) सुन्दर तरह से सजाए गए हैं, यह हम लोगों के माडल कोचिंग फैक्टरी में पेरिस के चतुर कारीगर मनुष्यों के देख भाल में हिन्दुस्तानी कारीगरों द्वारा तैय्यार किये गये हैं।

नोट—यह सब बाडिया (ढांचे) कमाई हुई उत्तम सागवन को लकड़ी को और उत्तमोत्तम चीजो से बनाये गये हैं।

यह बाडिया (ढाचे) फ्रास के बने हुए बाडियो (ढांचो) को अपेक्षा हिन्दुस्तान को आबो हवा के मुताबिक बहुत दिनों तक ठहरेंगे।

हम लोग बहुतसा मोटरकार का सामान और बनाने की चीजे रखते हैं।

हम लोग मरम्मत करने का काम बहुत उत्तमता से करते हैं। साइलेण्डर (बेलन) ढाल सकते हैं और लेवेल ढाल भी काट सकते हैं और नये रेडीएटर भी बनाये जाते हैं।

दी फ्रैंच मोटरकार एण्ड इलेक्ट्रिक कम्पनी लिमिटेड

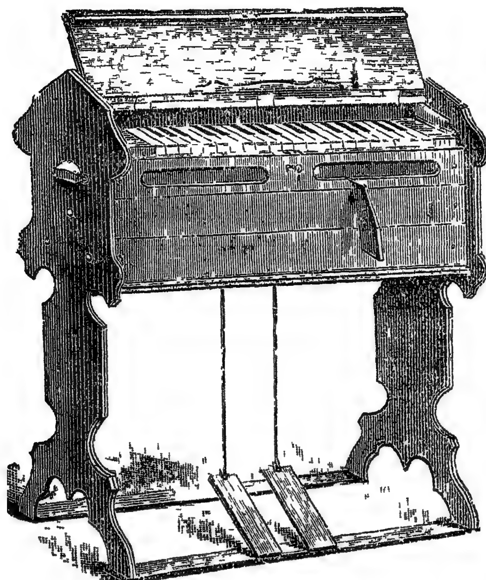
५२ न० बेंटिक स्ट्रीट कलकत्ता और न्यू क्वीन्स रोड बम्बई

G

हेरल्ड एण्ड को पोस्ट बाक्स नं० २१४ कलकत्ता

हलका उठाने के क़ाबिल अरगन बाजा ख़ास कर मुफस्सल में इस्तेमाल के लिये बनाया गया है।

माडल नमूना नं० १ कम्पास और ४ आकटेवो सहित सफर में लेजाने के काबिल बकस में मू० ७५) रु०।



माडल नमूना नं० २ कम्पास ४ आकटेवो सहित मुड़ने लायक़ मय ताला कुजी के मू० ८५) रु०।

हारमोनियम, ख़ास कर के हिन्दुस्तान के लिये बनाये गये हैं और हिन्दुस्तानी गाने के उपयुक्त हैं।

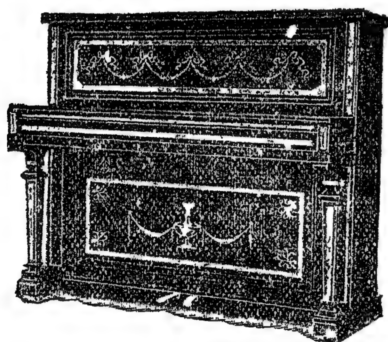
नं० १ कम्पास ३½ आकटेवो मू० १३०) रु०

नं० २ कम्पास ३¾ आकटेवो मू० १४०) रु०

नं० ३ कम्पास ३¾ आकटेवो मू० १७०) रु०

नं० ४ कम्पास ४ आकटेवो मू० १९०) रु०

हेरल्ड एण्ड को प्रसिद्ध "मेसन एण्ड हामलिन" आरगन बाजा के एजेन्ट हैं मू० १५०) रु० से १८७५) रु० तक है।



बड़े नमूना के बाजों के लिये ख़ास तख़मीने दिये जाते हैं।

हेरल्ड एण्ड को सब बड़े बड़े पियानो बाजा बनाने वालों के पियानो बाजा का एक बड़ा जख़ीरा रखते हैं।

हलका पियानो बाजा २३०) रु० से २५०) रु० तक के हैं।

काटेज पियानो बाजा ४५०) रु० से १३५०) रु० तक के हैं।

ग्राण्ड पियानो १२००) रु० से ४५००) रु० तक के हैं।

नमूने के लिये दर्ख़ास्त कीजिये। हमारे दूकान पर ये बाजे हर वक्त देखे और बजाये जा सकते हैं। पियानोला और पियानोला पियानो बाजे के एजेन्ट हारलड एण्ड को डलहौसी स्कायर कलकत्ता।

नोबुलस एक्सप्लोसिव कम्पनी लिमिटेड।

ग्लासगो

—:०:—

स्टेट नम्बर

डिनामाइट
कारबोनाइट
गैलगेलानाइट
ब्लासटिंग जलाटीन
(सुरंग उड़ाने का जलाटीन)
मोनोबेल पाउडर

डिटोनेटर्स (पड़ाका)
इलेक्ट्रिक डिटोनेटर्स
सेफ़्टी फ्यूस
ब्लासटिंग एसेसरीज़
सुरंग उड़ाने की चीजें

—:०:—

इमपायर और बालिसटाइट स्पोर्टिंग कारट्रिजेस (कारतूस)

यह दुनियां में सब से उमदा भक से उडने वाली चीजें हैं।
जिनकी अंगरेजो द्वारा प्रस्तुत होने की गारन्टी की गई है
भारतवर्ष में इसे ले आवने की आज्ञा है

—:०:—

एजन्टों के नाम

गिलाण्डस अरबथनोट कम्पनी कलकत्ता।
इवर्ट लाथम एण्ड को बम्बई।
इवर्ट राईटी एण्ड को करांची।
बोसानकेट एण्ड को कोलम्बो।
फ़िनलेफिलेमिग एण्ड को रंगून।
बेस्ट एण्ड को मदरास।

भाग-आठवां

शिक्षा विभाग

प्रदर्शिनी में विभाग सम्बंधी विषयों का कारखाना अवश्यकीय है क्योंकि इसका हुनर और व्यवसाय पर बहुत असर पड़ता है और मदद मिलती है और संयुक्त प्रान्त के प्रदर्शिनी का उद्योग भी है-शिक्षा के प्रत्येक विभाग से सामान मगाया गया है सर्वसाधारण और अध्यापकों का ज्ञान बढ़ाने के लिये यह किया गया है और यही प्रदर्शिनी का उद्देश भी है-यह खण्ड स्त्री भवन के बाद वेलकम क्लब के ठीक सामने है-यहां जाते ही मध्य के कमरे में स्त्री और साधारण शिक्षा विभाग के दृश्य हैं-इसके दोनो तरफ बहुत से कमरे है और बांयें तरफ उच्च शिक्षा और व्यवसाय विभाग के दृश्य हैं और दहिने तरफ़ वाले में विश्व विद्यालय शिल्पीय कारीगरी कृषी विभाग व्यवसाय के कालिजों रिफारमेटरी (सुधार) स्कूलो का और दोषी लड़को के फ़ायदे के लिये दृश्य रक्खे गये हैं-यहां हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों की चीजे ते हुई हैं किन्तु मिलान करने के हेतु विलायत मेनचेस्टर ग्लासगो का भी सामान मगाया गया है-अमरीका और फ्रांस से भी दृश्य आये है।

स्त्री शिक्षा भवन

ढाका के नाथन साहब सी० आई० ई० का भेजा हुआ यहां पर एक विचित्र घूमने वाला परदा है जिस पर १०० तसवीर यहां के कन्यायों के पाठशाला में विविध प्रकार का काम करते हुये दर्शनीय हैं यहा के तिपाई और दीवालों पर बच्चो के काम से अध्यापिकाओं के काम का नमूना रक्खा गया है किन्डर गारटन विभाग का काम भी देखने लायक़ है युक्त प्रान्त के उड स्टाक कालेज के भेजे हुये दृश्य हैं और अध्यापिकाओं को जरूर उस को देख कर फायदा उठाना चाहिये-इसके बाद प्रकृति से शिक्षा ग्रहण करने का दृश्य है—इसका प्रचार यहां थोड़े ही दिनों से है और उन्नति हो रही है इस लिये इस

के काम के बहुत गौर से देखना चाहिये—यह प्राकृतिक शिक्षा का नियम गांव और छोटे स्कूलों में सिखाया जाता है-हिन्दुस्तानी लडकों के तैय्यार किये हुये बुरुश का काम उनके और अध्यापकों के वास्ते सामान्य रीति से सराहनीय है-सुई का काम तो यहां पर आधी जगह घेरे हुये है-देशी विलायती सामान सब एक ही रक्खे हुये हैं-देशी काम में ज्यादातर फूल पत्तियों का काम है और विलायती इन का मुकाबिला नहीं कर सक्ता—यहां सुई के सादे काम सिखाने का यत्न हो रहा है और लड़कियों को पसन्द भी आता है-विलायत से भेजे हुये काम को देखने से मालूम होगा कि वहां की अध्यापिकाये इस काम में कितना ध्यान देती हैं-यहां पर तो लडकियों के सुई का काम थोड़ा है पर स्त्री भवन में बहुत विस्तार से दर्साया गया है।

अध्यापिकाओं का गणित भूगोल और लिखने के काम की कार-रवाई देख कर बहुत सहायता होगी-मामूली आदमी को भी देखने से मालूम हो जायगा कि इन लड़कियों का काम लड़कों के काम से किसी क़दर घट के नहीं है बल्कि सफाई और सजावट में उन से बढ़ कर है-विलायत के स्कूलों की भेजी हुई तसवीरों के देखने से मालूम होगा कि लड़कियों ने इस श्रेणी में कितनी अधिक उन्नति की है और वहां के काररवाई और कर्तव्य भूमिका के महत्व का भी परिचय हो जाता है-जगह के न होने के कारण बहुत से देशी विलायती माल लौटा दिये गये।

जो लोग यह कहा करते हैं कि स्त्री शिक्षा का प्रचार बहुत धीमा है उनको इसके देखने से विश्वास हो जायगा कि थोड़े दिनों में यहां कितनी उन्नति हुई है और भविष्य में होने की आशा है।

साधारण शिक्षा-इस भाग में लड़कों और अध्यापकों के देशी और नार्मल स्कूल का तैय्यार किया हुआ काम रक्खा गया है-सब से अद्भुत वस्तु इसमें भूगोल के और दूसरे सबक़ पढ़ाने के ढांचे का नमूना है इसके अमूल्य महत्व की अपेक्षा इस से जो लड़कों को फ़ायदा और शक्ति होती है वह उसकी क़ीमत तो बहुत ज्यादा है इस विभाग में ड्राइंग लिखने के गणित के सिखाने के ढांचे और हाथ के काम का दृश्य है इसके लिये बहुत से सामान आये थे किन्तु सामान के अभाव से लौटा दिये गये-इस भाग के अफ़सर ने बड़े खेद

के साथ उन सब को लौटा दिया-जो रक्खे गये हैं उन्हीं के देखने से देशी स्कूलों के काम का परिचय होता है-इसी के साथ २ ऐसी ही विलायती चीज़ों का दृश्य है।

कमरे के बाईं तरफ़ उच्च शिक्षा संबंधी विषय रक्खे गये हैं इस में एक कमरा और दो बरामदे हैं एक बरामदे में लकड़ी और मट्टी का काम सिखाने के सामान रक्खे गये हैं-हिन्दुस्तानी लकड़ी के काम कुरसियां मेमोरियल स्कूल का और कानपूर के ई-आर-आर हिल स्कूल का काम है-इन कामों का मुकाबिला विलायत और अमरीका के स्कूलों के काम से करना चाहिये-इसको बढ़ईगीरी के काम के नमूने न समझना चाहिये-इस का अभिप्राय ज्ञान शक्ति और हाथ की कारीगरी बढ़ाने का है ऐसे पढ़ाई का प्रबंध बहुत समझ के करना चाहिये कि जिसमें एक दम से सब काम न बतलाया जाय और ऐसा काम बताना चाहिये कि जिस में लड़का उसके पूरे २ काम को अच्छी तरह समझ सकै इस बात को पूरी तौर से दिखलाने के लिये यत्न किया गया है इन पढ़ाइयों की काररवाई शिक्षाप्रद होना चाहिये हाथ से खींचने और बनाने की शिक्षा का सामान जो इलाहाबाद के हायर ग्रेड ट्रेनिंग कालिज (उच्च शिक्षा के पढ़ानेवालों का कालेज) के बनाये हुये सामान के देखने से मालूम होगा कि कितना कठिन से कठिन और पेचीले काम के सीखने में लड़कों का मन लगता है और उससे उनको कितनी अच्छी शिक्षा मिलती है-लखनऊ के जुबिली हाई स्कूल के बनाये हुये यहां बडे लाट साहबों लार्ड मिन्टों की मट्टी की प्रति बहुत अच्छी बनी हुई है।

भवन के मध्य में प्राकृतिक नियम से शिक्षा ग्रहण करने का हाल दिया गया है-इन चीजों के देखने से मालूम होगा कि रटने और फ़ज़ूल मेहनत के बचाव के लिये कितनी उन्नति की गई है- उनसे पता लगता है कि अच्छे और सहल तरीके से क्या लाभ होता है-प्राकृतिक नियम से शिक्षा ग्रहण का विषय गूढ़ होने के कारण शिक्षा प्रबंध से नहीं हटाना चाहिये-बल्कि साथ ही साथ दूसरा विषय भी बताना चाहिये-मजबूती सावधानी और सफाई का काम देखने के लिये कायडन से भेजे हुये सामान को बहुत अच्छी तरह से देखना चाहिये।

प्राकृतिक नियम के साथ ही साथ बाग बगीचे शिक्षा ग्रहण के नियम का संग्रह है—इसका काम तो गांव के स्कूलों में भी प्रवेश

कर गया है किन्तु बड़े खेद की बात है कि उस नियम में उन्नति करने के अपेक्षा वहां जो चीज पैदा की जाती है एक समालोचक के कथनानुसार अफसर की भेट के लिये तैय्यार की जाती है और उस से कोई लाभ नही उठाया जाता है—विलायत से आये हुये ड्राइङ्ग फोटो की काररवाई के नियम की जांच करने से अध्यापकों को मालूम होगा कि ये ढङ्ग कैसे शिक्षाप्रद हैं और इनसे कितना फ़ायदा होता है।

ड्राइङ्ग का सामान दो टेबुलो पर सजाया गया है बहुत सामान रखने की तो यहां जगह नहीं थी लेकिन जो रक्खे गये हैं उनसे देशी स्कूलों की कार्रवाई का पूरा पता लगता है—यह दिखाया गया है कि ड्राइङ्ग कापी का सिर्फ़ क़ायदा नही है-किन्तु बुरुश का काम रेखा सम्बन्धी काम और नये नये नमूनों का काम सब जगह पढ़ाया जाता है-हिन्दुस्तानी स्कूलों का इन सब चीजों का काम रक्खा गया है जो विलायत के दो नामी स्कूलों का उच्च शिक्षा के नियमों को भली भांति दर्शाता है।

भूगोल और इतिहास के दृश्य भी स्थानाभाव से नही ग्रहण किये गये—देशी स्कूलों के उठे हुये नकशे रक्खे गये हैं जिसको वहां के अध्यापकों ने पढ़ाने के वास्ते तैय्यार किये थे और जिनको लड़कों ने तैय्यार किया है यहां रक्खे गये हैं—यहां के स्कूलो में इतिहास को पढ़ाई का ढङ्ग बहुत ख़राब है-नोट बुक और नकशों के देखने से अध्यापकों को मालूम होगा कि यह कैसे उत्तमता से पढ़ाई जा सकती हैं एक बड़ा नक़शा यहां के ट्रेनिङ्ग कालेज का जोकि महराब पर रक्खा है देखने लायक है—पश्चिम के बराम्दे में की दैहिक और वृत्त सम्बन्धी विषयों का दृश्य रक्खा गया है—इस बराम्दे के सामानो के तरफ अध्यापकों का ध्यान आकर्षित किया जाता है जिससे कि यह मालूम होगा कि देशी सामानों से रसायनागार कैसा अच्छा बन सकता है।

विश्व विद्यालय शिक्षा

यह कमरा मध्य भवन के दहिनी ओर है—सब से मनोहर दृश्य प्रयाग के विश्व विद्यालय का बनने वाला भवन का नक़शा है-यहां पर खास तरह से ला कालेज पुस्तकालय और इसके बनाने के ख़र्च

का वर्णन है–यह भवन चंदे से बन रहा है और गवर्नमेन्ट ने भी सहायता दी है और इसका नकशा सर स्विन्टन जेकब ने बनाया है।

इसके शिक्षा विभाग के दृश्य का संग्रह तो कठिन है किन्तु यहां के नक़शे तसवीर और यन्त्रो के देखने से उसका हाल कूता जा सकता है।

म्योर सेन्ट्रल कालेज के रसायन गृह के औजार और बनचर भवन के तैय्यार किये हुये सामान का सग्रह भी दर्शनीय है।

आगरा कालेज के फोटो सामान के विभाग मे बाबर का जीवन चरित्र भगवद्‌गीता की प्रति और पृथ्वी राज राजा की लिखी पुस्तक भी रक्खी गई है।

लीडस के विश्व विद्यालय का जहां हिन्दुस्तानी छात्रगण बहुत जाते हैं जोकि सपूर्ण रीति से शोभित है–दवाई–दात सम्बन्धी–कृषी विभाग रंगने और चमडे इत्यादि का सग्रह अलावा वैज्ञानिक और कानूनी सभाओ की वस्तुओ के यहा का सग्रह भी रक्खा गया है।

आक्सफर्ड केमब्रिज और लन्दन के विश्व विद्यालय के कर्त्तव्य के वर्णन का दृश्य रक्खा गया है मेनचेस्टर के विश्व विद्यालय में तैय्यार हुये शिल्पीय वस्तुओ का सग्रह रक्खा गया है।

पूसा के सरकारी विद्यालय भवन का समाज भी देखने योग्य है–कीडो के जीवन का वर्णन पूर्ण रीति से दर्शाया गया है।

व्यवसाय शिक्षा विभाग का दृश्य सब लड़कों ने तैय्यार किया है और यह विश्व विद्यालय के सामने वाले कमरे में है।

सिकन्दरा के व्यवसाय के पाठशाले का कम्बल और चटाई इत्यादि।

सहारनपूर के स्कूल का लकड़ी मे खुदा हुआ तरह २ का काम और चैाखटे पच्चीकारी के सन्दूक काला तख़्ता कुरसी डेस्क जूते और जूतियो का दृश्य।

विलायत के स्टैनलो स्कूल का लकड़ी और धातु के सामान का दृश्य जोकि तसवीर ड्राइङ्ग रेखा गणित और कारीगरी के औजार इत्यादि बनाने के काम मे आते है।

विलायत की शिक्षा सम्बन्धी सभा का भेजा हुआ धातु और लकड़ी का सामान जूता, सिलाई, कापिया ड्राइङ्ग-वगैरह बनाने का सामान रक्खा गया है।

पूर्वीय शिक्षा का भवन विश्व विद्यालय के भवन के बरान्दे में है-इसमें हाथ की लिखी हुई पुस्तके तसवीरें और सस्कृत अरबी पढ़ाने का ढङ्ग जैसा कि अब तक सस्कृत कालेज में है दिखलाया गया है-कुरान के मक़तब बर्मा और लका के कुटियो का एक बड़ा शिक्षाप्रद दृश्य है-सस्कृत अरबी के ग्रन्थ भी रक्खे गये हैं--अकबर बादशाह के दरबार के अबुल फ़ज़ल और फ़ौजी कवि की संस्कृत किताबों से फ़ारसी का तरजुमा जो किया था वही रक्खा गया है-यहां पर एक मनोहर दृश्य का इतिहास भी है।

कारीगरी के शिक्षा विभाग का दृश्य इस कमरे के आख़ीर मे है--यहा पर बम्बई और लाहौर के स्कूलो का दृश्य है--इस प्रदर्शिनी के कारण से इन दोनो कारख़ानो से ख़ास २ काम बन करके यहां आये हैं--यहा के संग्रह की सजावट वहा के लड़कों ही ने किया है--इन दृश्यो में मट्टी ताम्बे पीतल और चान्दी ऊनी कम्बल और दूसरी २ कारीगरी का सामान भी रक्खा गया है--बम्बई के संग्रह मे से एक बड़ा ख़ूबसूरत लोहे का फाटक जिस मे पीतल का काम किया गया है दिखाया जायगा--धातु के काम की कारीगरी का यह अच्छा नमूना है और यह मालूम पड़ता है कि इन लोगों को सिखाने से बहुत अच्छा काम तैय्यार हो सकता है।

जो लोग वैज्ञानिक और व्यवसायिक पदार्थों का प्रचार कारीगरी में चाहते हैं उन को मट्टी के बरतन के देखने से बड़ी शिक्षा मिलेगी--इस के बनावट और रङ्ग की खूबी रोगन और तैय्यारी का अनूठा-पन देखने से कुम्हारों की आखे खुल जांयगी और हिन्दुस्तानी महा-जनों को मालूम होगा कि वैज्ञानिक मिलाव से कितना अच्छा काम बन सकता है--मट्टी के बरतन की तय्यारी में बम्बई का स्कूल अगुआ है और मट्टी के बरतनों के पुनः प्रचार का यह पहला अवसर है जिस के सफलता से यहा के धन और कारीगरी की वृद्धि होगी सब नमूने यहां के नये तरह और कारीगरी के है इस के बनावट की चाल कई तरह के मिलाव की है हिन्दुस्तानी हुनर की घृणा नही है किन्तु

पुराने नमूनों में अदल बदल करके फज़ूल काम में लाने का यत्न नहीं किया जाता है--यहां हिन्दुस्तानी कारीगरी का काम अलग बनाया जाता है किन्तु जहां अच्छा विलायती नमूना मिल सकता है वहां वैसे ही बनाया जाता है—बम्बई के संग्रह में इस से अलग चाल का चांदी के काम का जिस का मुसलमानी ढङ्ग है बनी हुई तिपाई इत्यादि का समूह है जिस की कारीगरी अजन्ता के मन्दिरों की नक़ल का नमूना है--इसी कारीगरी के भाग में मेनचेस्टर के स्कूल का बना हुआ बहुत सा काम दीवाल पर टंगा हुआ है।

व्यवसाय और कृषी के विद्यालयों का दृश्य पश्चिम के अख़ीर के कमरे में है रीड क्रिश्चियन कालेज का सामान बहुत जगहों में है जहां की बहुत उन्नति की हुई व्यवसाय की कारीगरी दिखलाई गई है—आगरा के सैन्टजौन्स कालेज का टाईप और शार्टहैन्ड का सामान रक्खा गया है--बम्बई के वैरमजी जो जी भाई के पुस्तकों के समूह से व्यवसाय की उच्च शिक्षा का इतिहास मालूम होता है—कृषी विभाग का खण्ड बड़ा तो नहीं है लेकिन बहुत मनोहर है—कानपूर के एग्रिकलचरल कालेज से तसवीर और काम बनाने की तरकीबों का नमूना आया है इस विभाग में विलायत के कई मशहूर कृषी विद्यालय का सामान भी आया है।

सुधार और दोषी लड़कों के स्कूल का काम

अख़ीर कमरे के पूरब के बरान्दे में है।

चुनार के सुधार के स्कूल का गुलदस्ता फूलदान बराकेट बेत की कुरसी शिकारी जूते और वहां के पत्थर के कारख़ाने का काम।

जबलपूर के सुधार के स्कूल का ख़ेमे की कुरसियां टेबिल हथौड़ी और रुखानी वग़ैरह।

हजारीबाग़ के सुधार के स्कूल की कुरसी, खेल सन्दूक़ तशतरी तिपाई दैारी जूते और जूतिया चटाई झाड़न जिल्दबन्दी का काम लिखने पढ़ने--औज़ार चाकू और पीतल के सामान यहां दिखलाने के वास्ते मगाये गये है।

राजपुर का अन्धे इसाइओं के व्यवसाय के स्कूल को तैय्यार की हुई किताब सिली हुई चीजें नेवाड़ मूंज की चटाई और अन्धों के सिखलाने का औजार रक्खा गया है—इस के अलावा कलकत्ते के गूंगे और बहरों के स्कूल का सामान और लन्दन कौन्सिल के कारवाई का काम जो अन्धों के पढ़ाने में किया जाता है दर्साया गया है।

शिक्षा खण्ड के लगाव का भाग

सब से मनोहर देखने को चीज़ भवन के बाहर रक्खी गई है वहां पर एक व्यवसाय का पाठशाला बनाया गया है जिस में लखनऊ के व्यवसाय के पाठशाले के लड़के काम करते हैं—कुछ लड़के उस मे से लकड़ी को चौकी और ढाचे का काम बनाते है—बरामदे में एक भट्टा और खरादी बनी है जहा लड़के धातु के काम बनाते हैं और लड़के यन्त्र मे काम करते है और यहा का बना तैयार माल दीवाल पर टागा गया है।

व्यवसाय संबधी किताब यन्त्र और लकड़ी के सामान—दूसरे कमरे के बांय तरफ़ के कमरे मे लकड़ी का सामान दिखलाया गया है—यहा अगरेज़ी हिन्दुस्तानी के कारखानो का माल दिखलाया गया है—जहां से हिन्दुस्तान के स्कूल और कालेजों के जरूरत का सामान भेजा जाता है—स्कूली किताबो और नक़शों का ऐसा पूर्ण संग्रह कभी हिन्दुस्तान में नही दिखलाया गया—इस मे शिक्षा विभाग की सभा की पसन्द की हुई सब पुस्तके इस मौक़े पर वैज्ञानिक यत्रों का भी बहुत शिक्षा प्रद दृश्य है—हिन्दुस्तान के सब विश्व विद्यालयो में वैज्ञानिक शिक्षा पढ़ाई जाती है और उच्च शिक्षा का प्रबध भी उन्नति के मार्ग पर है नीचे कारख़ाने और उन के चीजों की सूची दी जाती है।

लाग मैन ग्रीन कम्पनी—यह कारख़ाना अपने यहां की चीजो का और आर्नल्ड एन्ड सन और भूगोल सम्बन्धी वस्तु प्रकाशक फ़िलिप कम्पनी के भी कारख़ाने का सामान लाये हैं—इन का संग्रह सैकडों क़िस्म का है—इन के हर विभाग में अङ्गरेजी, इतिहास, भूगोल गणित वैज्ञानिक और ड्राइङ्ग, के काम की पुस्तक परकार और औज़ार रक्खे गये हैं।

मेकमिलन कम्पनी का भी सामान लाङ्ग मैन ग्रीन कम्पनी से मिलता हुआ है—यहां की असंख्य छपी हुई पुस्तकों का नमूना है और इसी कारख़ाने का स्कूली सामान भी दिखलाया गया है—आरनल्ड और जान्सन के कारख़ाने के बने हुये पृथ्वी के नकशे औजार तरह २ के परकार हैं और यह चीजें मेकमिलन के कारख़ाने के साथ आई हैं।

मेकमिलन कम्पनी के बने हुये उभड़े काम का हिन्दुस्तान का नक़शा भी देखने लायक है।

इलाहाबाद के इन्डियन प्रेस ने छपी हुई स्कूली और इनाम देने लायक किताबों और नक़शो का संग्रह रक्खा है।

किताब और नकशे इन कारख़ानों के भी हैं डेन्ट एन्ड सन्स ब्लैकी एन्ड सन्स आक्सफर्ड प्रेस ह्वीलर कम्पनी और जार्जनेल एन्ड सन्स के यहां के।

लीड्स के रेनल्ड एन्ड बेन्सन के वैज्ञानिक यन्त्रों का नमूना भी दिखलाया गया है-उन्हों ने विलायत में कई कारख़ाने ऐसी चीजों के बनाये हैं-रेलन्ड और ब्रेन्सन के दफ़्तर में उन की बनाई हुई चीज़ों की फेहरिस्त भी मिल सकती हैं।

रेमिंगटन टाइप राइटर कम्पनी का सग्रह भी कोने के तरफ़ है यहा पर इस कारख़ाने के बने हुये अङ्गरेजी और भाषाओं के छापने की मशीन और उन के अलग पुरजों का नमूना दिखाया गया है-इस मशीन का जब से यह चली है और आज तक का नमूना दिखलाया गया है।

अम्बाला के हरगुलाल एण्ड सन्स के कारख़ाने का वैज्ञानिक यन्त्रो का सामान स्कूल के लिये लकड़ी इत्यादि का काम और किताबो का सग्रह भी दिखलाया गया है।

कानपूर के मिशन वर्क शाप का स्कूल के लिये डेकस काला बोर्ड बेंच और सामानों का नमूना भी दिखलाया गया है।

लाहौर के सायन्टिफिक एन्ड टेकनिकल मैनुफ़कचरिङ्ग कम्पनी का वैज्ञानिक और स्कूली सग्रह रक्खा गया है।

एक जरमनी के कारख़ाने का निब और क़लम के नमूनों का चौखटा भी है।

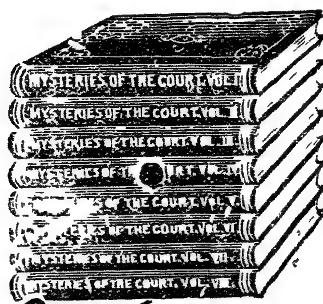
मैक्स खोल कम्पनी का रसायनिक पदार्थों के काम के लिये सामान का सग्रह रक्खा गया है।

लखनऊ नवल किशोर प्रेस के किताब नक़शे और चीजो का दृश्य भी है।

लखनऊ के रोशनलाल प्रेस के अङ्गरेजी अखाड़े का सामान जैसे पैदल सवार डमबेल इत्यादि और लकड़ी के सामान कृषी के मतलब की चीज़ भूगोल के नक़शे तख़्तिया और परकार इत्यादि दिखलाये गये है॥

मिस्ट्रीज़ आफ़ दि कोर्ट आफ़ लण्डन

जो, रेनल्ड'स मास्टर पीसेज रेनल्ड साहब की सबसे उमदा किताब। केवल थोड़ी सी और बची हैं।



पूरा मूल्य ४०) रु०

हम लोग उसी को १०) रु० में देते हैं। डाक महसूल १॥) रु० अलग है। कपडे की जिल्द है और चांदी के अक्षर किनारों पर लिखे हुए हैं। हम इस बात की गारंटी (जिम्मेदारी) करते हैं कि इस में पूरा हाल है एक सतर भी नहीं छूटी है।

इस बार के केवल कई सौ सेट बचे हुए हैं, हम लोग सर्व साधारण को उसे १०) रु० में डाक महसूल छोड़ कर देते हैं, जोकि केवल काग़ज और बंधाई (जिल्द) का दाम है।

किताब रायल आठ पेजी साइज और बडे बडे अक्षरों में छपी हुई है, और पहिले वाले पुस्तक से प्रायः १००५ पन्ने अधिक हैं, परन्तु पहिले वाले पुस्तक की अपेक्षा मूल्य चौथाई रक्खा गया है। इनको हम लोगों ने किनारे पर चांदी देकर आठ जिल्दों मे आसानी के लिये बंधवाया है, हर एक जिल्द में पहिले की दो जिल्द है।

हम लोग इस किताब की आठों जिल्दें केवल एक पोस्टकार्ड पाने पर वी० पी० बुक पोस्ट से भेज देते हैं। किताबें हर एक भागों की १॥) रु० महीने की किश्त के हिसाब से आठ क़िस्तों में भी मिल सकती है। कृपा कर के पुस्तकों के निमित्त लिखिये। कृपा कर के आर्डर देने के समय अपना नाम पता और अख़बार का नाम साफ़ २ लिखियेगा।

पताः—मोडर्न पबलिशिंग कम्पनी
आई, एम, हेयर स्ट्रीट कलकत्ता।

H

तरमीम किया हुआ

—— :o: ——

डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर संयुक्त देश

आगरा व अवध

———

मुफ़स्सल हाल के लिये साहब सुपरिन्टेन्डेन्ट गवर्नमेन्ट प्रेस संयुक्त देश इलाहाबाद के पास दरख़्वास्त आनो चाहिये

भाग नवां

औरतों की कारीगरी का विभाग

अलावा उन खेल कूद तमाशे और धर्मार्थ के कामों में जिनको यहां की स्त्रियां अपने फुरसत में करती हैं उन्नति करने का स्थान है इससे भले घर की स्त्रियां अपनी रोटी कमा सकती हैं और दूसरों को भी सहायता कर सक्ती है—इसमें उन्नति करने से वे अपने बहनों को काम का नमूना बताने और शोधन करने में मदद दे सकेंगी और इस व्यापार का रूप बढ़ा कर अपने को अच्छा बारीकी काम बनाने में तत्पर कर सकती हैं।

इस अभिप्राय से यहां का काम स्त्रियों हीं के सुपुर्द किया गया है और उन्होंने आज तक के कारीगरी—के नमूने का काम बहुत होशियारी से यहां पर इकट्ठा किया है—इसको देखने ही से आशा होती है कि यह काम तरक्की कर सकैगा सिर्फ मार्ग दिखाने वालों की जरूरत है—अगर इस विराट संग्रह से अपनी अपनी मेहनत से इस हुनर में तरक्की की जाय तो शायद इस प्रदर्शिनी का एक अभिप्राय सिद्धही है—इस जगह पर परदे का पूरा इन्तज़ाम है और भले घर की स्त्रियां हीं सब चीज दिखलावेंगी और यहां के दफ्तर में इत्तला करने से वहा का पूरा पर्दा का इन्तजाम हो सकता है खेल तमाशे आतशबाजी और हवाई जहाज का उड़ना यहीं से सब जगहों से अच्छा दिखलाई पड़ सकता है—और बगैर कोई विघ्न के यहां की घिरी हुई छत से सब चीजों को यहां से देख सकती हैं और शिक्षा ग्रहण कर सकती हैं इन स्त्री सभासदों के नामही से यह ज्ञात हो जायगा कि यहां का इन्तजाम कितना पूर्ण रीति से भया है यहा पर भोजन का आराम और प्रदर्शिनी सम्बन्धी विषयों पर बात चीत करने का भी बनाया गया है--इसका सारा इन्तजाम लेडी पोरटर (पोरटर साहब की मेम) का है और इसकी संरक्षक लेडी हिवेट लेडी मिन्टो और भावनगर की महारानी साहिबा हैं--वेलकम क्लब के उत्तर पूरब के तरफ इसका स्थान है जोकि लेसली पोरटर साहब के मेम के तजवीज का है--इस के उत्तर तरफ़ परदा वाली स्त्रियों का सभा गृह है जहा विलायती

और देशी स्त्रियां मिलकर बात चीत कर सकती हैं—इस कमरे से छत की सीढ़ियां हैं जहां से वेलकम क्लब और जमना नदी अच्छी तरह से दिखलाई पडती हैं—और पूरब के तरफ किले का मैदान और प्रदर्शिनी है—प्रदर्शिनी भर में सिर्फ इसी जगह के लिये सीढ़ियां हैं जिससे और जगह से यह नहीं दिखाई पड़ सकता है—छत पर भी चारों तरफ चिक पड़ी रहैगी जहां कि स्त्रियां घूम फिर सकती हैं—पूर्वी गलीचों का संग्रह टेलरी कम्पनी ने किया है और तसवीरें एक स्त्री की दी हुई है और एक सज्जन ने कृपा कर के बुलन्दशहर के मट्टी के बरतन दिये हैं–बाराबंकी के परदों पर चिकन का काम है और बरमा की स्त्रियों की बनाई हुई चिक पर एक अच्छा काम किया है–और कमरा गरम करने का यन्त्र और रोशनी का सामान भी किया गया है—विलायती मेमों के लिये भी हिन्दुस्तानी औरतों के जीवन के देखने का अच्छा मौका रहैगा–यहां इन जातियों की भले घर की स्त्रियां जा सकेंगीं और इनका नम्बर ३०० से अधिक हो गया है–इन सभासदों को फूल दिया गया है और प्रदर्शिनी के समय में उसको पहने रहैंगीं–खास २ दिन में यह बिलकुल स्त्रियों ही के लिये रहैगा—किले के तरफ से यहां आने का सिर्फ स्त्रियों के लिये एक फाटक रहैगा——इस प्रदर्शिनी में सब जगह के पहनाव के दिखाने के अभिप्राय से गुड़ियां बनाई गई हैं और खेरी के झडियन पुरवा के ताल्लुक़ेदार राय रघुवीरसिंह का भेजा हुआ रामदल का दृश्य भी रहैगा— यहां पर लखनऊ की परदा नशीन औरतो का चिकन का काम रुमाल, कालर, कफ़, अंगिया और गिलाफ पर किया हुआ दिखलाया जायगा—यहां पर परदानशीन की बनाई हुई गुड़ियां रंगीन तसवीर रेशम और साटन का काम काढ़ी हुई तसवीरें जरी के काम की साड़ी और डुपट्टे—जाली का काम किरोसिया बेल सुनहले रुपहले किनारी का काम इत्यादि भी रहैगा भावनगर की राजकन्या श्री मन्हार कुवरिवा का भेजा हुआ बेल और कामदानी का काम और सितार पर बजने वाली चूड़ियों का दृश्य भी रोचक होगा आईरिस और बिनीशियन बेलों का नमूना भी रहैगा और हिन्दू मुसलमानों के जीवन का चरित्र गुड़ियों द्वारा दिखलाया जायगा—यहां के विदेशी विभाग में बरमा और जापान के दृश्य रहैंगे यहां के कमरों की चिक सब बरमा की बनी हुई हैं—यहां महाराज बनारस की भेजी हुई हाथी दांत की कारीगरी-का काम देखने लायक है।

पोरटर साहब के मेम का दिया हुआ एक कोरिक मेकास जो ब्याह में दुल्हन के मुह पर डाला जाता है और ख़िताब पाई हुई औरतों के कार चोबी के काम और सोने के काम के गहने भी रहेंगे-गवर्नमेन्ट कन्या पाठशाला के अतिरिक्त मिशन के कन्याओं के बनाये हुये डुपट्टा-बेल का काम बटुआ और खींचे हुये सूतों का काम और पोत की थैलियां इत्यादि भी रहैंगे—मिर्जापुर और दक्षिण के मिशन की कन्याओं का बनाया तरह २ के बेलों का काम दिखलाया गया है-रोगन हाथी दांत और चादी का काम भी रहेगा-यहां अंग्रेजी पारसी-मुसलमानी, हिन्दू और बंगालिन स्त्रियो ने चीजें भेजी हैं-सोने चांदी और कांसे के तमग़े इनाम में दिये जांयगे।

बलिया के बाबू ज़मनाप्रसाद की कन्या का भेजा हुआ बेलबूटों का काम भी देखने लायक़ है।

इटावा का रेशम और मखमल पर किया हुआ सलमा सितारे का काम भी देखने योग्य है-यहा की भेजी हुई गुड़िया भी बहुत अच्छी बनी हैं-मुजफ्फर नगर के काच के परदे भी देखने के योग्य है-यह हर नाप के और थोड़े दाम में तैय्यार किये जाते हैं-बाक़ी इसका पूरा हाल अवैतनिक सेक्रेटरी जमीन्दार अशोशियेशन-मुजफ़रनगर से मिल सकता है।

सुलतांपुर के कन्या अनाथालय का काढ़ने का काम भी है-इस में नीले सूत का काम देखने लायक है और लड़को के पहिन्ने के और तशतरी के कपडे और कालर इत्यादि भी बनाये गये है-मिस सिमसन का भेजा हुआ छल्लेदार काम जो इस तरफ़ के लिये बिल्कुल नया है दिखलाया गया है-गांव के ठकुरानियों का मुज का काम भी बहुत अच्छा है।

हिन्दुस्तानी शरीफ़ आदमियों के लिये

हम लोगों के

ख़ालिस तेल

और सोने का तमगा हासिल किये हुए

ट्वायेलेट सोप (साबुन) की जिन की हरेक

बकसों मे ३ वट्टियां रहती हैं,

परीक्षा कीजिये।

इस में किसी जानवर की चरवी न होने की हम

लोग गारण्टी (जिम्मेदारी) करते हैं।

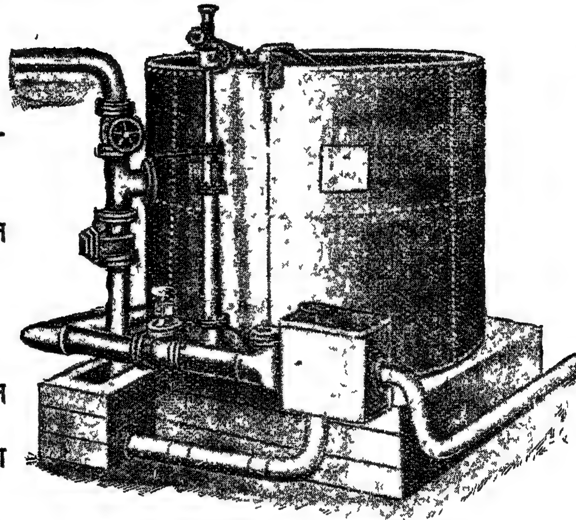
यह नार्थ वेस्ट सोप कम्पनी लिमिटेड

कलकत्ता और मेरठ के कारख़ाने में बनता है

हम लोगों की दूकान जनरल इण्डस्ट्रीज कोर्ट नं०......में है।

अगर आप लोग हमारी दूकान मे आवेंगे, तो

दूसरों की अपेक्षा सस्ती और अच्छी चीज पावेंगे।



भाग दसवां

चिकित्सा और औषधियो का हाल

थोड़े दिनों से चिकित्सा शास्त्र और स्वास्थ सम्बधी विषयों में बड़ी उन्नति हुई है और युरूप के जीवन यात्रा और रोगो को रोकने के लिये और ससारिक सुख के भोगने के हेतु और शारीरिक शक्ति बढ़ाने का उद्योग हो रहा है और उसमें सफलता भी हुई है-इन बातो का बिचार भारत वर्ष मे पहिले बहुत था किन्तु थोडे ही दिनो से उसके पुनरुद्धार के लिये यत्न हो रहा है-इस खण्ड मे इन विपयो के काम की चीजो के सामान रक्खे गये हैं और सरकार भी इनके कारखाने से सहानुभूति रखती है और सहायता देती है।

कभी २ प्रदर्शिनी के नाटक गृह मे चिकित्सा और शास्त्र विद्या (जर्राही) सम्बधी सर्वसाधारण के उपयोगी चित्र दिखलाये जायगे।

यहा चित्ताकर्षक तौर पर उपयोगी वस्तुओ का दृश्य सिर्फ सर्वसाधारण के काम का ही नहीं बल्कि डाक्टरो के मतलब का भी होगा इसका ६ विभाग किया गया है।

प्राकृतिक नियमानुसार हम लोगों के शरीर के भीतर का यंत्र ढका हुआ रहता है और वही पुरुप सुखी है जिसको उसके अलग अलग हिस्सों का हाल नही मालूम।

थोड़े दिनो से वैज्ञानिक प्रभाव के उन्नति के कारण वैज्ञानिकों ने रेडियम और दूसरे दीप्तमान वस्तुओ से किरण निकाला जो चिकित्सा और दूसरे काम मे आती है इन किरणो का नाम एक्सरेज है और इस विभाग में इन का प्रभाव और दृश्य दिखलाया जायगा-इन किरणों से जिनको हम अपनी आखो से नही देख सकते लगते ही हमारे शरीर के ढके हुये हिस्से दिखाने लगते है—और उनके चित्रो द्वारा हमारी हड्डियों और अतड़ियो की बनावट मालूम हो जाती है। एक्सरेज़ का प्रकाश १८९५ ई० में हुआ है और तब से यह एक चिकित्सा में अमूल्य साधन की वस्तु समझी जाती है-हड्डी के टूटने उखड़ जाने और और गोली धस जाने या अन्य वस्तु के रोग के पहिचान

का इस किरण के द्वारा और उसके स्थान का पता भली भांति लग सकता है-या इसी के संबंधी और विषयों का पता लग जाता है-और इस किरण के द्वारा हड्डियों के जोड़ उखड़ जाने की भी बात का अच्छी तरह पता लग जाता है।

इस किरण के द्वारा बहुत से रोगों की चिकित्सा होती है जिस का पूरा हाल दुनियां के खबरों से पढ़ने से मालूम हो जाता है और यह आशा की जाती है कि भविष्य में इस की बड़ी उन्नति हुई है।

देहरादून के एक्सरेज़ के कारवाई का हाल वहां सेना विभाग के अफ़सरों के भेजे हुये पदार्थों से पता लग जायगा—लड़ाई और सफ़र के लायक़ सिर्फ़ एक ही क़िस्म का यन्त्र बना है जिसका दृश्य यहां रक्खा गया है-यूरुप के सब शक्तियों के पास अच्छे सड़क पर सफ़र के लायक़ इसका सामान है—किन्तु सीमा प्रान्त के लायक़ में जहां ऐसी चीज़ों की बड़ी ज़रूरत रहती है रास्ता बहुत ख़राब है और पहाड़ों पर खच्चर सब सामान ले जाते हैं--एक इसी किरण का यन्त्र दिखलाया गया है जो ख़राब से ख़राब सड़कों पर निर्भयता से जा सकता है और एक मरतबा तो यही यंत्र देहरादून से शिमला छोर पास (रास्ते) के द्वारा भेजा गया था।

इस किरण के तैय्यार करने में बहुत खिचाव की ज़रूरत पड़ती है और इस किरण के लिये बिजली शक्ति की ज़रूरत पड़ती है-बिजली के प्रभा की ज्योति से चाहे लगातार की हो या अदल बदल की हो अच्छे यन्त्र से बड़े आसानी से किरण बन सकती है—देहरादून में इसके इकट्ठा करने का एक यंत्र तैय्यार हो रहा है जोकि विलायती यन्त्रों से अच्छा और उपयोगी है-जिन जगहों पर बिजुली इकट्ठा की जाती है वहां पर भी इन यंत्रों द्वारा सुगमता से बन सकती है-अगर ऐसी जगह के अलावा बनाना हो तो एक तेल के इनजिन की दरकार होगी जिससे यह डाइनेमो को चला कर शक्ति इकट्ठा करैगा।

एक्सरेज़ का ट्युब बनाने के लिये बहुत खिचाव की दरकार होती है।

इस प्रकार के कई यंत्र तैय्यार किये गये हैं जिस के कारवाई से रोगी और चिकित्सक दोनों कोम पर रहता है और इसमें संदेह नहीं

कि इस को ठीक काररवाई न करने या किसी तरह की बे फिकरी से बहुत नुक़सान होता है और नासूर हो जाने का भय भी रहता है।

और इसके अनुसंधान करने में बहुतों की जान गई और बहुतों के नासूर भी हो गया क्योंकि पहले के लोगों ने इसके तेजो का अनुभव नहीं किया था और इसके सामने घण्टों तक काम करते रहे—लेकिन अनुभव प्राप्त होने के कारण इसके बचाव के लिये (जिसका नमूना यहां दिखाया गया है) यंत्र बन गये हैं और वास्तव में अब कोई इस तरह का भय नहीं है—और इसका सबूत यह भी है कि देहरादून के भवन में जहां ६ बजे से इस किरण द्वारा लोगों की जांच होती रही कोई ऐसी घटना नहीं हुई।

मलेरिया (ख़राब हवा और फ़सली बुखार) के बीमारी की खास बातें भी दिखाई गई हैं

(१) बहुत से हिन्दुस्तानी अवस्थाओं से लिये हुये।

(२) बहुत से नकशे कि जिन में दिखलाया गया है कि किस तरह बीमारी का जहर मच्छड़ों द्वारा एक आदमी से दूसरे तक फैल जाता है।

(३) बहुत तरह के मच्छड़ और उन के जांच करने के शीशे के यत्र जिस से यह मालूम होगा कि यह फ़सली बुखार इन मच्छड़ों के फैलाये हुये विष से पैदा होता है दिखलाया गया है।

इस वैज्ञानिक उन्नति के समय में यह मालूम होता जाता है कि किस तरह गरम मुल्कों में इन काटने वाले कीड़ों से बीमारी फैलती है और यहा पर देखने से हर एक को मालूम हो जायगा कि इन कीड़ो से किस तरह भारी नजले मामूली खांसी ज़ुकाम छोटी और बड़ी चेचक की बीमारी इत्यादि इन्हीं कीड़ो द्वारा फैलती है।

चिकित्सा के विज्ञान से यह साबित कर दिया गया है कि मलेरिया (फसली बुखार) की बीमारी (जिस का हाल यहां पर साबित कर के दिखाया गया है) इन्हीं मच्छड़ों द्वारा फैलती है और प्लेग चूहों से फैलाया जाता है—और चारपाई के खटमलों के काटने से दूसरी और बीमारी भी फैलती हैं।

इन सब मामलों में बीमारी के कीडे इन जानवरों पर बैठ जाते हैं और यह जान पर आदमियों को काट कर अपना ज़हर भीतर पहुचा देते हैं रोज के मामूली मक्खियों के द्वारा भी विष फैलता है क्योंकि ये सब बहुत गन्दगी पसन्द करती है--यह काटने के अलावा भोजन के पदार्थों पर जो बाजार मे विकते है या घर में बनते हैं या कसाई के यहां या फल या मिठाई वाले के दूकान की चीज़ों पर बैठ कर जहर फैला देती हैं और उस को बाद में मनुष्य लोग खाते हैं और रोग से ग्रसित हो जाते है--इन मक्खियों के जहर से हैजा टायफाइड का बुखार और पेचिश की बीमारी फैलती है।

प्लेग की बीमारी के खून का पतला यानी जिस से यह फैलती है और इस के महीन २ हिस्से जिस से बीमारी फैलती है और जिस का अन्तिम परिणाम यह होता है कि यह कीडे चूहों में घुस जाते हैं और फिर इन से उड़ कर के यह प्लेग मलेरिया हैजा क्षयी इत्यादि के रोग फैलाते हैं।

इस विभाग में यह भी दिखाया जायगा कि एक चूहे से दूसरे चूहों पर कीडे कैसे पहुंच जाते हैं और इन चूहों में बीमारी फैलती है और फिर जब चूहे मर जाते हैं तो यह कीडे आदमियों में बीमारी फैलाते हैं—यहां पर चूहों और कीड़ो के पकड़ने के यंत्र भी दिखाये जांयगे जिस को बे पढे लोग भी अच्छी तरह समझ जांयगे—प्लेग से बचने का उपाय घर को बहुत दिन के लिये छोड़ देना ही मामूली है जिस से यह कीड़े चूहों पर से हट कर के भाग जाते हैं।

जब यह कीडे युक्त स्थानों में चढ़ जाते हैं तो बहुत जल्दी से बढ़ जाते हैं और बिना यत्र के करोडों दिखाई पड़ते है।

सांप भी दिखाये जांयगे और जहरीले और गैर जहरीलों के पहचानने की तरक़ीब भी दिखलाई जांयगी और वाल साहब के तरीक़े के माफिक चित्र खींच कर दिखाया जायगा।

एक विभाग में एक विद्यार्थी का जीव जन्तु विषयक पदार्थों का दृश्य दिखाया गया है जिस में छोटे से छोटे जानवर से आदमियों तक के शरीर के भागों का विचित्र बनावट हाल दरियाफ़्त होता है।

पागल कुत्ते के काटने के चिकित्सा विषय में पासच्योर साहब के भवन का दृश्य दिखलाया जायगा जिस में पागल या अच्छे कुत्तों

के जांच करने के तरीके की तरकीब बतलाई गई है—वहा चिरस्मरणीय पासच्योर साहव की एक बड़ी तसवीर भी लगी है।

क्षयी रोग के सबंध का दृश्य रहेगा—इस बीमारी में शरीर के हिस्से और फेफडे कमजोर हो जाते हैं—यह बीमारी यहा के लोगों को बहुत होती है और विलायत में इस के रोकने का बडा प्रबंध किया गया है—यह बीमारी रोकी जा सकती है और इस के फैलने रोकने और चिकित्सा के प्रबंध का पूरे हाल का यहा पर पता लगा सकता है।

इन सब रोगों के रोकने और चिकित्सा सम्बन्धी विषयों पर हिन्दी उर्दू और अङ्गरेजी में छपी हुई किताबें मुफ्त बांटी जाती हैं और दर्शक लोग ले जाकर घर मे फुरसत मे पढ़ सकते हैं।

एक मनुष्य के पेट से निकाली हुई पथरी भी दिखलाई गई है किन्तु अब ऐसी पथरी दवाई से पेट ही में गला दी जाती है और निकालने की जरुरत नही पडती।

यहा पर यह भी दर्साया जावैगा कि अन्न काल के समय अन्न के बदले जगल की पैदावार की किन २ चीजो को खा कर लोग अपना निर्वाह कर सकते हैं।

देशी नेत्र वैद्यो और सथियों के इस्तेमाल का सामान और उनके कार्य की तसवीर जहा वे नेत्र के रोगियो को देखते हैं-इन्हीं अनपढ़े वैद्यो के काम से हजारों आदमी अंधे हो गये क्योंकि सौ में ९० आदमियों को मुतियाबिन्द अच्छा करने के सबब से अंधे बना डालते है।

बहुत कारखानों मे डाक्टरों के दवा के हुनर में और जर्राही (शस्त्र वैद्यक) मे तरक्की किये हुये पदार्थों का नमूना है।

खास कर जड़ पत्तियों और वृक्षो से दवाइयां निकाली जाती हैं किन्तु रसायनिक शास्त्र ने इस मामले मे बडी उन्नति किया है और बहुत दिनों के अनुभव से लोग बहुत तरह के चीजो की दवाई के काम में लाते है ससार भर में भारत वर्ष की जडी बूटी की चिकित्सा विख्यात है और उनके संग्रह का इन्तिजाम भी किया गया है।

एक कारख़ाना दूसरे कारख़ाने से बढ़ने की कोशिश करता है जिसमे इस बात की कोशश की जाती है वह इन चीजों की दवाइयो को स्वादिष्ट बनाना चाहिये—दूसरे कारख़ाने ग्राज तक के डाक्टरों के चीर फाड़ का सामान दिखलावेगे—इस जगह पर नये डाक्टरों की काररवाई जोकि खुद अपने हाथों को अपने औजारोँ को पट्टी को और जरीहो के कमरोँ को अपने टेबुल और दवाइयो को गर्द और मट्टी से बचाते हैं दिखलाई गई है जिससे आज कल के डाक्टरों और सिंघी लगाने वालों में फ़र्क़ मालूम होता है।

डाऊन ब्रादर्श के कारख़ाने का पूरा सामान एक छोटा सा असपताल बना कर के उसी में पूरा पूरा सजाया गया है।

कालिसवाड के अफसरों ने अपने अपने यहां के काम का चित्र दिखलाया है और अपने फौहारे का सामान भी भेजा है दे। गरम पानी के यन्त्र जोकि गठिया के चिकित्सा में काम में आते हैं इसी कारख़ाने से आये हैं–बाथ (एक विलायत में शहर है) के फ़ौहारे में स्थान का दृश्य तसवीरों द्वारा दिखलाया गया है मनुष्य के शरीर में आखही सब से जरूरी अंग है और जब संयोग से दूर की या पास की चीजे नहीं दिखलाई पड़तीं तब चशमे से काम लिया जाता है–और बहुत से रोगों से आंखही ख़राब हो जाती है–बाकी धुधले पन के कारण मोतियाबिन्द से आदमी अन्धा हो जाता है लारेन्स मेयो के कारख़ाने में चक्षु सम्बन्धी चीजों का बहुत अच्छा और ठीक २ सामान तैयार किया जाता है–यहां पर आंख के हर तरह के रोग को बतलाने के लिये १२० नक़ली आंखियाँ रक्खी गई हैं।

लखनऊ के मेडिकल कालेज भवन के नमूने के नक़शे और तसवीरें आई हैं सेन्टजान एम्बुलेन्स एसोसियेशन से जख़्मी आदमियों के मदद पहुंचाने के यन्त्रो का नमूना रक्खा गया है–दवाई के बनाने की तरकीब और यन्त्रो का नमूना इस जगह पर नहीं दिया जा सकता है नीचे दी हुई कुनैन बांटने का हाल सर्व साधारण को रोचक होगा।

अलीगढ़ के जेल की भेजी हुई कुनैन की टिकिया बनाने की कल है–इस मशीन को संयुक्त प्रान्त के जेलख़ानों के इन्सपेक्टर जनरल ने भेजा है–यह कल फ़िलेडलफ़िया के एफ़–जे–स्टोक्स मशीन कम्पनी की बनी है और इसका नाम क्यूरेका है— इस कल से एक मिनट में

१०० टिकिया बनती है और सब तरह की टिकिया बन सकती है इससे अलीगढ़ मे ३ ग्रेन के कुनैन की टिकिया बनती है जो नीचे लिखे हुये जरिये से मिल सकती है।

इन जगहों में हमेशा मिलती है

(१) डाक खानों में

(२) टीका लगाने वालों के यहां

(३) जिमींदार और उन के गुमाश्ते से

(४) स्कूल के अध्यापकों से

(५) पटवारी तहसीलदार और टिकट बेचने वालों से

(६) कोर्ट आफ़ वार्डस से

(७) नहर के जिलादार और तार बाबुओं से

(८) स्टेशन मास्टरों से—

इन स्थानों में कभी २ मिलती है

अनुभव के लिये इन लोगों को बेचने के लिये दी गई है

(१) गोरखपुर और बस्ती जिले के पुलिस के चौकीदारों को—

(२) मेरठ जिले के वैतनिक दूकानदारों के यहां कुनैन संयुक्त प्रान्त के स्थिर एजेन्सियों मे भेजी जाती है और राजपुताना और मध्य प्रान्त के डाकघरों में भी भेजी जाती है।

यह टिकिया छोटे २ लिफाफों में रक्खी जाती हैं और उस पर सेवन विधि हिन्दी में छपी हुई है हर लिफाफे में ३ ग्रेन की तीन टिकियां रहती हैं और एक पैसे को बिकती है—

एजन्सियों को इन दामों में दी जाती है—

(१) तीन रुपये में २१६ पैसे वाले लिफाफ़े

(२) चार रुपये में ७२ पैसे वाली टिकिया और २१६ पैसे वाले लिफ़ाफ़े—

(३) पांच रुपये मे १४४ पैसे वाली टिकिया और २१६ पैसे वाले लिफ़ाफ़े—

और पैसे वाले लिफाफे ज्यादा रख दिये जाते है जिस में बेचने वालो को =) आने रुपये का मुनाफा हो जाय।

९ ग्रेन कुनैन की पैसे वाली पुड़िया एजन्सियो से ३) ४) ५) दामों को मिल सकती हैं युक्त प्रान्त के सेनिटरी कमिश्नर ने निम्न लिखित चीज भेजी है।

यहा पर बछडे या चिड़ियो से निकाले हुये लिम्फ (पछा) का काम दिखलाया जायगा इसके छानने और साफ़ करने की तरकीब भी दिखलाई जायगी–हर तरह के पछों का नमूना और उनके पिचकारी मे भरने और गोदने का तरीक़ा भी दिखलाया जायगा—और नैनीताल के पटवा डांगा के सरकारी दूकान पर से सब जिलों में भेजने के काम का तरकीब दिखलाई गई है–मलेरिया के कीडो का मच्छड़ो और आदमियो पर जीवन का इतिहास दर्शाया गया है और जहा तक हो सका है इसके सब दृश्य दिखाये गये है।

मलेरिया के सब क़िस्मो के जिन्दा मच्छड और उनके चित्र दिखलाये गये हैं इसके बचाव के लिये मसहरी के इस्तेमाल के फ़ायदे बतलाये गये है।

कुनैन के बनाने की तरकीब बताई जायगी और यह बतलाया जायगा कि किन किन छालों मे से निकाली जाती है और कै तरह से यह दवा में दी जाती है—इन मच्छड़ो के खाने वाली बारबेडोज की मछलियो को यहां की सरकार ने मगवाया है और यह सब तलाब में देखने के लिये रक्खी गई है।

यन्त्र द्वारा पानी की सफाई जाचने की तरकीब भी दिखलाई जायगी इस काम के लिये हाल में बने हुये यत्र भी मगाये गये हैं।

स्वास्थ सम्बधी विलायत और हिन्दुस्तान के बने हुये यन्त्रो का नमूना मगाया गया है और इसके तरह २ के फायदे भी बतलाये जांयगे।

एक्सपेरिमेन्ट (अनुभव) भाग–यहां कई चीज़ो का एक्सपेरिमेन्ट हो रहा है मसलन मामूली मक्खियो और दीमक के नुक़सानों की जांच हो रही है और प्रदर्शिनी के समय पर दिखलाया जायगा।

लेकचर—इन समूहों के बारे मे यह विचार हो रहा है कि इसके जानने वालों से इस विषय पर व्याख्यान दिलाया जाय।

यहा के डाक्टर वामनदास बसु का भेजा हुआ जड़ी बूटी के दवाइयो का संग्रह है-यहां का जड़ी बूटी के विषय मे इस बात की बड़ी दिक्कत है कि उनका पहचानने वाला कोई नहीं है—और हर प्रकार से उनके पहचानने का यत्न किया गया है-इस ख्याल से सिर्फ़ बाजार में मिलने वाली बूटियों ही का नहीं किन्तु और दवाइयो के सूखे नमूने देहरादून और शिवपूर के सरकारी बगीचा से मगाकर रक्खे गये है-जडी बूटियो के पेड़ भी रक्खे गये है-इलाहाबाद और इसके आसपास से मिली हुई बूटिया जो ताजी काम मे आती हैं शराब मे रखकर दिखलाई गई है-यहां पर जड़ी और बूटियो के विषय की पुस्तकें भी रक्खी गई है और यहा के अफसर से पूछने से और हाल का पता लग सकता है।

बरोज बेलकमएण्ड कम्पनी के मशहूर कारख़ाने की तैय्यार की हुई दवाइयों का सग्रह है-ये कारख़ाना ऐसी दवाई बनाने के लिये बहुत मशहूर है।

स्मिथ स्टैनिस्टाई के दिखलाये हुये बरोज बेलकम कम्पनी के माल के अलावा फ़ौज के पानी साफ़ करने का यंत्र है-जिससे पानी की मट्टी और गन्दला पानी साफ़ हो जाता है।

खानिज विद्या के उत्सकों के लायक यहा एक यत्र रक्खा गया है जिसमे एक ही घन्टे में गलाने से खानिज पदार्थों मे मेल का हाल मालूम हो जाता है और उनका मेल भी कूता जा सकता है और यह यत्र हिन्दुस्तान के बहुत से खान विभाग के इञ्जिनियर और जिओलोजिकल सरवे डिपार्टमेंट मे काम आता है-यहा पर एक उम्दा मट्टी और धौंकनी इत्यादि का दृश्य भी है-हैल्थ अफ़सर के काम धोने का यत्र भी दिखलाया गया है-यहा पर कई तरह के बने हुये हाथ पाव और शरीर के अग रक्खे हैं जिससे मालूम होगा कि कैसे आराम से यह लगाया जा सकता है-यहा पर कोढ़ के रोग के लिये 'नास्तिन' नामक दवा से अच्छा करने के यत्र पर चिकित्सकों का ध्यान आकर्षित होगा और तरह २ के काम की पिचकारियां भी दिखलाई गई हैं।

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट कम्पनी ने जोकि कारटस कम्पनी के कारखाने की चीजे भी बेचते है करोफ़ेक्स नामक जख़मी और बीमार आदमियो के सहायता के मतलब का यत्र देखने के लिये भेजा है।

लन्डन के जेज सेनिटरी कम्पाउन्ड कम्पनी का सिलिन नामक सफ़ाई के सामान की चीजो का नमूना रक्खा गया है।

बम्बई के रिचर्डसन एण्ड क्रूडास के यहां के नहाने के तरह २ के फ़ुवारे दिखलाये गये हैं।

नम्बर १ में एक नहाने का कमरा बना है जिसमे सिटज बाथ वाटर क्लोसेट लैवेटरी बेसिन और स्प्रेनाथ की तरकीब दिखलाई गई है।

नम्बर २ वाले कमरे मे अस्पताल और मृतक परीक्षा के हर तरह का सामान दिखलाया गया है।

नम्बर ३ के कमरे में हिन्दुस्तानियो के ख़ास मतलब के स्वास्थ सम्बधी और स्नानादि विषयक वस्तुओ का संग्रह है–इस लिये दर्शको को इसको छोड़ना नहीं चाहिये।

फिर पियरसन एन्टिसेप्टिक कम्पनी की धोने की दवाइयां जो प्रदर्शिनी में भी काम में आती हैं और बहुत सी इनकी दवाइयां दिखलाई गई हैं–इस कारख़ाने की दवाई प्रदर्शिनी के कई साहबो में काम में आती है।

कलकत्ते के एस–एम–डे कम्पनी का सब चीजो के छापने की तरह २ के यंत्र दिखलाये गये है।

लुई जे विचफ के बनाये हुये नक़ली दात और उनके बनाने की तरकीब सोने से मढ़े हुये दातों के नमूने दिखलाये हैं और दांत के रोगों के चिकित्सा सम्बन्धी वस्तुओ का दृश्य–इन दातों के बनाने में वलकनाइट काम में आता है इस लिये कोई धर्म के नाशक वस्तु नही पड़ी हुई है इस लिये हर जाति के आदमी उसको काम में ला सकते हैं।

पान के दाग लगने से ख़राब हुये दांतों का नमूना भी है जिसके खाने से दांत देर में गिरते हैं और कीड़े नाश हो जाते हैं दांत के भीतरी कामों के दिखाने के लिये भी चीज़ै रक्खी गई हैं।

कानपुर के इम्पायर इनजिनियरिङ्ग कम्पनी के म्युनिसिपेल और स्वास्थ सम्बन्धी दृश्य आये हैं यहा के मैलागाड़ी का नमूना—रेल और हाथ की गाड़िया जिनमें कूड़ा फेका जाता है--कूड़ों को बैलगाड़ी और लोहे की रेल (धन्नियां) इत्यादि हैं।

गध के वचाव के ख्याल मे इस कारखाने को हवा से बंद की हुई गाड़ियों का सग्रह भी दिखलाया गया है—यह गाडी को रेल या बैल से भी चला सकते है—और विलकाक्स कम्पनी के तार के वने हुये मोजे जिसको पहिन कर रेल और म्युनिसिपेलिटी में काम होता है दिखलाया गया है।

यहा के बने हुये पहिये के धुरों को कसने का सामान दिखलाया गया है जिसके इस्तेमाल से गरमी के दिनों में पहिया नहीं सिकुडेगी और वहुत दिन तक चलैगी।

छत के पत्थर इत्यादि के वनाने वाले लेसली साहब का कारख़ाना रुड़की के एनेक्स से मिला हुआ है।

इनजिनियरिङ्ग खण्ड के सामने वाले फाटक से चलकर दर्शक गण मोटर गाड़ी अमेरिका के वग्घी वाईसिकिल और लिखने की कल का नमूना देखैंगे निम्न लिखित वस्तुओं का भी दृश्य है—लोहे के वक्स और ताले--लोहे की जाली का काम लटकाने और उतारने का सामान--खान के काम के औजार पुल्ली—मकान बनाने का सामान स्वास्थ विषयक पदार्थ—सड़क बनाने का सामान सोडावाटर बनाने की कल और सड़क नहर रेल और स्वास्थ सम्बन्धी सब तरह के मामान।

रङ्ग और वारनिशों का भी दृश्य है एक सीसे के वक्स में सजाये हुये मोटर के पीतल के ढाले भये औजार और चाकू कैंची का सामानों का नकशा है स्वदेशी चीजों के दिखाव का उत्तम स्थान दिया गया है। कैश बक्स और घुमावदार सीढ़ियां और खूवसूरत ढले भये काम और म्युनिसिपेलिटी पाखाने और सफाई और पानी की गाड़ियों का नमूना रक्खा गया है—इस भवन में मट्टी के तेल की नामी कान्टिनेन्ट लाईट जलती है—और पीक एलेन ल्वाङ्ग-कम्पनी के और कूड और लाहौर के इन्डियन पवलिक हेल्थ के कारख़ानों का सामान भी है।

हाईकोल

सब से अच्छी—सब से ज्यादा सस्ती और सब से ज्यादा तेज़

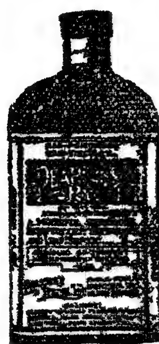
बदबू दूर करने वाली दवा

यह जहरदार—खराश पैदा करने वाली और गलाने वाली नहीं है

बदबू दूर करने की एक बहुत ताक़तवर चीज

ख़ालिस कारबोलिक
आसिड से
१८ या २०
गुना ज्यादा तेज

८ औन्स-१६ औन्स
बोतलों में
१ कार्ट और १-५-१० गेलन
टीन और पीपो में बिकता है
१ कार्ट हाईकोल



ख़ालिस कारबोलिक
आसिड से
१८ या २०
गुना ज्यादा तेज

८ औन्स-१६ औन्स
बोतलों में
१ कार्ट और १-५-१० गेलन
टीन और पीपो में बिकता है
१ कार्ट हाईकोल

बराबर है

२—गेलन बाजारी छूत और बदबू को दूर करने वाली दवा के

सफ़ूफ़ हाईकोल

१५ फी सैकड़ा—कारबोलिक पौडर से ४ गुना तेज है
१ और २ पौंड टीन में और ½ और १ हंड्रडवेट पीपों में बिकता है
पीअरसन एन्टीसेपटिक कम्पनी लिमिटेड
७ पोलक स्ट्रीट कलकत्ता

सदर दफ़तर लनडन कारख़ाना हल

शाख़

आसिग (आस्ट्रिया), बम्बई, बोरडो, ब्रसेल्स, कलकत्ता, केपटौन, डरबन, ग्लासगो, हेमबर्ग, जहांनेसबर्ग, मिलान, पेरिस।

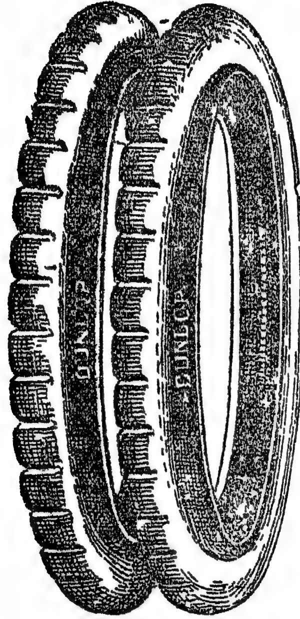
हर असली टिकट पर पीअरसन की जिम्मेदारी (बाबत असली ने दवा के) लिखी हुई है॥

सफ़ूफ़ हाइकोल

K

टायर की

मज़बूती पर ज़ियादातर सफ़र की खुशी मुनहसर है



ग्रूव्ड डनलापस टायर हमेशा क़ाबिल इतमीनान हुआ करता है यह बात हजारों मोटर गाड़ो पर सवारी करने वालों के तजुरबा से मालूम हुआ है—कि यह डनलप के टायर और सब अंग्रेजो टायर से प्रसिद्ध और अद्वितीय है।

मुफस्सिल के एजेन्ट

इलाहाबाद	...	... हैरो क्लार्क एण्ड को
आगरा	...	... एच० पेसटन जो एण्ड सन्स
देहली	...	... प्यारेलाल एण्ड सन्स
लखनऊ	...	... ओरियण्टल मोटर कार कम्पनी
कानपुर	...	... बिरामजी फ्रेम जी एण्ड कम्पनी
लाहोर	...	... मोटर एण्ड साइकिल एजन्सी
मेरठ	...	... आर० सी० ग्राजुएट ब्रादर्स

दि डनलप टायर कम्पनी लिमिटेड कलकत्ता बम्बई

बामरलारी एंड को कलकत्ता

मेशीनरी डिपार्टमेंट (कल की चीज़ों का सीग़ा)

यह कम्पनी निम्न लिखित कम्पनियों की चीजों की एजन्ट है

मेरी वेदर्स के फायर इनजिन और उसके मुतअल्लिक चीजो को

सिंचाई और पानी पहुचाने के निमित्त पम्प वगैरः को

हेफिल्ड के ढले हुये लोहे के पहिया, धूरा, पत्थर तोड़ने और पीसने की कल और हर तरह की स्टील कास्टिग (लोहा ढालने) को।

अवेलिग और पोर्टस के स्टीम रोलर को

हर क़िस्म और हर कामों के लिये रोवो के स्टीम इनजिन को

पलसोमीटर स्टीम पम्प को

रोलर फ्लोलर मिलिग मेशिनरी को

स्कानडिनेवियन बेलटिंग को

खराद और कल के आलात को

डी० एम० वेआईलर इनैमिल को

फ़्लेक्सिबुल मेटलिक ट्यूबिग को

सेनटिनल एयर कमप्रेसर और स्टीम वैगन को

बरफ़ बनाने और साफ़ करने की मशीन को

सिसकोल के हथौड़े और रौकड्रिल (पत्थर छेदने के बरमा) को

नैशनल गैस इनजिन कम्पनी लिमिटेड के जो कि दुनियां भर में सब से बड़ी इनजिन बनाने की कम्पनी है, यानी खींचने के गैस और तेल के इनजिन को।

मिसर्स मेरी वेदर एण्ड सन्स लिमिटेड के माडलफायर स्टेशन को देखिये

तेल से चलने वाला एन्जन। * * *

बिजली की रोशनी का कुल यन्त्र। *

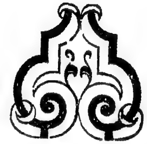
पानी उठाने का कल। * *

रेलवे का सामान। * *

हिटले ऐंड ग्रेशम् लिमिटेड्।

कलकत्ता बम्बई





स्ट्राण्ड * * * * *

नम्बर ई ४ * * * *

इन्जिनियरिंग * * * * *

कोर्ट * * * * * * *

भाग ग्यारहवां

इनजिनियरिङ्ग का सामान

इस भवन के स्थापन करने का अभिप्राय यह है कि जिसमें दर्शकों को इन विभागों के बने हुये और इन्ही के सामान्य भागो के बिजली के सामान औजार मकान बनाने का नया सामान इत्यादि का पूर्ण रूप से परिचय हो जावे—इस इनजिनियरिङ्ग विभाग के बहुत से सामान तो विलायत के प्रसिद्ध कारखानो के काम का नमूना है लेकिन दूसरे विभाग मे प्रायः हिन्दुस्तान ही के काम है इन दोनो विभागो में उत्तम कारीगरी के नमूनो को एक जगह रखना तो असम्भव ही सा प्रतीत होता है किन्तु इसका हिन्दुस्तान मे प्रभुत्व जानने के लिये प्रदर्शिनी के मकानों स्वास्थ सम्बन्धी पानी का इन्तजाम और क्रीड़ागार के बनावट को अच्छी तरह से देखना चाहिये—इनजिनियरिङ्ग के कल और यन्त्रों का रूप कृषी, बन, बिने हुये विभागो में दिखलाया गया है।

इनजिनियरिङ्ग के खास कमरे में जिसका नाम मेशीन हाता (यन्त्र भवन) है और जो कि कपडे के बने हुये खण्ड के फाटक के तरफ़ से जाने से उत्तर में मिलैगा वामर लारी कम्पनी विलियमसन मेगर एन्ड कम्पनी और अक्टेवियस स्टील कम्पनी के कारखानों के यन्त्रो का नमूना है।

वामर लारी के कारखाने के बने हुये मेंड बांधने का एक नया अद्भुद तरीका दिखलाया गया है जिसमें एक ही लपेटा हुआ तार से काम लिया जाता है 'टारविया' नामक सडक बनाने की वस्तु बडी संतोष जनक बनी हुई है और इसको काम में लाने के लिये 'कनटार नामक यन्त्र इस्तेमाल किया जाता है।

पीने की चीजों को साफ करने के लिये एक नये ढग की कारर्वाई दिखलाई गई है।

यहां पर सिमिन्ट मट्टी, बनाने के औजार, तार की रस्सिया और जस्ते का भी संग्रह किया गया है।

11

यहाँ पर एक ख़ास तरह का अमरीका के रोवी कम्पनी का बनाया हुआ आसानी से उठने वाला भाप के इञ्जन का दृश्य है ऐसा इंजन हिन्दुस्तान में बहुत काम में आता है और जब व्यवसायी की उन्नति होना शुरू हुई है लोगों की यह इच्छा है कि कोई ऐसा इजन बनाया जाय जो हर तरह से ठीक हो और जिस में बगैर ज्यादा पढ़ाये या सिखाये हुए आदमी भी सुगमता से काम कर सके ।

नैशनल गैस इनजिन कम्पनी का बनाया हुआ घोडो की शक्ति वाला इञ्जन रक्खा गया है व्यवसाय में जहां भाप का इञ्जन काम में नहीं आ सकता वहां यह तेल से काम करने वाला इञ्जन काम में आ सकता है—इस में ख़र्च कम होता है आसानी से चल सकता है और इसके काम में बहुत समय नही लगता और अगर यह अच्छे कारख़ाने का बना हुआ हो तो विश्वासदायक ही समझना चाहिये ।

यह बात तो मानी हुई है कि पुतलीघरों में और बिजुली से काम चलाने वाले कारख़ानों में गैस का इञ्जन और सेकसन गैस के यन्त्रों के मिलाव के काम में बड़ी किफायत होती है ।

बहुत तरह के पलसो मोटर स्टीम पम्प जोकि हिन्दुस्तान में ख़र्च होते हैं दिखलाये गये हैं–यह पम्प गहरे कुओं से पानी खींचने के काम में आता है–यह पम्प–भाप के यन्त्र में लगाया जा सकता है और उठाने धरने लायक बनाया गया है ।

आग बुझाने के इञ्जन यन्त्रादि और जिसका काम दिखलाया जायगा और काम पडने पर जिससे काम लिया जायगा विलायत के मरीवाटर एन्ड सन्स के कारख़ाने का भेजा हुआ है ।

प्रेगर कम्पनी के चुने हुये बिजुली के सामान भी दिखलाये गये हैं–इसी तरह अकुटेबियस स्टील कम्पनी का सामान और बिजुली के सामान के दृश्य भी रक्खे गये है–इसमें अनेक प्रकार के यन्त्र रक्खे गये हैं और दर्शकों को उनका परिचय बडे सावधानी से करना चाहिये ।

बीच में दाहिने तरफ़ मारशल सन्स एण्ड कम्पनी का भेजा हुआ दृश्य है–यहां के बने हुए बहुत से इंजन और यन्त्र काम करते रहेंगे–इन इनजिनो में ख़ास बात यह है कि लकड़ी जलाने में बहुत किफ़ायत होती है ।

यहां पर कई तरह के शक्ति के इन्जन का नमूना दिखलाया गया है जो कई तरह के कामों में आता है यह इन्जन अलग २ शक्ति के हैं और कई कामों में आ सकते हैं यह इञ्जन रुई ओटने की कल के लायक़ बहुत योग्य और बिजुली घर के काम में लगाने लायक़ भी है।

दस टन का सड़क कूटने वाला इंजिन जैसा कि हिन्दुस्तान की म्युनिसिपैलिटियों में चलता है दिखलाया गया है—और ऐसे ही कई तरह के इञ्जन दिखलाये गये हैं।

सूत के कारख़ानों के लायक एक इंजिन भी दिखलाया गया है—इसके चलाने के ख़ास पुरज़े बहुत तेज़ लगाये गये हैं और इस में भाप कम ख़र्च होती है।

मारशल सन्स के कारख़ानों की भेजी हुई वस्तुओं का वर्णन यहां संक्षेप में बतला दिया गया है किन्तु कुल मैदान में पानी खींचने और कृषी खंड में भी यहां के बहुत असबाब देखने लायक रक्खे गये हैं।

कलकत्ते के बर्न कम्पनी का लोहे के काम का नमूना और उनके चित्र इस खण्ड के पूरब-पच्छिम वाले हिस्से में रक्खे गये हैं—यहां के और दृश्य दूसरी जगह भी रक्खे गये हैं।

वेबकाक एण्ड विल काक्स के यहां का जल यन्त्र लोहे के फाटक गरम करने इत्यादि के यन्त्रों का संग्रह रक्खा गया है— रुड़की खण्ड में भी इनका सामान है किन्तु सब से बढ़िया इन का सामान प्रदर्शिनी के काम में लगे हुये शक्ति यन्त्र का है।

इन्जिनियरिंग में ईंधन के ख़र्च और उस के तैय्यारी और बचने का ख़ास ख़्याल रहता है—यहां पर कलकत्ते के एन्ड्रियूल कम्पनी (जोकि बङ्गाल वाले कम्पनी के एजन्ट हैं) का दिखलाया हुआ कोयले के क़िस्मों का नमूना है इन्जिनियरिंग के काम में लकड़ी का ख़र्च दिखलाने के लिये कोयले खान के अग्निबोट इन्जन और गैस पैदा करने वाले यन्त्रों का नमूना दिखलाया गया है—इसी कारख़ाने ने प्रदर्शिनी के ख़र्च के लिये मुफ़्त में कोयला दिया है।

इसी कारख़ाने से उन के खान से निकले हुये सुलगती भट्ठी और ईंटों का भी दृश्य दिखलाया है।

आज कल के जलाने के यंत्रो का सामान भी दिखलाया गया है कलकत्ते के केम्बेल कम्पनी का बनाया हुआ जिस में मट्टी का तेल जलता है दिखलाया गया है—और बम्बई के वीटन कम्पनी के गैस के इस्तेमाल के लम्पों का पूरा पूरा हाल दर्साया गया है और गैस जलाने पकाने और गरम करने के यन्त्रो का नमूना भी रक्खा गया है—और हिन्दुस्तान के व्यवसाय के उपयोगी गैस का सब सामान दिखलाया है—प्रदर्शिनी में जलने वाले दो यन्त्रो को इसी कारखाने ने बनाया है।

इस खण्ड के दक्षिण पश्चिम के और जोस्ट के नामी कल से चलने वाले पखे दिखलाये गये हैं ये पखे गरमी के सुख के लिये बहुत अच्छे हैं और इस मे रोज सिर्फ़ =) आना ख़र्च होता है रेल गाडी—और इसी गाड़ियो में—मकानो और बगलो मे ठडी हवा भर करके गरमी घटाने के यन्त्र दिखलाये गये है—और जोस्ट के खसखस नामक गरम हवा क ठडी करने के लिये यन्त्र दिखलाये गये है इसी कारख़ाने के पानी गरम और ठडा करने के बिजली के यन्त्र दिखलाये गये हैं।

यहा पर वेस्ट पेटन्ट प्रेस कम्पनी (जोकि इन प्रान्तो का बहुत मशहूर कारख़ाना है) की चीजें भी देखना चाहिये।

बम्बई के मेकवेथ ब्रादर्श कम्पनी के आग बुझाने वाले यन्त्रो का दृश्य रक्खा गया है यह यन्त्र हिन्दुस्तान मे कपडे सूत और आरा की कलो और ऐसी ही चीज़ो में लगती है आग को बड़ी सुगमता से बुझा देती है—और इन यन्त्रो द्वारा बीमा वाली कम्पनियों का नुकसान क़रीब २ आधा कम हो जाता है वरटेक्स यन्त्र जो कलो मे हवा के दुरुस्ती के लिये काम मे आता है और लोहे जडे हुये लकड़ी के दरवाजे जिन से आग लगने का डर नही रहता और जो यहां के पुतली घरों में इस्तेमाल होता है दिखलाया गया है—आग मे उस के फैलाव के जांचने के लिये लोहे के बने हुये हौज भी दिखलाये गये है—रेल गाड़ियो में रोशनी करने के लिये डाइनामो का दृश्य और बम्बा जोड़ने का सामान भी रक्खा गया है।

कलकत्ता बम्बई के हेटली ग्रेशम कम्पनी के बिजली जलाने और तेल के इन्जन यन्त्रादि दिखलाये गये हैं—इन्जन का दाम बहुत ही कम रक्खा गया है—और बिजली जलाने के यन्त्र बड़े सादे बनाये गये

है--बहुत से दृश्य रेलवे के अनुभवी इन्जिनियरों ही के देखने लायक़ हैं--इस कम्पनी मे रेल के सब किस्म की गाडी बनती है।

वेकुअम ब्रेक कम्पनी के बनाये हुये पहिया रोकने का यन्त्र जिस को कि यहा के रेल की सब कम्पनियां काम मे लाती है दिखलाया गया है।

आज कल के भ्रमण करने वालो ने रेल मे जलते हुये बिजली के लम्प की अद्भुत शक्ति को देखा होगा और उसी का नमूना लाइटिङ्ग कम्पनी का बनाया हुआ यहा दिखाया गया है।

रेल मे बिजली के लम्प और पखो का दृश्य विकरस सन्स मेक्सिम का बनाया हुआ दिखलाया गया है--और इस मे कोई सन्देह नही कि रेल की गाड़ियों में इन के लग जाने से बहुत आराम हो गया है नहीं तो यहा का भ्रमण बडा ही कठिन होता था—रेल में बिजली के रोशनी की सफलता बिजली के भरती पर निर्भर रहता है--इस तरह के असबाबो का दिखाव हेटली एन्ड ग्रेशम के कारख़ाने के साथ दिखलाया गया है--रेल के गाडियो का दृश्य जोकि ईस्ट इन्डिन रेलवे की तरफ़ से मशहूर कम्पनियो का बनाया हुआ दिखलाया गया है उस से मालूम होगा कि यहा इन चीजो के बनाने का कैसा अच्छा अवसर है।

टेलर ब्रादर्स के कारख़ाने का सामान भी देखने लायक है—विलायत में इस कम्पनी की बड़ी थाप है और इस के बनाये हुये लोहे और धातु के सामान अद्वितीय और प्रति रूपक होते हैं।

वार्ड कम्पनी के बने हुये कारख़ाने हेटली ग्रेशम कम्पनी ने रेल में काम आने वाले तरह २ के कूपलर्स का सग्रह दिखलाया है।

इन तेल देने वाली मशीनो का इस्तेमाल यहा के रेलवे कम्पनियो मे बहुत होता है—रेल के इन्जन और कल के बनाने वालों के बलकन फौन्डरी का कारख़ाना प्रतिनिधि समझा जाता है उनके यहा के नमूना और तसवीरो के देखने से पुराने और नये इन्जनों में उन्नति मालूम होगी - इन्जनो के काम में उसके तेजी बताने वाले यन्त्र बहुत अच्छे हैं—कौसबो और मटीसन के कारख़ाने के बने हुये देग का नमूना भी दिखलाया गया है।

दक्खिन पूरब के तरफ केलन्डर कम्पनी के हर तरह के बने हुये बिजुली के तार के नमूने आये हैं और इनके मिले हुये धातु और रङ्गों का भी नमूना है सेंट हेलेन के रबर के कम्पनी के रबर के बने हुये सामान भी आये हैं जान किङ्ग कम्पनी के बने हुये अग्निबोट नाव और किश्तियों के नमूने हैं और तरह तरह के यहा के बने हुये इन चीजों के सामान का नक़शा है कलकत्ते के जेसप कम्पनी के तरह तरह के बिजुली और और चीजों के सामान उनकी तसवीरें और नक़शे दिखलाये गये हैं इस कम्पनी का और सामान दूसरे स्थानेः में भी रक्खा गया है जिसको देख कर के दर्शक गण बहुत प्रसन्न होगे।

बहुत सी दूकानो का सामान बाहर के मकानों में रक्खा है जिसको उन्हों ने बनाया और सजाया है-- जमना के किनारे से इन कारख़ानो का स्थान इस तरह से है-इम्पायर इन्जिनियरिङ्ग कम्पनी कलकत्ते की विलियम जैक्स कम्पनी लस्कम्ब कम्पनी और फ्रीजोनो कम्पनी—वासल कम्पनी है—यहा सिङ्गर कम्पनी के सिलाई का दिखाव भी अठपहल ख़ेमे में है—मेन कम्पनी के हदबन्दी और लोहे का काम बहुत मशहूर है-उनकी चीजें और दफ़्तर यहा मौजूद हैं।

ढिकाबिल कम्पनी के बाद फिर बर्न कम्पनी हो का लोहे और स्टील का काम है—इनके यहा की छोटी रेल का सग्रह अच्छा है विलियम सनमेगर भांसो के ग्वाट और कालोपदो वारिक केम्पनियो का भी सामान है।

जरमनी के जार्ज गेवल का बनाया हुआ टिकट छापने और तारीख़ छापने की मशीन भी दिखलाई गई है।

यह सब दृश्य यहा के रेल के कम्पनियों के देखने लायक होगा।

जरमनी के हाइन्ज और ब्लेकटर्ज के कारख़ाने की निब और क़लम और धातु के जर्राही और तसवीर उतारने के काम का नमूना दिखलाया गया है।

फ्रेन्क फर्ट के यूनियन टायर कम्पनी का बना हुआ गाड़ी मोटर और बाईसिकलों के पहिये का रबर मिलता है।

बाये तरफ़ ससार के विख्यात बेन्ज मोटर गाडी का नमूना है इन गाड़ियो के ससार की सफलता का हाल लिखने को बहुत चाहिये।

जरमनी के कारखाने की बिजुली से चलाई जाने वाली सूत बिनने की कल का भी दृश्य होगा—आज कल के पुतली घरों में इनका प्रचार हो रहा है—जरमनी के साइक्लोन इनर्जीनियरिङ्ग वक्र्स की बनी हुई तूफान के बचाव का सामान मुसाफ़िरों के लायक दिखलाया गया है।

विलायत के यूनियन केबिल कम्पनी का सब किस्म के तारों का सामान दिखलाया गया है।

जरमनी के कारखाने की नामी पेरिस से न्यूयार्क तक जाने वाली गाडियों का नमूना दिखलाया गया है।

जरमनी के इन्जन के मशहूर कारख़ाने की चीजों और कामों का चित्र भी देखने लायक है।

ताता के बङ्गाल के लोहे के कारख़ाने में चीज लगाने वाले एक जरमनी के कारख़ाने का नमूना भी आया है।

डिक के कारख़ाने का घड़ी सुनारी और औजारों का नमूना भी दिखलाया जायगा।

एवर्ल कम्पनी के खोदने काटने के सामान का दृश्य भी दिखाया गया है।

सर्व साधारण के चिट्ठियों और कागजों के मिलने के दफ़्तर के पास विलायत के सब से बडे सीने की कल बनाने के कारख़ाने का काम रक्खा गया है जरमनी के खण्ड के पास जरमनी के सब से पुराने कारख़ाने की चीजें हैं जहा पहले पहल आग के बचाव का इन्जन बनाया गया था—आज कल भारत वर्ष में इन्हीं चीजों की जरूरत है कि जिस्से यहा की उत्पत्ति का पूर्ण रूप से व्यवसाय बढ़ाया जाय और जो लोग इनकी इच्छा रखते हैं उनको यहां के छपे हुये सूची को लेकर पढ़ना और लाभ उठाना चाहिये जरमनी के एक बड़े कारख़ाने का बना हुआ लोहे के जालीदार नल का नमूना है।

थिओडर लेब्ध के मशहूर कारख़ाने का बना हुआ ज्वर यन्त्र (थरमा मेटर) के भी नमूने, का दिखाव भी रहैगा—और सोडा वाटर व्यवसाइयों के मतलब की सोडा वाटर बनाने और सीसी साफ़ करने इत्यादि के काम का नये ढङ्ग का बना हुआ सामान है।

जान फाउलर के यहां का यन्त्रिक और तनाव का काम दिखलाया गया है-और पास ही पास पण्डित श्री कृष्ण जोशी और सिलदार कम्पनी का बनाया हुआ और वामर लारी के कारखाने का बना हुआ सामान है।

लखनऊ के लोहे का कारखाना है और स्टेन्डर्ड छापेखाने का काम प्रदर्शिनी के रोज का काम छापने के लिये (इसका पूरा वृत्तांत इस भाग के अंत में पढ़िये)।

रेलवे के हद्द के पास अलेकजेन्डा कम्पनी का सामान कालोपदो बारिक के जल यन्त्र और ग्लेन फोल्ड और केनेडी की सजावट और मैहर के पत्थर और चूने के काम का दृश्य-बम्बई के वार्डन कम्पनी के खपडे का सामान-इत्यादि दिखलाये गये हैं।

यहा पर ग्वालियर के लाला रामचन्द्र और सिलदार कम्पनी की भी दूकान है।

कलकत्ते के एशियाटिक पेट्रोलियम कम्पनी के तेल के ईंधन इत्यादिक सामान दिखलाया गया है-इसी कारखाने के काररवाई से प्रदर्शिनी में तेल का छिडकाव भया है जिस में गर्दा नहीं उठती है इस कम्पनी में कपडों के घना करने के लिये भी तेल का नमूना रक्खा गया है इस जगह पर यहां की चीजों की सूची भी मिल सकती है। इनजिनियरिंग विभाग का सामान इतना ज्यादा है कि इसमें का कुछ काम लकड़ी धातु और पत्थर इत्यादि के विभाग में रक्खा गया है-यहां अवध रुहेलखण्ड और ग्रेट इन्डियन पेनिनसुला रेलवे का सामान भी दिखलाया गया है।

यहां पर लंकास्टर के मशहूर पलंग और सरदार माधवसिंह की चीज और मारटिन कम्पनी का बनाया हुआ एक इञ्जिन भी रक्खा गया है।

वेकुअम आयेल कम्पनी नजफ़ अलीखां और इउइङ्ग कम्पनी का तेल का सामान दिखलाया गया है।

मोटर विभाग ।

मोटर खण्ड के उत्तर की तरफ फ्रेञ्च मोटर कार कम्पनी के तरह २ की मोटर गाड़ियां दिखलाई गई हैं यहां पर सब तरह की मोटर गाड़ियां दिखलाई गई हैं जिसको मामूली आदमियों से बड़े बड़े चक्रवर्ती राजा ख़रीद सकते हैं-यहा यह गाड़ियां बड़ी साफ और सुथरी है और कम्पनी के कलकत्ते के कारखाने में सब तरह के नमूने की गाड़ियां बन सकती हैं—इस कम्पनी की जैसी प्रतिष्ठा है वैसे ही उम्दा यहां की गाड़ियां भी बनी हैं यहां पर रूस के बादशाह जैसी गाडी का नमूना रक्खा गया है बम्बई साईकेल और मोटर एजन्सी के दूकान की हर तरह की गाड़ियां दिखलाई गई है यहा पर एरेट जान्सन और रोवर नामक की १९११ में बनी हुई मोटर गाड़ियां भी दिखलाई गई हैं ।

अपर इन्डिया मोटर कम्पनी की मोटर बाइसिकिल के नमूने भी दिखलाये गये हैं।

सी० डी—मोतीशाह के दूकान की भी नई चाल की गाड़िया दिखलाई गई हैं।

फिर सिमसन कम्पनी की हाचकिस की गाड़ी का नमूना दिखलाया गया है।

जैसे हार्चाकस कम्पनी की बनी बदूक मजबूत होती है-वैसे ही गाडिया भी हैं।

इसके बाद बम्बई के मोटरकार कम्पनी का गाड़ियों का नमूना है।

१९०८ में बनी हुई साईलेन्ट नाइट नामक गाडी अच्छी समझी जाती थी-रायल आटो मोबाइल कम्पनी ने १९०९ में दो साइलेन्ट नाइट की परीक्षा की ।

१९०९ मे इन गाड़ियो की खूबियो के लिये आर ए० सी० डमलर कम्पनी को डीवार चैलेन्ज ट्रोफी इनाम दिया था इन गाड़ियों के नमूने इस कम्पनी ने दिखलाये है।

फिर इस के बाद इन्डस्ट्रिया लिमिटेड की चैाकी है।

इसके बाद ओरियन्टल मोटर कम्पनी ने सोडेली और अलब्रूना गाड़ियों का नमूना दिखलाया है—यह गाड़ियां विकर्स सन्स एन्ड मेक्सिम के कारख़ाने की बनी हैं और बहुत मजबूत हैं इस में बिजली की रोशनी का इन्तजाम है—यहां पर डनलप टायर भी दिखलाये गये है।

गाडी विभाग

संयुक्त प्रान्त का मथुरा से आया हुआ एक इक्के का और रायबरैली के दो इक्कों का दृश्य मनोहर है—यहा के एक दो कारख़ानो की बनी हुई गाड़िया आई हैं जिसको लोग अवश्य देखेंगे—ये गाड़ियां उम्दी और सस्ती भी हैं—गोरखपूर भी पालकी के लिये विख्यात है और यहां की पालकी देखने से इस बात का अच्छा प्रमाण मिलता है—एक पालकी आम तख़्ते की बनी हुई है और उस पर चादी का काम है और उसकी खिड़कियों मे रेशम के सामग्री का अच्छा काम बना है—इसके भीतर एक ऐना और हाथ धोने के बरतन इत्यादि रक्खे हुये हैं और भीतर के तरफ छत में एक चाबीदार चरखा लगा हुआ है—दूसरी पालकी में बैत और बांस की कारीगरी की गई है—पेशावर में प्रचलित रबड़दार टांगा का दृश्य दिखलाया गया है और आशा की जाती है कि संयुक्त प्रान्त में भी इसका प्रवेश हो जायगा।

कलकत्ते के स्टुवर्ट कम्पनी के मशहूर गाड़ी के कारख़ाने की बनी हुई बहुत उम्दा काम की राजसी ठाठ की गाड़ी है—यहा के और ब्रेक बेल के कारख़ाने की सब तरह की दो और चार पहियो की गाड़ी के नमूने रक्खे है।

इस कारख़ाने की बनी हुई गाडियो के देखने से यहा के काम का हाल मालूम होता है।

बम्बई के प्रेस के कारख़ाने की सागवन की बनी हुई लन्डो गाड़ी का नमूना आया है जोकि बिलकुल नये ढङ्ग की बनी है—यह लोग कहते हैं कि हिन्दुस्तान के मौसिम के लायक़ यह गाड़ी विलायती गाड़ियों से उम्दा है—इसी कारख़ाने का बना हुआ एक जलसे के लायक़ चार बेग है जो टेबिल इत्यादि से सजी है।

रुड़की का एनेक्स

रुड़की कालेज की चीजों के लिये एक ख़ास मकान बनाया गया है—यह कालेज हिन्दुस्तान में अपने ढङ्ग का सब से पुराना है—यहां एक सूची छापी गई है जिसमें पूरा हाल लिखा गया है—और यह पुस्तक रोजगारी और गैर रोजगारी आदमियों दोनों के पढ़ने लायक़ होगी।

छापने की कलें

इस विभाग में पावर हाउस के समीप स्टैन्डर्ड प्रेस इलाहाबाद उत्तम प्रकार की प्लेटन और सिलेन्डर मिशीनों की नुमायश करते हैं जिनको लन्दन के हेरल्ड एन्ड सन्स ने इस नुमायश के मौके के लिये इस प्रेस के वास्ते ख़ास तौर से उम्दा ईजादों के साथ बनाया है—जिन महाशयों को उत्तम प्रकार की छपाई से दिलचस्पी है वे फोरमैन प्रेस मजकूर से इजाजत लेकर मशीनों को और उन पर छपते हुए कामों को देख सकते हैं।

मिल (चक्रियों) के दुरुस्त करने के सब सामान

स्टाण्ड (दुकान) नं० १ टैक्सटाइल कोर्ट में

ब्राडवरी ब्राडी एन्ड कम्पनी

द्वारा दिखलाई जावेगी।

हेनरी, एफ़, कौकिल एण्ड सन्स लिमिटेड के बेलटिंग (तसमा)

ओलढम रोप एण्ड ट्राइन कम्पनी लिमिटेड के बंधन और रस्सियां।

इरवाइन एण्ड सेलर की बौबिन एण्ड शटिल्स ढरकियां

लांग ब्रिज लिमिटेड की आयेल और कार्ड कैन्स (कुप्पियां)

डौन्सफ़ील्ड ब्रादर्स का ग्राईनडिंग रोलर (पीसने का बेलन)

क्या आपने कभी

जे० हापकिनसन एन्ड को

लिमिटेड का वायलर एण्ड, फ़िटिंगस और वालवज़ देखा है।

जान किंग एण्ड को, लिमिटेड

इनजीनियर्स, (ढालने वाले) जहाज
बनाने वाले और आम चीजो के ठीकादार
मेशीनरी (कल) और धात के सौदागर

—— o ——

विक्टोरिया एनजिन वर्कस,
हबड़ा।
शाख-खीदिरपूर।

—— o ——

मेशीनरी एनड स्टोर डिपो,
४० स्ट्रानड, कलकत्ता।

—— o ——

तार का पता
"विक्टोरिया," कलकत्ता।

—— o ——

मशीनरी विभाग में
हमारी नुमाइश की
चीजो को देखिये।

—— o ——

हमारे सूचीपत्र
के वास्ते
लिखिये।





हर क़िस्म की
मशीनरी और कुल
सामान इनजीनियरी
बहुतायत से हमारे यहां
मौजूद है।
निर्खनामा पत्र भेजने
पर भेजा जाता है।
यह कम्पनी इनडस्ट्रियल
मशीनरी और खेती के कुल
औजार दे सकती है।
इस कम्पनी का ख़ास काम मिलस
(चक्कियों) का खड़ा करना है।
"ब्रूक" कारख़ाना की मेरीन मोटर
व मोटर बोट (नाव) की
यह कम्पनी एजन्ट है।
प्रदर्शिनी में इस कम्पनी की मोटरबोट
(नाव) देखी जा सकती है।

॥ नोटिस ॥

एलगिन मिल्स कम्पनी का बनाहुआ कपड़ा घर गृहस्ती के कामों के लिये हिन्दुस्तान और बर्म्मा के देशों में पचास वर्ष से जाहिर है।

तौलिया, झाड़न, मेज का चादर वगैरह २ अगर आप चाहे तो आप बहुत खुशी से इन सब चीजों के नमूने और इनको बनतेहुये नुमायशगाह नम्बर T. I.- में देख सकते हैं।

एलगिन मिल्स कम्पनी

कानपुर.

जिसकी बुनियाद सन १८६४ ईसवी में पड़ी है और, ड्रिल जीन वगैरह और हर किस्म का सूत कपड़े व मोजों के लिये यहां बनाया जाता है।

भाग बारहवां

बिने हुये कपड़ों का हाल

इन प्रान्तों के कृषी व्यवसाय के महत्व के बाद बिने हुये कपड़ों का काम होता है--इस बिभाग में बड़े मेहनत से आज कल के कपड़ों के बुनने की तरकीब दिखलाई गई है यहां पर बाराबंकी के हिवेट स्कूल का मैदान में और दूसरे कारीगरों का कोठरियों में काम दिखलाया गया है जिस से पुराने और नये उन्नति के यंत्रों से बनाये हुये कामों का नमूना दिखलाया गया है और इस के देखने से यह मालूम होगा कि अगर इस रीति पर व्यवसाय होता रहा तो थोड़े रोज़ में बहुत उन्नति करेगा—आज कल के दिनों में जब कि समस्त संसार में जीवन आधार का प्रश्न उठ रहा है तो हिन्दुस्तान में ज़रूरी है कि इन पर विचार किया जाय और यह तो मालूम ही है--कि बग़ैर उन्नति के अब गुज़ारा नहीं होगा--बिनने के काम की परीक्षा ता० २ जनवरी से ९ तक की बहुत शिक्षा प्रद होगी--मौजूद और मंगाई भई कलों के काम की परीक्षा होगी--इस के विस्तार पूर्वक हाल के बाबत प्रदर्शिनी के इनटेलिजन्सवरों में छपी हुई किताबों को देखना चाहिये—इस प्रान्त में बिनने का काम बहुत प्राचीन समय से होता आया है और सुधारे हुये यंत्रों का मिल और फ़ैक्टरियों में प्रवेश के समय का परिचय देने वाला कोई पुरुष नहीं है—सूती रेशमी और ऊनी कपड़ों के बिनने का काम भी होता है--किन्तु इस पर भी गवई के कामों में अच्छी शक्ति है और वहां के और मिलों के बने हुये कपड़ों का नमूना भी रक्खा गया है।

कानपूर के एलगिन मिलस कम्पनी का बहुत ज़्यादा संग्रह है--यहां पर कातने और बिनने की कलों से काम करके दिखाया जाता है और सुधरे हुये मशीनों में बन कर कपड़े तैय्यार किये जाते हैं और यही दर्शकों के देखने के लिये रक्खे गये हैं--इस जगह पर इन की चीज़ों का अलग अलग बयान नहीं किया जाता है किन्तु यह कहना अत्युक्ति न होगा कि यह संयुक्त प्रान्त का अग्रगणीय कारख़ाना १८६२ में स्थापित भया था--मिल का स्थान गंगा के तट पर है यहां पर बलवे के पहिले अस्पताल था।

कानपूर काटन मिल्स बगैर कातो हुइ रुई ख़रीद कर लेती है और इस कारख़ाने मे यह खूबी है कि शुरू से आख़ार तक का काम यहीं बनाया जाता है और बाहर से सूत वगैरह नहीं मगाये जाते है—यहा पर कपास से बने हुये कपडो तक की काररवाई का दृश्य दिखाया गया है और करघो पर काम होता है जहा ख़ास करके 'ककोमो' तालिया बनाई जाती है--खेमो के छोटे नमूने बना कर दिखलाये है—हिन्दुस्तान में काम मे आने वाले खेमो के सब नमूने एक दृश्य मे पता लग जाते है और यह खेमे ठीक बडे खेमो की नकल बनाये गये है--और एक बढ़िया सग्रह सूत के काम के बने हुये कम्बल और गलीचो का है जिस के देखने से यह प्रतीत होता है कि ऊन के बने हुए है--यह कम्बल क्रैन टारटन ढङ्ग के बने हुये है--दरी और फर्श के नमूने भी रक्खे गये है—यहा की बनी हुई रंगीन और धुली हुई जीन विलायती ज़ीनो की तरह की होती है।

इस प्रान्त मे कानपूर के उलन मिल के बने हुये कपडे और धारी-वाल के निव इगरटन उलन मिल के कपडो के देखने से मालूम होगा कि रुपया और अच्छे कारीगर और व्यवसाय बुद्धि से कैसा लाभ और बन सकता है—इस प्रान्त मे आगरा और अवध में इस तरह के कपडे बहुतायत से बनते है और यहा की चीजो का दृश्य बडे साव-धानी से देखना चाहिये-कानपूर के उलन मिल के बने हुये लाल इमली सग्रह के अच्छे२ कपड़े दिखलाये गये है--और मशीनों में कपडे बनाये भी गये है—यहा के पुतला घर का एक छोटा नमूना भी बनाया गया है—यह हिन्दुस्तान की सब से पुराना ऊनी कपड़ो की मिल है और यह १८७२ मे स्थापित हुई थी--पहले इस म कम्बल और मोटे कपड़े ही बनते थे किन्तु अब हर तरह के महीन मोटे कपडे मोजे कम्बल और तरह २ के असबाब बनते हैं जो कि विलायती कपडो के मुक़ाबिले के होते हैं-पहले यह मिल थोडे जगहो मे थी किन्तु अब ९ एकड़ जमीन में है और यहा २४००,००० गज कपड़ा तैय्यार होता है जोकि इला-हाबाद से कोलम्बो तक के लम्बान का होता है-इस कम्पनी में २००० आदमियो से ज्यादा अच्छी तनख़ाह के नौकर है और तनख़ाह के अलावा यहां के नौकरों को बोनस (नफ़ा का भाग) दिया जाता है यहा पर दूसरे जगहों से काम के लिये चीज मगाई जाती है और यहा के कपड़े बिलकुल ऊनी होते है।

पंजाब के धारीवाल के न्यूइगरटन उलेन मिल का इस विभाग में विस्तार से सामान रक्खा गया है जहां हर तरह के ऊनी माल बनते है-यहां पर धारीदार और चारखाने की फलालैन बहुत किस्म की और वजहदार बनती है-सब तरह के पट्टू और सर्ज का नमूना भी रक्खा गया है-धारीवाल के लोई की बहुत मांग रहती है और यह सादे और चारखाने की सब रङ्गो की तैय्यार होती है-कई तरह की किनारेदार चादर भी दिखलाई गई है-यहा के मोजे का संग्रह भी अच्छा है-यहा पर कुरती मोजे स्वेटर, वनियाइन औरतो का कोट, फतुही, दस्ताने, गलेबन्द और सरकारी खर्च की चीजो का नमूना भी दिखलाया गया है-यहा के बने हुये तैय्यार कपडे भी देखने लायक़ है-इस मिल के चौडाई लम्बाई गुदाम बगले मकान डाक घर और दूकानों का बना हुआ नमूना रक्खा गया है और यह सब मिल की जायदाद है।

मिर्जापुर के स्टोन और कारपेट कम्पनी और हाजी शेख़ अबदुल करीम और शेख़ रहमत उल्ला का बम्बई के सिगार के मेनुफेकचरिङ्ग कम्पनी का कोटा का गेन्डो वेलटिङ्ग और एन्ड्रिव कम्पनी का सामान भी रक्खा है -सूती और ऊनी खण्डो के सिवाय रेशम का खण्ड है जिसका कच्चा सामान इस प्रान्त मे नहीं तैय्यार होता है-इस के लिये यहा गेन्डो रेशम का काम बनाया जाता है-यहा के रेशम के माल के शान का काम कहीं नहीं होता किन्तु इसके पैदा करने का यहा इन्तजाम नहीं है—यहा के ताल्लुकेदार जमींदार किसान और रय्यतों को चाहिये कि इस व्यवसाय का प्रबध करे क्योकि इन के पैदावार के न होने से व्यवसाय नही चल सकता।

खेमे और तमबुओं का यहा पर हमेशा से अच्छा रोजगार रहा और यहा पर दिखलाया भी गया है—यहीं पर यह काम पहिले पहेल चलाया गया था और अब भी बडे प्रतिष्ठा के साथ होता है जैसा कि नमूनो के देखने से मालूम होगा।

तब भी खेमो के रोजगार मे तरक्की हो सकती है और यहा के कारख़ानो को किरमिच के खेमे भी जैसे विलायत मे बनते है बनाना चाहिये क्योकि इनसे कीडों और मौसिम के अदल बदल की तकलीफो से बचाव होता है।

एलगिन मिल्स कम्पनी—म्योरमिल कम्पनी के दरबार में खेमे इत्यादि-कानपूर के काटन मिल्स आगरे के जगन्नाथ भगवानदास के कारखाने का काम इस प्रदर्शिनी में देखने लायक है।

सीमा प्रान्त के कपडों के सामान के लिये एक अलग मकान बनाया गया है और अखोर के पश्चिम के तरफ है-पेशावर की चीजों का कई विभागों के दृश्य के भेजने मे पेशावर के हेनिसी साहब ने बड़ी मेहनत की है इन्होने यहां पर भेजी हुई चीजो की सूची तैय्यार की है जिसका बहुत संक्षिप्त वर्णन नीचे दिया जाता है।

यहां के भेजे हुये सामान मे से बहुत से मध्य एशिया, फारस, अफ़गानिस्तान और रूम के है—ये सब लाहौर कलकत्ता अमृतसर और बम्बई को भेजे गये थे।

इस मे से ख़ास ख़ास चीजे यह हैं गलीचे, जीन के बेग, खेमें के परदे, चटाई, फूलकारी और मोम के सामान इत्यादि-आसानी के लिये यहीं पर शम्बूर की चीजे भी हैं-फूलकारी बेचने के लिये नहीं बनाई जाती किन्तु काम में लाने के लिये और कहने पर बनाई भी जा सकती हैं-इन चीजों के चुने हुये काम भेजे गये है यह एक बहुत मनोरंजक गुण है लेकिन अब औरतों को किफ़ायत के कारण जो बाजार के बिलायती सस्ते रंग ख़रीद कर बनाती है यह हुनर नाश होता जाता है--यह हिन्दुओं के कारीगरी का नमूना है—अफ्रीदी मोमजामे के बाबत यह सुना जाता था कि यह यहीं बनती है लेकिन यह मालूम भया है कि इसका काम बरोदा और कच्च में भी होता है-यह पठानो का हुनर है-इसका काम अब अफ-रीदियो में बहुत कम होता है-अब अफ्रीदी लोग अपने काम के लिये पेशावर से मोमजामा ख़रीद लेते है इसके काम बनाने का हुनर अब वे नहीं जानते पहले जो इसमे मुसलमानी ढङ्ग का काम रहता था उसके बदले में अब जापानी नमूनें और फूलों का नमूना रहता है।

सर जार्जवाट ने अपने इन्डियन आर्ट आफ दिल्ली नामक किताब मे जो इस हुनर के विषय मे कहा है उस से ज्यादे कहने की जरूरत नहीं है।

इसके काम का नमूना प्रदर्शिनी के एक सहन में कारीगर लोग बनाते हैं—अफ़रीदी लोग इस कपडे को नहीं पहिनते किन्तु स्त्रियां

का ऊपर का कपड़ा इसी के कारीगरी का रहता है और नीचे के तरफ़ एक भद्दा पैजामा जिसके पहिनने में पहाड़ी जाड़े में भी तकलीफ होती है।

इन कपड़ों के ब्याह और उत्सव के कपड़े बनते हैं-और औरतों के कुर्तों की तौल १० सेर होती है।

लुङ्गियां

इस प्रान्त में लुङ्गिया सब जगह बनती हैं किन्तु पेशावर और कोहाट की बहुत बढ़ कर रहती हैं-इसका ढङ्ग बहुत अच्छा होता है और बल और जाति के घमडी पठानो के लायक़ बहुत अच्छा कपड़ा है इन पठानों की लुङ्गी और स्काट लैन्ड के गोरो के चारख़ाना दार कपड़े में जिसमें कि धारी का फ़र्क होता है अकसर मिलान किया जाता है-ख़ाकी मटीली और नीली लुङ्गियें के साफा के साथ पहनने से जिसमें सुनहले काम और चारख़ाने के रहते हैं लावण्य रहित पुरुषों में भी शोभा बढ़ाती है-लुङ्गियों के काम के लिये रेशम बुख़ारा और मध्य एशिया से आता है।

लुङ्गियां लुधियाना पेशावर मशहद (फ़ारस) और बुख़ारा में भी बनती है-एक पेशावर के दूकानदार के यहां इन जगहों के कारीगर काम करते हैं-लुधियाने और पेशावर की लुङ्गियों में हलका काम रहता है किन्तु मशहद और बुख़ारा के कामों में बहुत भड़कीला रङ्ग दिया जाता है-मशेदी लुङ्गियां पेशावर में भी बनती हैं लेकिन वजहदारी काम और मजबूती में उनका मुक़ाबला नहीं कर सकतीं क्योंकि वहा का रेशम बहुत उम्दा होता है पेशावर और लुधियाने के लुङ्गियों का रंग ख़ाकी या हलका नीला होता है-यह नीला रंग नील से बनाया जाता है और पक्का होता है नीले या सफेद धागो को मिला कर के तरह २ का रंग उत्पन्न किया जाता है।

महीन बनावट के काम में समय ज्यादा लगता है और कारीगरों की मजूरी इसी के हिसाब से दी जाती है—एक जुलाहा ७ गज़ लम्बी लुङ्गी को २ या ३ दिन में बना सकता है-और एक थान की १=) या १॥) बनवाई होती है-इस हिसाब से एक आदमी को ।-) या ।=) मजूरी हुई-लुङ्गी वाले ५ या ७ आदमियों को रख कर अपने

यहां एक छोटा सा कारखाना खोल सकते हैं-सब से बढ़िया लुङ्गी लुधियाने में एक कारीगर के यहां बनती है लेकिन २० वर्ष से वह पेशावर में चला गया है-पेशावर की पगड़ी बगैर कुल्ला के पूरी नहीं होती कुल्ला साफ़े के भीतर पहने जाते हैं और बग़ैर साफ़े के भी।

कुल्ला चार तरह का बनता है—

(१) कडा और लम्बा (२) कड़ा और गोल (३) मुलायम सुनहले और रुपहले काम का (४) मुलायम और सफेद सूती कपडे पर रेशम के काम की जिसके ऊपर के तरफ काम रहता है और नीचे का हिस्सा दिखलाता रहता है।

चौथे किस्म के कुल्लों पर का काम पठानी औरतें बनाती हैं और उसको पठान बग़ैर लुङ्गी के पहनते है।

पहले और दूसरे किस्म को सब पेशावरी लोग पहनते हैं और तीसरे तरह की अकेली पहनी जाती है।

अफ़गानिस्तान रूसी बुख़ारा और बाजौर के रोंये अकसर बहुत खूबसूरत होते है लेकिन ऐब यह रहता है कि वे अच्छी तरह सफा नहीं किये जाते।

अफगानिस्तान की लोमड़ियों और पहाडी तेंदुओं के रूसी बुखारा से ख़ाकी गिलहरी और सम्बूर-असुफान से जङ्गली बिल्ली, और गिलहरिओं के चमडे आये हैं-बाजौर से नेवले, लोमड़ियों के, चीता, उदबिलाव, जङ्गली बिल्ली, सियार, भेड़ियां, और सम्बूर के चमड़े और रोये आये है।

पोसतीन भेड़ के चमड़े के कोट या कम्बल यह भेड़ के पूरे चमड़े के बनाये जाते है इनके रोये हलके लाल रङ्ग के होते हैं-यह चमड़ा साफ़ करके पीला हो जाता है-और फिर रेशम के काम भी किये जाते हैं यह सब अफ़गानिस्तान की चीजे हैं कुछ पोसतीन तो देखने योग्य हैं-ये बडे गरम होते हैं-लेकिन बरसात के और घूमने लायक़ नहीं होता-बरसात में पोसतीन पहने हुये काबुली से बचना चाहिये।

सुजनी का काम बोख़ारा-समरकन्द-शहरे सब्ज, गन्धार, फ़ारस और मध्य एशिया के शहरों में बनती है।

बुख़ारा की सुजनी बहुत बढ़िया समझी जाती है-ये दो तरह की बनाई जाती है एक तो सादो सिलाई और दूसरी चेनदार सिलाई के काम की-गलीचे और सुजनी एशिया में दहेज में दी जाती है-लड़कियां सूई का काम सीखती हैं जिससे पति के योग्य समझी जॉय दीवाल और खेमे के सजाव में लगाई जाती है-तुर्क तारकोमान हेरात मर्व ख़ीवा के गलीचों को देखकर उस से बढ़िया काम की कल्पना भी नहीं हो सकती।

यह एक संतोषदायक बात है कि चीजों को वही लड़कियां बनावे जिनके लड़के इस पर खेलेगे या जिसके रंग बिरंगे काम को देखकर प्रसन्न होंगे-ये परदा और पलंग पोश की जगह पर काम में आते हैं इन सुजनियों में कभी २ सुनहला काम भी रहता है और बाकी लाल, हरा, नीले, पीले रंग की होती है।

गलीचे

बोखारा रूसीतुर्किस्तान और अफ़गानिस्तान में गलीचों, कम्बलों, जानेमाजो और दरवाजे और दीवालो के परदों और खेमे के सामानों का अच्छा व्यापार होता है-फारस, कासगर और यारकन्द के गलीचे भी आये है-कम्बल के खरीदने वाले उसको बहुत पसन्द करते है और यह ठीक है कि उसके देखने से उनके फ़ायदे नहीं पता लग सकते गलीचे का व्यवसाय बहुत प्राचीन है और पूर्व इतिहासिक समय से होता आया है इसका पता नही लगता कि पहिले गलीचे का काम मिश्र देश में या मध्य एशिया में चलाया गया लेकिन इसमें सन्देह नहीं इसके पहिले काम परदे नुमा होते थे-या तो यह गुण पूरब से पश्चिम मे गया या पश्चिम से पूरब मे आया किन्तु हर एक का असर दोनो पर अवश्य पड़ा।

तेरहवीं शताब्दी में इलिनारे आफ केस्टिल के साथ पहिले पहिले पूर्वीय गलीचे विलायत को गये थे—और फारस के शाह अब्बास ने अपने यहां के आदमियो को रेफल के गुण को सीखने के लिये भेजा था-गलीचों की बनावट में हिन्दुस्तानी छुवाव इन्हीं के उद्योग से हुआ-पूर्वीय गलीचे कई क़िस्म के होते हैं।

काकेशियन-तुर्की, कुर्दी, चीनी, फारसी, अफ़गानी तुर्कमानी।

पेशावर में गलीचे आते हैं वह टरकोमन बुखारा अफगान और कुछ कुछ फारसी ढङ्ग के होते हैं-यह बात साफ़ है कि आर्य लोगो (फ़ारस) के बनाये हुये गलीचों में फूलदार काम रहता है और तरकोमन वालों में रेखा का लेकिन दोनो तरह के कामों के हर जगह बनते हैं।

इसका सबब यह है कि तरकोमन और अफ़गान लोग कट्टर मुसलमान हैं और फारस और एशिया के लोगों से ईश्वरीय नियमों को ज़्यादा मानते हैं-मुसलमानी नियमानुसार जीव जन्तु के चित्र नहीं बनाये जाते किन्तु इस नियम का पालन फारस वाले नही करते।

पूरब प्रदेश गलीचे और परदों के काम के लिये बहुत अनुकूल है। एशिया तुर्किस्तान बिलोचिस्तान और अफगानिस्तान के पहाड़ी भागों में बकरे बकरिया और ऊंट चरते हैं।

पूर्वीय रङ्गों की तारीफ पश्चिम वाले बहुत करते थे-रंग के बनाने के पुराने ढग हम लोग भूल गये।

इस हुनर में पूर्वीय लोग हमेशा बढ़े रहे और बढ़े हैं गो रूस और पश्चिम के तैय्यार किये हुये कोयले के रंग से यहां के काम में बाधा पड़ गई है—जिस को पहले के कारीगर कभी काम नहीं लाते।

व्यवसाय की चेष्टा से मध्य एशिया के भागों से गुण का भाव नाश होता जाता है--यहां के लोग लाल रंग को जड़ और तरह २ के बनस्पतियो से निकालते हैं और यह रंग सब पक्के होते हैं।

नीला रंग नील से बनाया जाता है—पीला बेर हलदी और केसर से बनता है--हरा रंग पीला और नीले को मिला करके, काला रंग लोहे के बुकनी और अनार के छिलके से निकालते थे—बैजनी रंग लाल और नीले को मिला कर बनाते थे।

इन गलीचों में काम दर्शनीय होते हैं किन्तु आज कल की औरतें जो उन को बनाती हैं उस के महत्व को नहीं समझतीं किन्तु बाप दादों के सिखाये हुये—जिन मे धार्मिक भाव भरा हुआ था—कामों की लीक पीटती आती हैं।

इस में बहुत से दोष रहते है जो ग़ौर करके देखने से मालूम पड़ते हैं—कभी २ दूसरे रंग के जमीन पर दूसरे ऊनों के कामों से भद्दापन आ जाता है जिस के लिये ये कहा जाता है कि जब इतनी मेहनत से यह काम बनाया गया तो जरा सी सुस्ती के कारण कुल काम क्यो बिगाड़ डाला गया ऐसी बहुत सी गलतियां जान बूझ कर मिथ्या धर्म विश्वास के कारण की जाती हैं—बिनाई के बाबत और ज्यादा नहीं लिखा जा सकता।

फ़ारस के गलीचों में सूत का काम रहता है और यूरोलियन बिलकुल ऊन का रहता है दो तरह की सिलाई होती है एक तो तुर्की और दूसरी फ़ारसी, फ़ारसी गलीचा के बिनाई की गट्ठी निकली हुई रहती है—बुख़ारा के बहुत गलीचों में सेहना सिलाई का काम रहता है—एक इंच के वर्ग में ४० से लगा कर ६०० गट्ठियां रहती हैं अगर एक मिनट में ४ या ६ गट्ठिया बनती हैं तो एक गलीचे के बनने में सालों लग जाते हैं और इस के साथ साथ इन के दाम बहुत कम होते हैं—पेशावर में यहां के बहुत कम कम्बल आते हैं—इन में से मशहद तेहरान और केशम से रेशम के आते हैं और किरमान और कुर्दिस्तान के ऊनी आते हैं और बिरजन्द और गायन के सूती और ऊनी दोनों आते है—पेशावर के सौदागरों को नहीं मालूम होता कि यह कहां के है और वह इन सब को ईरानी बतलाते हैं तरकोमन के कम्बल पेशावर में बहुत आते है और जाडे के दिनों में बहुत बिकते हैं।

इस पुस्तक में इन का वर्णन विस्तार से नहीं किया जा सकता और मनफ़र्ड "ओरिएन्टल रंगज्" और हेनिशी साहब की छपी हुई पुस्तकों को देखना चाहिये।

झंडे

सीमा प्रान्त के जातियों के झन्डे संग्रह किये गये हैं—हर जाति में नियत किये हुये झन्डे रहते हैं—इन का भाग नियमानुसार नहीं किया जाता है—इन सब पर हजरत अली का पंजा और इसलाम के संबंधी आधे चांद का नमूना रहता है—कभी २ सुन्नियों में चहरतान और शिया लोगों में पञ्जतान भी दिखलाया जाता है।

ये झडे घर में वढ़ाये नहीं जाते इन को बुढ़ियां बनाती हैं और जब ख़राब हो जाते हैं तब रसम के साथ गाड़ दिये जाते हैं।

इस प्रदर्शिनी में रक्खे हुये हथियार हिन्दुस्तानी आदमियों और अंगरेजी अफसरों के भेजे हुये है—यह सीमा प्रान्त के औजारों के प्रति रूपक हैं और इन मे जजैल, पिस्तौल, कुल्हाड़े, भाले, छुरा, ढाल, कुकड़ी और कटारी है और कुछ इन में से बलूची फ़ारसी और काबुली है कुछ तो अंगरेजी राज के और कुछ बाहर के बने हुये हैं कुछ तो लोहे के है और कुछ काम किये हुये कड़े लोहे के बने हुये हैं-यह लड़ाई में काम आये भये है और कुछ तो ऐसे है कि जिन का खून भी नहीं सूखा है पेशावर दस्ते बनाने के लिये विख्यात था किन्तु अब सिकलीगरों का रोजगार लोप हो रहा है—कटारी और बन्दूकों के रखने का हुक्म नहीं है किन्तु अब भी लोगों के यहां मौजूद हैं और ऊपरी देखने वालों को पता नहीं लगता—छिपाये हुये या ज़मीन में गड़े हुये और शायद अच्छे काम के उम्दा हथियार हैं और भले घरों में अब बहुत कम तलवार बन्दूक़ और कटारियां हैं-या तो इन लोगो ने रुपये की जरूरत से इकट्ठा करने वालों के हाथ बेच डाला या बद-माशों के संग में इनका भी सब छिन गया-बहुत ने उनके रखने के अपराध के कारण उनका नाश कर डाला इस लिये यहां संग्रह किया हुआ सामान बहुत रोचक होगा क्योंकि इसी तरह से थोड़े दिनो मे सब नाश हो जायगा-सीमा प्रान्त के खण्ड में चित्राल का रेशमी चोगा काफ़िरिस्तान की अनूठी चीजें स्वात के कम्बल और पेशावर के बेल बूटों के सामान का दृश्य रक्खा गया है-पेशावर नगर के निकट में मिले हुये कनिस्क के थाल का जिसमें बौद्ध देव की स्तूप में रक्खी हुई हड्डियां मिली थी-रक्खी गई हैं-इस स्मारक धार्म्मिक और गौणिक महत्व के विचार से दर्शकों को डाक्टर स्पूनर जिन्हों ने इसको पाया था और हेनिसी साहब के छपाये हुये हाल को पढ़ना चाहिये।

बाराबंकी के हिवेट बीविङ्ग स्कूल के लड़के और लड़कियों के काम को अच्छी तरह देखना चाहिये इसी के पास बनारस के करघे से तैय्यार किये हुये कामों को जरूर देखना चाहिये-पांच यन्त्र यहां काम करते हैं जिनमें कीनख़ाब, पोत, साड़ी डुपट्टा और अनेक प्रकार के रेशम के काम बनाये गये हैं-इस काम के लिये रेशम को बनारस

को परदा नशीन औरतें बनाती है और हफ्ते मे दो दफा प्रदर्शिनी में आता है-फ़ाइन आर्टस के खण्ड में खलीलुरहमान ने विक्रियार्थ और दिखाने के लिये यहा के सामान रक्खे है-इसी जगह पर बिनाई की परीक्षा की जायगी।

यहां पर इस प्रान्त में कालीन का व्यवसाय अच्छा चलता है और विलायती, फरासीसी और जरमनी के कारख़ाने के मुकाबले के काम के आगे भी यह जमा रहा यहां के दृश्य देखने ही से इनकी तारीफ का हाल पता लगैगा-इसके सामान का हाल यहा पर नहीं लिखा जाता किन्तु इनका ढङ्ग नमूना मजबूती और दाम के विचार से इसके आज कल के कामों मे इस्तेमाल का पूरा हाल पता लगैगा यह सब सस्ते दामों के बनाये गये हैं और इसी से इसके व्यवसाय के बढ़ने की आशा की जाती है-पुराने चाल के महगे सामान भी मिलते हैं किन्तु आज कल की उमग के योग्य यह सस्ते माल तैय्यार किये गये है-इसी सम्बन्ध में सब तरह के बढ़िये सामान को देखना चाहिये जिस्से पुराने और नये मालों में फर्क़ का पता लग जाय-पुराने ढङ्ग के सामान अब भी उसी दाम से तैय्यार हो सकते हैं-बनारस के टेलरी कम्पनी का भेजा हुआ गलीचा है जोकि एक बहुत पुराने गलीचे के नमूने से बनाया गया है।

इसके नक़शा बनाने में तीन महीने लगे और ३॥ महीने बिनने में लगे हैं-एक चौकोर इञ्च के स्थान में १४४ गद्दिया दी गई हैं और कुल गलीचे में ६२२, ०८० गद्दियां है नम्बर एक और दो तुर्किस्तान और पञ्जाब के क़ालीनों का नमूना है-असली रंग की नक़ल की गई है-इसकी क़िस्म का दूसरा ढङ्ग किया गया है-जिससे मलावार एन्ड जमना के सदृश बनै।

मिर्जापूर के वेस्टर्न इन्डिया एजन्सी कम्पनी के एस-ऐन-सिंह ने एक रेशम का गलीचा दिखलाया है जिसमें एक इञ्च जगह में ११७६ गद्दियां हैं।

बम्बई के ससून एन्ड एलायन्स सिल्क मिल कम्पनी के रेशम के सामान को भी देखना चाहिये ऊन सून और रेशम के बिने हुये और कृषी विभाग में दिखलाये हुये रेशे हैं जिसके द्वारा इन प्रान्तो में कपडा बनाने का व्यवसाय चलता है दिखलाया गया है ज्यों ज्यों चीज़

महंगी होती जायंगी त्यों त्यों इन सस्ती चीजों की मांग बढ़ती जायगी–यहां छोटे कारखाने के लायक चीजें रक्खी गई हैं और छोटे महाजनों से इस काम करने की प्रत्याशा की जाती है—बिनने का काम फैक्टरी में सिखाना होगा—और इसी जगह पर नहीं करना चाहिये—महाजनों का काम कारीगरों को सूत पहुंचाने का होना चाहिये और कपड़ों के नमूने का बतलाना बने हुये माल का इकट्ठा करना उनका दाम चुकाना और बेचने का प्रबन्ध करना चाहिये–और विविङ्ग मेशीन को किराये पर कारीगर को देकर उसकी जांच करने से जरूरत के सामान के बनाने में मदद मिलैगी–इस काम के करते समय में इसका कोई दोष होशियार आदमी के सामने छिप नहीं सकता—ऐसा करने से कारीगर सहज में काम सीख जांयगे और बताने वाले को अच्छा तैय्यार सामान मिलैगा।

इस तरह के यहां नये व्यवसाय की मौजूद से ज्यादा जरूरत है जिसमें नियमित समय नहीं लगैगा फुरसत के वक्त परदादारों को भी सिखलाया जा सकता है और धन शक्ति और रोजगार के शिक्षा का प्रयोग हो सकता है।

बाराबंकी के हिवेट वीविंग स्कूल का तैय्यार किया हुआ और वहां काम करने के तरकीब को भी जरूर देखना चाहिये—यहां के मोजा इत्यादि का सामान जो कि फ़ौज और सर्व साधारण के हेतु बनाया जाता है और जिसको लोग बहुत पसन्द करते हैं और गरीबो को बांटते हैं—अगणनीय संख्यायों में बनाया जाता है–यह काम जो हिन्दुस्तान में पहले पहल दिखलाया गया है बहुत शिक्षा प्रद होना चाहिये।

कायस्थ ट्रेनिंग कम्पनी और मुक्ति सेना के व्यवसायिक विभाग के तरह २ के बुने हुये कायस्थ ट्रेनिंग कम्पनी के मोजे रेशम और सूती सामान और मुक्ति सेना के कारखाने के मघैया और डोमों के बनाये हुये नेवाड़ तौलिये, दरियां, चारखाने, ड्रिल, जीन, परदा और लटकाने के थैले इत्यादि रक्खे गये हैं रहमतउल्ला के यहां के बने हुये धुस्से भी आये हैं यह धुस्से बाहर भी भेजे जाते हैं—लखनऊ के अलाबक्स फ़ैजबक्स का सिलाई और बेल बूटों का सामान आया है इस कारखाने के तग़मे और सार्टिफ़िकेट भी दिये गये हैं यहां पर कलकत्ते

के स्टूडेन्टस एक नामिक होशियारी की कल जिस में दोहरे टोके मोजे साथ २ एक ही दफे में बनते हैं दिखलाया है-कलकत्ते के स्टूडेन्टस इकनामिक होशियारी की मोजे बनाने की कल और उसके तैय्यार किये हुये सादे और फेन्सी मोजे भेजे गये हैं-यह मशीन बहुत सुगमता से चलती है और घर और कारख़ाने दोनों के लायक़ है।

इस खण्ड के विविध विषयक स्थान के टोपी, कपडे, छापने और रंगने के बेल बूटों के काम और बहुत सी चीजों को देखना चाहिये भगवानपुर के छीपियों की बनाई हुई तोशक और लिहाफ जिस पर लकड़ी के छापे से काम किया गया है बडी मजबूत हैं और रंग में पक्की हैं देवबन्ध की सादे तागे की बनी हुई चौतही भी है जो पलङ्ग पर बिछाने में बहुत उम्दा होती है-सहारनपूर के बन्जारों की औरतों के उन्हीं के हाथ के बनाये हुए काम के रंग विरंग के कई तरह के कपड़ों के नमूने हैं।

मुजफ्फरनगर के छपे हुये कपड़ों के परदे भी हैं यहां पर जानमाज लिहाफ और रजाई भी छापी जाती है-हिन्दू और मुसलमान छीपी दोनों छापते हैं-यहीं के मोहम्मद इसमाइल के भेजे हुए पीले परदे बेचने के लिये भेजे गये हैं-गुलामनवी ने एक लाल परदा जिसका दाम २) रुपया है दिखलाने के लिये भेजा है-यहा के और तरह तरह के रंगीन कपड़े आये हैं।

मुज़फ्फरनगर के हिन्दू और मुसलमान कम्बलियों का जो गडरिये और जुलाहे होते हैं बनाया हुआ कम्बल है-सफेद कम्बल तो मीरनपूर के चन्दा का बनाया हुआ है और काला वहीं के अल्लादिया का—लंढौरा के पूरब चन्द्र कम्पनी की मलमल, डोरिया, लट्ठलाट, धोती, गवरुन, जीन, तौलिये, ड्रिल, पतलून के कमीज के और कोट के बिछाने शिकार ब्रोचेस और सवारी के कपड़े और गज, टसर, रेशम और तन्जेब भी दिखलाये गये हैं—जहांगीराबाद के शादीलाल छोटेलाल और गुलजारी लाल ने वहां के छपे हुये जाजिम, लिहाफ़ तोशक चदरे और परदे दिखलाये हैं—यहां पर छापने का काम अच्छा होता है।

सिकन्दराबाद, की साड़ी, मलमल, दुपट्टा, रूमाल, और गोटा किनारी का सामान इलाहीबक्स और अलाबक्स ने भेजा है-यह चीज

महंगी ता है लेकिन बारीकी और मजबूती के लिये मशहूर है-यहां पर मेरठ, सीतापूर, इटावा, आगरा, बुलन्दशहर, हमीरपुर, शाहजहांपुर, मुरादाबाद, बहराइच, गोंडा, अलीगढ़, बिजनौर, उन्नाव, बरैली, सहारनपुर, मथुरा, गोरखपूर, बलिया, बनारस, हरदोई, की चीजें कायस्थ ट्रेनिग कम्पनी स्वदेशी वीविंग कम्पनी बम्बई के हरीदास चतुरभुज और स्टैन्डर्ड मिल से और बड़े बड़े कारख़ानों से आई हुई हैं।

आजमगढ़ जिले के गांव के बिनने की तरकीब दिखलाई गई है और प्रान्त भर में ऐसे ही काम होता है और सुधरे हुये ढंग का नमूना है।

मऊ, मुबारकपूर और कोपागंज में बिनने का ख़ास काम होता है—यहां के सब मुसलमान किये हुये जुलाहे हैं-कोरी बिलकुल नही हैं ख़ास मुबारकपुर में २००० जुलाहे हैं-मऊ में ७०० हैं-मुबारकपूर में पहले टसर का काम होता था-३० बरस पहले इसका रोजगार अच्छा होता था पर अब महीन काम की जरूरत से इस काम का बनना बन्द हो गया है-यहा के कारीगर बहुत जल्दी रेशम और सूत के मिले हुये काम बनाने का हुनर सीख गये-इस चीज़ को गलता और युसार कहते हैं-ऊपर का हिस्सा रेशम और नीचे का सूत का रहता है धारीनी छोड़ने के लिये कई ढरकी से काम होता है—इसके काम करने का ढङ्ग कठिन है यह काम उजेले या खुले मैदान में तागे टूट जाने के डर से नहीं किया जाता—रेशम में कलफ़ करने के काम में इमली के चियां से काम लिया जाता है—लच्छियों के सुखाने और कलफ़ करने का काम एकही दफे में किया जाता है—इसके रस में लच्छियां भिगो दी जाती हैं तब तागा परेते पर चढ़ाया जाता है खपची की दो सतर तब ज़मीन में लम्बे २ दो तीन गजके फ़ासले पर गाढ़ दी जाती है—जगह के हिसाब से इसकी लम्बाई रक्खी जाती है—इन डंडों में छेद करके एक लकड़ी लगाई जाती है जिसके ऊपर कील रहती है अख़ोर की लम्बी लकड़ियों में दो लोहे के छल्ले लगे रहते हैं और अख़ोर की लकड़ी में परेते की तरह एक चरख़ी लगी रहती है कलफदार भींगी लच्छी परेता द्वारा सावधानी से खोली जाती है और हर छल्ले से दहनी तरफ़ जाती है और अख़ोर की चरख़ी के चारों तरफ़ दहिने डंडे के बांई तरफ़ के छल्ले में होता हुआ उसी

जगह पर जाता है—यहां इसका अखोर का टुकड़ा दूसरे परेते में बांध दिया जाता है और डंडे छल्ले द्वारा तागा तना रहता है—जब तागा दूसरे परेते की तरफ़ घुमाया जाता है तब पहले परेते से दहिने छल्ले से होते हुये अखोर के डंडे से घूमकर दूसरे परेते पर चढ़ाया जाता है और पहले परेते से दूसरे परेते पर जाते २ सूख जाता है फिर तब इसमें कलफ हो जाता है तब यह लच्छिया पिन्डानुमा बना लिया जाता है यह तरीका मामूली है—यह यन्त्र बड़े सादे हैं और जुलहा अपने बुद्धि द्वारा इससे अच्छे २ कपडे तैय्यार करता है—यंत्र रचना का इसको बिलकुल परिचय नहीं रहता और मामूली आदमी को उसके समझने में बड़ी दिक्कत होती है—लेकिन ऐसी सादी कलमे काम करते २ उसमें भी सादापन आगया है।

मऊ में महीन मलमल, डोरिया और चारख़ाना बनता है—बीच २ मे रेशम भी लगाते हैं लेकिन मुवारकपुर से कम। दोनों यंत्र एक तरह के है सिर्फ़ बय हेडिल का फ़र्क है जहां पेचदार काम किया जाता है वहां १६ बय हेडिल लगाये जाते हैं सादे काम के लिये दो सह तक लगाते हैं।

इसके सम्बन्धी कामों का कारीगर ख़ुद निर्ख़ रखता है यहां के कार्य्य मे विभाग नहीं किया जाता है किन्तु मुवारकपूर में लच्छियों के उजला करने का काम ख़ास आदमी करता है।

यहां कोई काम तरतीब से नहीं होता क्योंकि व्यवसाय जाति नियम से रक्खी गई है रेल इत्यादि न होने से जुलाहा एकही जगह पर बेचता था—आज कल जब इन बातो का सुभीता है तो लोगों की पसन्द बदल गई है जुलाहा अपने लिये और बेचने के लिये चीज़ें बनाता है इस लिये विद्या प्रचार न होने से वह दूसरे आदमियों के लिये काम बनाने में हिचकता है।

जड़ और पेड़ो से रङ्ग निकालने का रिवाज नहीं है—सस्ते विलायती रंग काम में आते हैं मऊ में सौदागर हैं जो यहां से माल ख़रीद कर अपने आढ़तियों को इलाहाबाद, बम्बई, रंगपूर किसुनगञ्ज और शोलापुर इत्यादि नगरों में भेजते हैं।

मुबारकपुर में आढ़तिये हैं जो बहुत दूर २ माल भेजते हैं—मुबारकपूर में गलता मसरू और संगी के थान बनते हैं—हर तरह का असबाब दिखलाया गया है—गलता तो अब तक इन प्रान्तों का बहुत बढ़िया होता है—प्रदर्शिनी के लिये रेशमी और मिले हुये गलतों के नमूने तैय्यार किये गये हैं—दाम मामूली हैं - बढ़िया गलते सस्ते हैं—मशरू के सब तरह के नमूने दिखलाये गये हैं—सिर्फ बढ़िया तरह के बनाये गये हैं—लेकिन दाम ज्यादा नहीं हैं संगी सब से सस्ती और उम्दा वजह की हैं—रंग खुशनुमा होता है लेकिन पक्का नहीं होता—यह बहुत मजबूत होती हैं हर तरह का माल बन सकता है—मऊ के रेशम की अच्छी, डोरिया, चारख़ाना, सब नमूनें और रंग के तैय्यार होते हैं—सूती साड़ी और पगड़ी जिसका यहां बहुत प्रचार है प्रदर्शिनी के लिये तैय्यार की गई हैं यह भी विचार किया गया है कि इन चीज़ों के बनाने की तरकीब भी दिखाई जाय।

नीचे लिखी हुई किताबे गवर्नमेन्ट प्रेस

इलाहाबाद में मिलसक्ती हैं :—

इन्डियन ला रिपोर्ट पूरी इस साल की

सालाना क़ीमत २२॥)

सिविल लिस्ट सालाना क़ीमत ९)

गवर्नमेन्ट गजट

अंगरेजी सालाना कीमत	१३)
उर्दू सालाना क़ीमत	९)

अलावा इसके सरक्यूलरात बोर्ड माल व मुन्तख़िब

फैसलेजात बोर्ड माल अंगरेजी व उरदू में बिक्री

के लिये मौजूद हैं—

पुस्तको के मोल लेने की दर्ख़ास्त व कीमत साहब सुपरिन्टेन्डेन्ट

गवर्नमेन्ट प्रेस संयुक्त देश आगरा व अवध

इलाहाबाद के पास आनी चाहिये।

भाग तेरहवां

कृषी विभाग

कृषी विभाग के बनावट का काम और भागो की तरह इस अभिप्राय से बनाया गया है कि जिस में बने हुये मालों की और बनने की तरकीब का पूरा परिचय हो सके और ऐसी ही ख़ास चीजें रक्खी गई हैं—कुल स्थान में इसी ढङ्ग से सामान रक्खा गया है-किन्तु स्थान के अभाव के कारण दूसरा ढङ्ग भी रचा गया है-खेती की चीजों का उन के तैय्यार करने की और जोतने की सुधरी कलो का और चीज़ों के बेचने के लिये बनाने का सामान दिखलाया गया है।

जमना बेंक रोड से झील को जाने वाली सड़क के पूर्वी तरफ़ कृषी सम्बन्धी बढ़िया कलो का नमूना कई कारख़ानो में दिखलाया है-इस थोड़े से स्थान में सब चीजो का हाल देना तो असम्भव सा प्रतीत होता है-और उनका अलग २ हाल जानने के लिये दर्शकों को चाहिये कि कारख़ानों के प्रतिनिधियों से और कृषी विभाग के दफ़्तर से या वहा काम करने वाले पुरुषो से पूछा पाछी करें—नम्बर १ की चौकी पर वर्न कम्पनी के बनाये हुये कृषी विभाग के काम की चावल सफा करने की बेल के सामान भूसा अलग करने की पीसने की और नये तरह की धान अलग करने की जोतने और बोने इत्यादि की कलें दिखाई गई हैं रिचर्ड गेरेट एन्ड सन्स की पीटने और घास बाधने की कलें भी दिखलाई गई है।

नम्बर दो के चौकी पर इर्विंग कम्पनी के छिलके साफ़ करने की मशीन जो कई तरह के पैदावार के काम में आती है दिखलाई गई है।

नम्बर ३ के चौकी पर वर्न कम्पनी के कारख़ाने की बनी हुई छिलका साफ़ करने की मेशीन जोकि हिन्दुस्तान के पैदावार में काम में आसकती है दिखलाया है।

नम्बर ४ के चौकी पर इसी तरह की जरमनी की बनी हुई कलें दिखलाई गई हैं और रेशों के अलग करने की कल बहुत उम्दा ढङ्ग की बनी है और यहां के 'सोसल' सन के खेती और व्यवसाय की

उन्नति के ख्याल से हफ़ते में एक दफ़ा इन मशीनों की कारवाई भी दिखलाई जायगी–नम्बर ४ के चौकी के ठीक करने का काम बर्लिन के युक्तप्रान्तीय प्रदर्शिनी के सभा का सौंपा गया था।

क्रप कम्पनी के कारख़ाने की बनी हुई ऊख पेरने की कल जिसका नमूना हार्दी सुगर फैक्टरी में दिखलाया गया है और तरह तरह की पत्थर, अनाज और रसायनिक वस्तु पीसने की कल दिखलाई गई हैं–स्टील कम्पनी के कारख़ाने की गेहू चांवल और मकई पीसने की कल भी दिखलाई गई है रडाल्फ सैक के यहां के बने हुये हल और बोने की कलें दिखलाई गई हैं जो हिन्दुस्तान के लायक है–इनका काम भी कभी कभी दिखलाया जायगा।

यूरेनियां कम्पनी की दूध की कलें जो हाथ से और पावर से भी चल सकती हैं दिखलाई गई हैं राबर्ट इलजेस की बनाई हुई महुआ और राब से शराब बनाने की कलें भी हैं और यहां के शराब के बढ़ते हुये कारख़ानों के लायक हैं–जरमनी के बने हुये दो हल दिखलाये गये हैं एक का दाम तो १२) रुपया है–और दूसरा भी है जिससे १३) इञ्च गहरा और ३३ इञ्च चौड़ा खोदान होता है–एक और कारख़ाने की चांवल दलने की मशीन है–यह कले थोड़े काम के लिये भी काम में आसकती हैं और बड़ी कलों के काम का मुकाबला करती हैं और थोड़े दाम की हैं और इससे बहुत साफ चांवल निकलता है।

नम्बर ५ के चौकी में अक्टेवियस स्टील कम्पनी जरमनी की कलैं दिखलाई हैं इस कारख़ाने में बहुत दिनों से कृषी सम्बन्धी मशीने बनती है–हाल में इन्होंने हिन्दुस्तान के मतलब के कई तरह के हल दिखलाये हैं और जैसे युक्तप्रान्त के सरकारी कृषी विभाग में काम में आते हैं दिखलाया है–एक गोल हल ख़ास हिन्दुस्तान के लिये बनाया गया है जहा की ज़मीन कड़ी हो जाती है और हिन्दुस्तान के बने हल चलाने के कई तरह के भाप के इञ्जिन भी दिखलाये हैं एक जगह पर ये सब काम में लगाये गये हैं और इनका ज़्यादा हाल आगे दिया जायगा–नम्बर ६ के चौकी में जेसप कम्पनी के दिखलाये हुये कृषी सम्बंधी कल जिनमें भूसा काटने की पीसने की आटे की और कूटने इत्यादि की कले हैं–और एक करबी और घास बांधने की भी कल है–इस जगह पर कानपूर के बेग सदर लेन्ड के कारख़ाने के हाते में ग्रीनउड

एन्ड वेटली की भेजी हुई कलका नमूना रक्खा गया है-यहां पर बिनौले सरसों तिल और दूसरे तिलहन बाना से खरी बनाने का काम दिखलाया जायगा-हिन्दुस्तान में खरी के बनाने का महत्त्व बहुत होने से यह कल की काररवाई दिखलाई गई है-यह बहुत कम दाम की है चीज ज्यादा तैय्यार होती है और मामूली आदमी खरीद सकते हैं।

नम्बर ७ के चौकी में लेसली कम्पनी के हल बोने काटने पीटने और उसाने की, खरी कूटने की, आटा की रुई की, और मक्खन बनाने की मेशीन दिखलाई गई हैं-यहा का बना हुआ मट्टी के तेल से चलने वाला इनजन जिससे खेती की जाती है दिखलाया गया है।

नम्बर ८ की चौकी में टामसन कम्पनी की इसी तरह की कले और बगीचे के सामान इत्यादि दिखाये गये हैं।

नम्बर ९ के चौकी में इन्टर नैसनल हार वेस्टर कम्पनी का असबाब दिखलाया गया है-जिस्से अमरीका में खेती होती है और जो हिन्दुस्तान के लायक भी है।

नम्बर १० की चौकी में रिचर्डसन और क्रूडास कम्पनी का तरह तरह की कृषी विभाग की कले और इञ्जिनियरिङ्ग विभाग की चीजें बनी हैं।

नम्बर ११ के चौकी में मारशल एन्ड सन्स की बनाई हुई भाप की कले आटे कल और छोटे २ इञ्जन है-नहर के काम के लायक भी इञ्जन दिखलाये गये हैं जो यहां के झील में काम करके दिखलावेगे।

नम्बर १२ के चौकी में नाहन कम्पनी के कारखाने की कलें जिसका प्रचार पञ्जाब और पश्चिमीय भारत में है दिखलाई गई हैं।

नम्बर १३ के चौकी मे मेकवेथ ब्रादर्स द्वारा रबिन्सन कम्पनी की मैदे की कल दिखलाई गई है और यहां पर एक मोटे आटे की कल छोटे कामों के लिये भी रक्खी गई है और इनकी बड़ी मशीन जिसमें चालने और अलग २ तरह का अलग रखने का काम भी होता है-एलन कम्पनी के मट्टी के तेलवाले इञ्जन से प्रदर्शिनी भर में काम दिखावेगीं-मेकवेथ ब्रादर्स के उत्तर तरफ वालटर उड कम्पनी का कृषी सम्बंधी काम नम्बर १५ के चौकी में रक्खा गया है-नम्बर १६

के चौकी मे कानपूर को इम्पायर इञ्जिनियरिङ्ग कम्पनी का कृषी सम्बंधी और पानी खींचने की कले रक्खो गई हैं—यहां पर कुवां बनाने की जमीन के जांच करने वाली कल भी दिखलाई गई है।

राजा कम्पनी का असबाब नं० १७ के चौकी में है जहां कृषी और चोनी सम्बधी हिन्दुस्तान की बनी हुई चीजे हैं—नम्बर १८ के चौकी पर ब्रौडवेन्ट एन्ड सन्स के चीनी के कल का नमूना है जिसका हाल आगे लिखा जायगा—इसके अलावा जो कृषी का या पानी खींचने की या और तरह की कलों के काम का वर्णन आगे दिया गया है।

खेती की पैदावारी

नम्बर ३४ और ३५ की कोठियें और जमुना के किनारे के पशु भोजन खण्ड में कृषी सम्बन्धी उत्पत्तियें का नमूना रक्खा गया है—यहां पर पैदावार और उसके बनाने की विधि का ब्योरा देने का विचार था किन्तु जगह के ख्याल से इस स्थान पर पैदाइश और उनके तैय्यारी करने के सामान के रखने का प्रबन्ध नहीं हो सका।

नम्बर ३४ की कोठो में सब तरह के अनाज इत्यादि के सामान हैं और गेहू के नमूनें ने तो बहुत जगह घेरली है—इस प्रान्त के और दूसरे प्रान्त के सब तरह के गेहू का नमूना तरतीबवार रक्खा गया है—हावर्ड एन्ड हावर्ड के—ह्वीट इन इन्डिया नामक पुस्तकानुसार इनकी दर्जा बन्दी की गई है—और थोड़े से नये नमूने जिनका वर्णन पुस्तक में नहीं है रक्खे गये हैं।

कानपूर के बनस्पति खण्ड में संग्रह किये हुये घटिया बढ़िया गेहू के नमूने दिखलाये गये हैं—इस में हर जिलो से भेजे हुये गेहू के नमूने हैं—इस व्यवसाय में काम करने वालें के लिये यह संग्रह शिक्षा प्रद होगा—कानपूर में पैदा होने वाले गेहू अलग २ करके दिखलाये गये हैं।

इन प्रान्तें में सब तरह के मिले हुये गेहू की खेती होती है जिस से बहुत रुपये का नुक़सान होता है इसको साबित करने के लिये एक नक़शा लगाया गया है जिस से मालूम होगा कि एक दूसरे से और दूसरे तीसरे से मिलने से क्या असर हो जाता है—बाजार में कई तरह के मिले हुये बिकने वाले गेहू का नमूना भी रक्खा गया है—

सब तरह के मिले हुये गेहू से बेचने वाले को बोने वाले को और पीसने वालो को घृणा होना चाहिये कानपुर के और दूसरों जिले के गेहू में मिलान करने का अच्छा मौका मिलैगा—यह सफलता अच्छे ढग से बोने से हुई है न कि बढ़िया खाद इत्यादि छोड़ने से कोई भी खेतिहर देख सकता कि ५ या ६ बाल वाले और २० बाल वाले गेहू के पैदावार में कितना फ़रक़ है।

इस मकान के बीच में डनकन का स्ट्रेटन कम्पनी का इञ्जन जो बिजुली से और आसबर्न साहब के माडल इञ्जन से चलाया जाता है बाल व्हीट एलिवेटर है यह यन्त्र पजाब कृषी विभाग का भेजा हुआ है।

हिन्दुस्तान में व्हीट एलिवेटर (गेहू लादने और धरने का यन्त्र) के विषय में बहुत विचार होता रहा और यहां के इसके काम के देखने के लिये बहुत आदमी उत्सुक होगे—वहां पर मेकवेथ ब्रादर्स के दिखलाये हुये राबिन्सन कम्पनी की आटा पीसने का कलो का पूरा सग्रह देखना चाहिये—भाग्यवश स्थानाभाव से इस दृश्य का स्थान कच्चे माल के सग्रह के साथ नहीं रक्खा जा सका।

कोआपरेटिव क्रेडिट सोसाइटी के रजिस्ट्रार का भेजा हुआ सामान इस कमरे के पश्चिमोत्तर विभाग में रक्खा गया है—कृषी में उन्नति और नये यन्त्रों से कृषी करने के ख़्याल से कोआपरेटिव क्रेडिट ने बड़ा काम किया है—किन्तु यहां की चीजें नही दिखलाई जा सकतीं क्योंकि उन की सब बात खेतिहरो पर मुनहसर है—इसके पास मुज़फ़्फ़रनगर के जमीन्दारी एसोसियेशन और आवागढ़ के दृश्य हैं—इस एसोसियेशन को धन्यवाद देना चाहिये कि इसी अकेले ने स्वतन्त्रता से इस विभाग में चीजों को दिखलाया है—इस सम्बन्ध में मैनपुरी और बुलन्दशहर के एग्रीकलचरल एसोसियेशन और इलाहाबाद के पोर्टर एग्रिकलचरल एसोसियेशन का हाल भी बताना जरूरी है—युक्त प्रान्त के बहुत से आटा के पुतली घरो का नमूना है।

साफ और उम्दा बीजों के फायदे का वर्णन हो चुका है इसलिये मुज़फ़्फ़रनगर में सिरसैाली साड फार्म की चीज़ो को देखना चाहिये पूरब की तरफ कीड़ो का सग्रह है—पैाद़ो के ख़ास २ नाश करने वाले कीड़ों का हाल और उनके नमूने सीसे के बक्स में किवाडे के पास रक्खे गये हैं—और यह भी बतलाया गया है कि इन से बचने का

क्या उपाय है–लेन फ्राप साहब के इन्डियन इनसेक्टलाइफ से उनका हाल दिखलाया गया है–एक तरफ तो पौधे बिगाडने वाले कोडे और दूसरे तरफ उनको दर्जाबन्दी अलग २ को गई है–इस जगह पर लारेन्स और मेयो के यहां का सीसे का बक्स है जिसमे इन कोड़ो का हाल जानने के यन्त्र है–इसी कारखाने के इन कोडों के रोकने के यन्त्र दिखलाये गये हैं इसके बचाव करने के विषय में बताने का स्थान नहीं है किन्तु इनके यन्त्रों को देखने से आश्चर्य होता है।

कोठी नम्बर ३५

इस भवन में नम्बर ३४ के भवन की अपेक्षा बिबिध प्रकार के पैदावार का सामान है–यहा पर बहुत जगह मे प्रदर्शिनी के जिले की सभाओं से एग्रिकलचरल एसोसियेशन से और जमोन्दारो के भेजे हुये चावल के नमूने रक्खे गये है।

इस प्रान्त में हर साल ३॥ मिलियन टन चावल पैदा होता है और बहुत से गांवों में तो इसी की फसल होती है–इस लिये बडे चावलों के नमूनो का दिखाव जरूरी था।

इस भाग में लायलपुर के बोलकर्ड ब्रादर्स ने ग्लासगो के बालस एन्ड सन्स की कम्पनी के कृषी सम्बधी यन्त्रो को दिखलाया है इसका दिखाव बहुत जरूरी है क्योंकि पञ्जाब में इसका प्रचार रोज २ बढ़ता जाता है—उत्तर खण्ड में कानपुर के वेग सदर लेन्ड का कृषी सामान है—सिर्फ युक्त प्रान्त के लिये नही किन्तु हिन्दुस्तान के लिये बिनौले के तेल और खरी का व्यवसाय मनोहर होना चाहिये—तेलहन बाना जो बाहर जाता है उस के यहा रखने के फायदे पचासों वर्ष से दिखलाये जाते हैं और खेतिहरों को मालूम है—इस कम्पनी के साथ २ जेसप कम्पनी का ग्रोनउड एन्ड वेटली के कारखाने का भेजा हुआ बिनौले का तेल निकालने का यन्त्र दिखलाया गया है।

यहां पर कानपूर सुगर वर्क्स और ब्रशफैक्टरी के और वेग सदर लेन्ड कम्पनी का तैय्यार किया हुआ जानवरो के खाने लायक सामान भी दिखलाये गये हैं।

यहां पर गौरीपुर आयल मिल कम्पनी ने सेन्ट लुई एक्सपोज़ोसन में दिखलाये हुये दो सन्दूक रक्खे हैं—एक में तो सब तरह के खरी और तेलहन बाने के सामान का और दूसरे में जूट के कपड़े बनाने को

तरकीब का दृश्य है—इस खण्ड में काशीपुर शुगर वर्क्स इगलटी कम्पनी का सामान भी है।

इस कमरे मे ऊख और पौंड और सब जगहों की चानी का और देशी चीनी का नमूना भी रक्खा गया है।

झील के पूर्वोत्तर तरफ चीनी बनाने के तीन यन्त्र रक्खे गये है।

इस भवन मे थेकर स्पिक कम्पनी का वैज्ञानिक पुस्तकालय है—इम्पीरियल डिपार्टमेन्ट आफ एग्रिकलचर मे यही से पुस्तक जाती हैं।

रुई विभाग

इस प्रान्त में रुई की खेती बहुत होती है और कई जगहों में तो अद्वितीय होती है—इसकी खेती सिर्फ चीजा के तैय्यार करने की गरज से की जाती है—और इस लिये कानपूर के कृषी विभाग का काम जो कि पाटहौस कलचर के भवन में है जोकि जमना के किनारे पर डिमान्सट्रेशन ग्रौन्ड के पास है इस विभाग में व्यवसायिक या आत्मिक रूप से उत्सुक पुरुषो को मागने पर इसके सबधी छपी पुस्तक दी जाती है।

रुई के चीज़ों का और बोटैनिकल विभाग के तैय्यार चीज़ों का दृश्य

इसमें हिन्दुस्तान और इस प्रान्त में पैदा हुई रुई का नमूना दिखलाया गया है इनका दो विभाग है एक देशी और दूसरा विलायती—इसके बाद फिर दो विभाग है जिसमें पहले और पीछे पैदा होने वाली रुई का नमूना है—इस प्रान्त में इसकी फसल बहुत थोड़ी होती है इन क़िस्मों की तसवीर भी दिखलाई गई है—पौधो के दृश्य में कुछ थोड़े से दूसरे पौधे जो उगने मे निकल आते हैं रक्खे गये हैं।

जिस तरह से मेल के पौधे इसमें निकल आते हैं उनका दृश्य चित्र में दिखलाया गया है—और इस के दिखाव की यही सब से अच्छी तरकीब है इसी तरह के जो लटकन निकल आते है उनको तरकीब भी चित्र मे दिखलाई गई है।

रुई के बहुत से पैाधे रूलदार कागज़ पर दिखलाये गये हैं जिससे इनके निकलने का जब छोटे के पास बड़ा निकल आता है चित्र दिखलाया गया है—इसके प्रथम दृश्य तो जब यह पैाधे लम्बे होते हैं उसका है और दूसरा जब लम्बे और छोटे दोनों तरह के निकल आते हैं उसका है इसको गौर से देखना चाहिये।

जानवरो के खाने की चीज़

हिन्दुस्तान में इस के महत्व के ख्याल से जितनी तरह की चीजें जानवरो के खाने में आती हैं सब दिखलाई गई हैं—यह सब जमना बैंक रोड से मिले हुये छोटे मकान मे रक्खी गई हैं और वहीं पर चीजों के बीज भी जमा किये गये हैं।

कुछ पैादे तो ख़ास यही काम के होते हैं लेकिन जिससे अनाज भी पैदा होते हैं उन के बड़े पैाधे और दाने भी रक्खे गये हैं—बहुत तरह के चारो और बधे हुये घासो के नमूने भी दिखलाये गये हैं बराम्दे में इन चारों को अच्छी तरह से काम लाने वाली जैसे भूसा अलग करने और मकई छाटने की कलें रक्खी गई है—यहा पर मकई पीसने की कल भी रक्खी है—ऐसी मशीन अमरीका में काम में आती है जहां मकई पीस करके सुवरो को खिलाई जाती है—हिन्दुस्तान में इस काम के लिये यह अमूल्य समझा जाता है और इन की कुखड़ियां जिस में खाने की चीजें का अश रहता है बिलकुल फेंक दिया जाता है या जला दिया जाता है—यह पीसने से भूसा की शक्ति रखता है और राब में मिला कर जानवरो के खाने लायक़ हो जाता है।

इस मकान के सामने वाली ज़मीन में दो तरह के नये पैाधे दिखलाये गये हैं जिस के उन्नति की संयुक्त प्रान्त में बहुत आशा होती है एक तो ग्रौन्डनर है जिस की खेती मद्रास और बम्बई में होती है और मध्य प्रान्त में होती जाती है अनुभव से मालूम हुआ कि इस में यहां भी सफलता होगी—इस की फ़स्ल बहुत थोड़े दिनो की होती है—एक नगदी पैाधा है और बहुत फायदे का है।

इस से तेल निकलता है जो जैतून के तेल से कुछ ही घट का होता है और इस के तेल और इसके बीज की विलायतमें बड़ी खपत है-यही खाने के काम की भी होती है और सब शहरों के बाज़ार में बिकती

है—अभी इस की खेती बहुत कम होती है—भाषा में इस के पूरे हाल की पुस्तक छपी है जो मांगने से इनक्वाइरी आफ़िस से मिल सकती है।

सन के बारे में अभी पूरी तौर से नहीं कहा जा सकता है—क्योंकि इस के अनुभव में बहुत समय लगता है—इस प्रान्त के जिले की अलसी बहुत अच्छी होती है और चूंकि विलायती सन के लिये बहुत काम होते हैं यहा के खेतिहरो को चाहिये कि इस की ज्यादा खेती करे और फायदा उठावे—इस में बहुत रेशे भी पैदा होते हैं।

इस मैदान के तीसरे खण्ड में बहुत सी शहतूत की झाडिया लगाई गई हैं जिस से रेशम के कीडो के पालने में मदद मिले।

अन्डी रेशम का स्थान जानवरो के चारे वाले और नम्बर ३४ के मकान के बीच में है—जहा पर बनाने कातने और बिनने की तरकीब दिखलाई जायगी—इस का इन्तिज़ाम किया गया है कि हर तरह के रेशम के कीडे दिखलाये जांय कीडो के साफ करने रेशम को कातने और बिनने के लिये बाराबकी के ह्विवेट वीविङ्ग स्कूल का भेजा हुआ एक जुलाहा है—इस के अलावा शहतूत में पले भये कीडे और रेशम के बटने और रील पर चढ़ाने का दृश्य रहेगा—इस स्थान के सामान के इन्तिज़ाम के लिये प्रदर्शिनी लेफराय साहब इमपीरियल एनटमा-लोजिस्ट को बाधित है एड़ी रेशम के कातने की कल और शहतूती कीड़ों के रेशम को बटने के लिये पूसा की मशीन को देखना चाहिये इस प्रान्त में एड़ी रेशम का व्यवसाय अच्छी तरह हो सकता है क्योंकि इन के पोषण के लिये यहां अच्छा सामान मिलता है इस के हाल जानने के लिये एक पुस्तक छपवाई गई है और विशेष हाल जानने के लिये एक मोटी पुस्तक मागने पर मिल सकती है—एक निपुण पुरुष यहा पर रहेगा जो सब बातों का पुरी तरह से हाल समझा देगा।

यहां पर टसर के रेशम का जिक्र भी कर देना ठीक है जिस का मिर्जापुर के डिस्ट्रिक्ट इक्ज़िबिशन कमेटी और श्री निवास पांडे के उद्योग से दृश्य दिखलाया गया है इस के वर्णन करने को यहां जगह नहीं है और दर्शकों को वहीं पर जाकर पूरा हाल दरियाफ़्त करना चाहिये।

शुरू से यह बात सोची गई थी कि दर्शकों को बहुत सा हाल दरियाफ़्त करना होगा जोकि एक किताब मे नहीं दिया जा सकता इस लिये कृषी विभाग मे एक इनक्वायरी आफिस (सब तरह के हाल पूछने का दफ़्तर) खोला गया है एक सुपरिन्टेन्डेन्ट यहां रहेगा जोकि हर वक्त दर्शको को उन के रोचक वस्तुओं का हाल और वहा के अफसरों से बात चीत करने का इन्तिजाम कर देगा—संयुक्त प्रान्त के कृषी विभाग क तरह तरह के छपे हुये हालात यहा के इनक्वायरी आफिस से मिल सकते है।

केवेन्टर साहब और डेयरी सपलाई कम्पनी को धन्यवाद देना चाहिये जिन के प्रबध से यहां मक्खन के काम करने का पूरा २ सामान रक्खा गया है—यहां तक कि गै। जिस के दूध से यही पर बना करके मक्खन दिखाया जायगा मौजूद है।

हिन्दुस्तान के इस उपयोगी व्यवसाय को योहीं न टाल देना चाहिये और यहा पर हाथ को सफरी मेशीन से लगा कर भाप से चलने वाला मशीन तक का नमूना दिखलाया गया है जिस से कि बड़ा भारी रोज़गार किया जा सकता है—आराम और किफ़ायत के ख्याल से इसका काम बिजुली से होता है—इसका साहन मामूली विलायती ढङ्ग का है जिसमे हिन्दुस्तानी वजह का भी बन सकता है और जिसकी आकाक्षा है।, दो चार मिनट मे हाल दरियाफ़्त कर के मालूम कर सकता है कि इस व्यवसाय में कितना फायदा हो सकता है इस कारख़ाने में उत्तर की बढ़िया से बढ़िया गै। रक्खी गई है इन्सपेक्टर जनरल आफ एग्रिकलचर की भेजी हुई मान्ट गोमरी गै। जिससे बढ़ कर गै। कहीं नहीं होती यहा पर मौजूद है—इस कारख़ाने के सहन के बीच में एक छोटा सा स्वीडिस फ़ार्म हाउस है जिसके बनावट को दर्शक गण देख कर चकित होंगे।

कृषी विभाग का सब से बढ़िया दृश्य अनाज दिखाने के दो मकानो के उत्तर के तरफ झील में है—यह इस लिये बनाया गया है कि जिसमें दर्शको को पानी खींचने और नहर की काररवाई का पूरा परिचय हो जाय—और यहां पर यह भी दिखलाया जायगा कि किस तरहकाम करने से कितनी देर में कितना खेत सींचा जाता है—यहां पर के सब दृश्यों का वर्णन नहीं किया जा सकता है किन्तु

झील के उत्तर तरफ़ से चलने से बरथिन्गटन पम्प कम्पनी की तरह २ की कलै दिखलाई गई हैं उसी के पास पलसो मोटर पम्प कम्पनी का अद्भुत सामान है-हेटली और ग्रेशम के कारख़ाने के पम्प और इन्जन है-इम्पायर इन्जिनियरिङ्ग कम्पनी और मेकवेथ ब्रादर्स के कारख़ाने के बने हुये नहर के सामान के पम्प इत्यादि यन्त्र भी दिखलाये गये हैं।

डनकन स्टूटन के कारख़ाने का एक थोड़ा और दूसरा ज्यादा पानी खींचने का यन्त्र रक्खा गया है-मारशल सन्स एन्ड कम्पनी का गिवन पम्प काम करते हुये दिखलाया गया है जेसप कम्पनी के पानी भरने के "नोरिया" नामक हाथ के पम्प और 'तेगोरा' पम्प और पानी साफ करने और छानने के यन्त्र भी हैं।

टामसन कम्पनी के यहां के हाथ से चलाने के और वायु यन्त्र से चलाने के घरऊ और नहर के काम के लायक पम्प दिखलाये गये हैं-बर्न कम्पनी अलावा हाथ और चीज रोकने वाली मशीनों के हम्फ्री के बताये हुये ढङ्ग के पानी भरने की कल जिनका यूरप में बहुत मान होता है दिखलाया गया है-पास की चैाकी के पास रिचर्ड सन और क्रूडास के यहा की दो 'नोरियस' कल दिखलाई गई हैं एक तो बैल शक्ति से और दूसरी इन्जन से चलती है-और एक पम्प भी दिखलाया है-पश्चिम के तरफ अख़ीर में कृषी विभाग से भेजी हुई हाथ से पानी ले जाने वाली और बैल या इन्जन से खींचने वाले यन्त्र और पम्प दिखलाये है-कानपूर के एक मिस्त्री की बनाई हुई बलदेव बाल्टी जोकि बुन्देलखण्ड के 'छून' का उन्नति किया हुआ नमूना है-कृषी विभाग की भी हाथ में पानी ले जाने वाली चीज जिसका इस्तेमाल इस देश में बहुत है यहा पर रक्खी गई है और कानपूर के अनुभव करने वाले खेतो एक्सपेरिमेन्टल फ़ार्म में काम में लाई जाती हैं दिखलाई गई है-इन चीजों को हाल में खेतिहरो और जमींदारो ने बहुत मोल ले लिया है जिससे मालूम होता है कि लोग इसको पसन्द करते हैं-और इससे अच्छी हाथ से या बैल से खींचने लायक चीजै नहीं बनी हैं-इन चीजों का विस्तार में हाल जानने के लिये हर एक मुक़ामो के अफ़सरों से पूछना चाहिये॥

चीनी बनाने की कलें

रेल के ऊपर के पुल के बांये तरफ चीनी बनाने के कारख़ाने हैं-कई तरह की चीनी की कल नहर विभाग के पूरब की तरफ़ दिखलाई गई हैं-विलायत के ब्लेयर केम्बेल और मेकलीन के कारख़ाने की छोटी और पूर्ण यंत्र का दृश्य रक्खा गया है-देशी तरकीब से चीनी बनाने की तरकीब अच्छी नहीं है-इस यन्त्र में अब तक उन्नति की हुई चीजें लगाई गई हैं लेकिन इस में अभी ज्यादा ऊख की चीनी नहीं बनाई जा सकती-इन चीजों के ले जाने का इन्तजाम न होने से ऐसी मशीन कहीं काम में नहीं लाई गई जैसा कि और देशों के बड़े बड़े स्थान में हुई है और कुछ रोज तक शायद ऐसा ही और रहैगा-इस यंत्र में सब तरह के सामान लगे हैं और इस से २४ घंटे में १॥ टन चीनी तैय्यार होती है जिस में १५ से १८ टन तक के गन्ने की जरूरत होगी जो कि एक एकड में तैय्यार हो सकता है-इस से दिन व रात १०० रोज तक काम करने के लिये १०० एकड़ की जरूरत है-यहां के कई जिलों में इतना पैदा हो सकता है इस यन्त्र के साथ एक निपुण पुरुष भी आया है जो खुशी से इस का पूरा पूरा हाल बतावैगा इसी के बगल में हादी के चीनी के कारख़ाने के उन्नति किये हुये यन्त्र का नमूना दिखलाया गया है-यहा पर गुड़ और चीनी बनाने के यन्त्रों का जो बैल और हाथ की शक्ति वाले हादी के बनाये हुये यन्त्रों से चलाया जाता है दिखलाया गया है-इस तरह से चीनी का काम इन जिलो में बहुत होता है इस लिये यहा पर उस का पूरा हाल नहीं बतलाया जाता है विशेष कर जब वहा पर एक आदमी इस काम को समझाने के लिये मौजूद रहैगा-हादी के चीनी के कारख़ाने के सामने ब्राडवेन्ट एन्ड सन्स के बनाये चीनी गिरने के बरतन दिखलाये गये हैं।

राब से चीनी बनाने के लिये खांची की जगह पर इन बरतनों का इस्तैमाल सब से पहले हादी ने किया था और इस की नकल खंडसारियों ने जो अब तक पुराने ढङ्ग से चीनी बनाते हैं करली है-ब्राडवेन्ट एन्ड सन्स ने एक हाथ से चलने वाली थोड़े काम के लिये रोकने वाला यंत्र बनाया है और बैल से चलने वाली सेनट्रीफ्यूगल और भाप से चलने वाला राब पीसने का यन्त्र बिलकुल नया करके

दिखलाया है—हादी के चीनी के कारखाने के बगल में बन बिभाग में जाने वाली ट्राम गाड़ी की सड़क के उस पर एक खंडसारी पुराने ढङ्ग से काम करता हुआ मिलैगा—इन चीजों के दिखाने के लिये बरैली के लाला कालीचरन ने बड़ा उद्योग किया है—राब के साफ करने का एक बिलकुल नया तरीका दिखलाया गया है चीनी के कारख़ाने के पास के मैदान में बहुत बैल शक्ति के यन्त्रों के नमूने दिखलाये गये हैं जिनका वर्णन विस्तार में नहीं होसकता पुराने कोल्हू के स्थान में अब सब जगह लोहे की कल काम मे आने लगी है किन्तु अब तक सब से उत्तम मशीन काम में नहीं आई—हादी के कारख़ाने की कूटने की कल भी देखना चाहिये।

यहां की चीजें नाटिंघम के मेनलोव एलियर कम्पनी ग्लासगो के मेकलेन कम्पनी और क्रप कम्पनी के हैं—इस के चलाने के इन्जन ग्राव्सकाटन एन्ड कम्पनी मारशल एन्ड सन्स और रिचर्डसन एन्ड क्रूडास के यहां के हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि छोटी सी मशीन जो यहा पर दिखलाई गई है उसके काम में लाने से चीनी के काम में अच्छी उन्नति हो सकती है और जो रस बैल की चक्की के काम में ख़राब जाता है उस को तो सब लोग जानते ही हैं॥

पक्षी गृह

इस विषय में थोडे रोज से हिन्दुस्तान में हल चल मची है और इस में तो शक नहीं कि मौके के अच्छे होने से इस काम में अच्छी सफलता हो सकती है—करनल वार्ड के बनाये हुये पक्षियों के घर के नमूने यहां दिखलाये गये हैं और जोकि हिन्दुस्तान की हालत के लिये बिलकुल अनुकूल हैं—यह पक्षी विलायत से यहां पालने के लिये आये जिनको यहा की आब हवा बिलकुल माफ़िक़ होती है—ये देखने में अच्छे नहीं हैं किन्तु बडे काम की चिडियां हैं—यह चिड़ियां प्रदर्शिनी के बाद इस की उन्नति चाहने वालों के हाथ बेच डाली जायगी—उन क्यूबेटर होस (अंडा सेवने का घर) में अन्डे सेवने और फोड़ने का दृश्य सीसे के दरवाज़ों से दिखलाई देता है और इसके भीतर

आदमी नहीं जाने पाते क्योंकि वहां गरमी की जरूरत रहती है जो इन लोगों के जाने से नहीं रहैगी–ये सब चीजें कुक एन्ड सन्स और स्कैटस के कारख़ाने की हैं और–साइकिल हैंचिङ्ग कम्पनी के यहां के अंडा सेने के घर हैं जिनको साइकिल हेचर कहते हैं ॥

पालतू पशुओं का स्थान

पक्षियों के वास स्थान के बगल में युक्त प्रान्त के बहुत से पालतू जानवर रक्खे गये हैं और बहुतों की तसवीर रक्खी गई है–जिन पुरुषों का इन पर नाम लिखा है उनके हमबाधक है – इसके सामने के सहन में भेड के कई नमूने हैं जिससे मालूम होगा कि युक्त प्रान्त में इन से कैसी अच्छी नस्ल कन्धार की भेडों से जोड़ा लगाकर पैदा हो सकती हैं ॥

जानवरों की चिकित्सा

यहां पर एक निपुण डाक्टर के प्रवन्ध में पशुओं का चिकित्सालय है—यह थोडे में दिखलाया गया है कि जिसमें जिले की म्युनिसिपैलिटी के और छोटे २ जिमीन्दारी के मतलब का हो इस चिकित्सालय के फायदे दिखलाने के लिये रोज ७ से १० बजे तक सवेरे बाहरी जानवरों के चिकित्सा के लिये खुला रहेगा और थोड़ी सी फीस भी लीजायगी–जिन पशुओं के छुतहर बीमारी होगी वह यहां पर भरती नहीं किये जांयगे ॥

घोडे की नस्ल बढ़ाना

इस जगह पर अरब के घोड़े और खच्चर दिखलाये गये हैं जिनसे इन प्रान्त में इनकी नसल बढ़ाई जासकती है–यहॉ के घोडे और घोड़ियां सुपरिन्टेन्डेन्ट सिविल वेटरिनरी डिपार्टमेन्ट को लिखने से जिनके पास अच्छे २ घोड़े हैं मिल सकते हैं ।

यहां पर चिकित्सा सम्बन्धी विषयों के उन्नति किये हुये चिकित्सा का जिसमें उनके बीमारी के कीड़ों और काटने वाले कीड़ों का दृश्य है रक्खा जायगा ।

जब कभी मौक़ा लगेगा इन जानवरों के चीर फाड़ और टीका लगाने की तरकीब भी बड़े मैदान के सहन मे दिखलाई जायगी।

कृषी विभाग का डिमन्स्ट्रेशन ग्रौन्ड

झील और दूध मक्खन के कारखाने के पश्चिम तरफ़ वाली ज़मीन इस प्रदर्शिनी मे आये हुये हल मशीन और दूसरे २ यन्त्रो का काम करके पारी पारी दिखलाया जायगा-कृषी विभाग के प्रचार से और अनुभव से यह पता लगा है कि इन मशीन और नई तरकीब से काम करने से इस प्रान्त के अनाज और पैदावार मे अच्छी उन्नति हो सकती है-यहां के देशी हल से काम करने से बीज की खेतिहर की और पैदावार की दुरुस्ती नही हो सकी-इन हलो से ज़मीन भी जैसी चाहिये नही कटती है-कृषी विभाग के और विलायती और देशी कारख़ाने के बने हुये सस्ते और हलके हल यहा पर काम करत हुये दिखलाई पड़ेगे—अगर गरमी के दिनों में बग़ैर सिंचाव के जोतने का काम पड़े तो उसके लिये अभी हल नही तैय्यार है—यह अनुभव से मालूम हुआ है कि शुरू शुरू गरमी जब कि सीचने के लिये पानी मिल सकता है खेत जोतने के लायक़ हल बनाने की ज़रूरत है-जहां नहर वग़ैरः या सिचाई का इन्तजाम हो सकता है तहां पर कृषी विभाग के भेजे हुये मेजटन और वार वाले हल से अच्छा काम हो सकता है किन्तु जहा ऐसा नही है वहा नहीं हो सकता है कोआपरेटिव सोसाइटियो के प्रचार से अब बढ़िया और महगे हल भी लोग ख़रीदने लग गये है और इसी ख्याल से यहा पर बढ़िया और महगे हलो का काम दिखलाया गया है जिन में से कुछ तो ऐसे है जिसको कि खेतिहर नही ख़रीद सकते है लेकिन वह ज़मीन्दार जिनके पास ज़ोर है ज़रूर ख़रीद सकते है—इस बात का भी ख्याल रखना चाहिये कि बढ़िया हल शुरू में देखने मे तो महगे होत है—किन्तु आख़ीर मे उनके इस्तेमाल के ख्याल से सस्ते पड़ते है कृषी विभाग के दक्षिण पश्चिम के तरफ़ और बन विभाग से मिले हुये मैदान मे कूटने और ओसाने वाली कलो का काम दिखलाया जायगा—मारशल एन्ड सन्स रैनसम सिन्स जेफ़रीज़ और रिचर्ड गारनेट के कारख़ाने की भाप से चलने वाली कूटने वाली कलो का जिसमें भूसा निका-

लने का भी यत्र है उनके हिन्दुस्तानी एजन्टों द्वारा दिखलाई गई हैं- इसमें से निकाला भूसा यहा के भूसा से अच्छे होते है-यह भाप से चलाने वाली कलों का इन्तिजाम छोटे गांव में नहीं हो सकता और इसको सिर्फ बड़े जमीन्दार ख़रीद सकते हैं जहां गेहू और चावल बहुतायत से मिलते हैं-लेकिन हाथ और बैल से चलाने वाली मशीनों को तो मामूली आदमी ख़रीद कर सकते हैं-इस कूटने की मशीन का यह भारी फायदा है कि अनाज साफ और जल्दी बाजार में बेंचा जा सकता है-यहां पर ओसाने की कल दिखलाई गई है जिनका पंजाब और मध्य प्रात में बहुत प्रचार है और युक्त प्रांत में बहुत थोड़ा है हाथ के द्वारा अनाज से भूसा निकालना बड़ी दिक़त का काम है--इनके अलावा बर्न कम्पनी और जेसप कम्पनी के कारख़ाने की घास और चारा बाधने की भी कलें रक्खी गई हैं।

डच के खलियानों का नमूना

जहां बरसात में भी अनाज इकट्ठा रहता है कलकत्ते और ग्लास-गो की मेन कम्पनी ने दिखलाया है जिसका इस्तेमाल यहां के बड़े बड़े ज़मीन्दार कर सकते है--इसका ज्यादा हाल जानने के लिये इस कारख़ाने के प्रतिनिधि से पूछना चाहिये भाग्यवश अनाज लगे हुये खेतो का इन्तजाम नहीं हो सका जिसमें कूटने और ओसाने का काम दिखलाया जाता लेकिन एक आद रोज़ यहां पर सन का काम करके दिखलाया जायगा।

यहा पर कृषी विभाग के इन्सपेक्टर जनरल के बताये हुए सिलो यन्त्र का नमूना दिखलाया गया है जिसका अनुभव पूसा के कालिज में किया जा रहा है— यह बास के खपाचियो और गारे का बना हुआ है और सस्ते होने से इसका प्रचार अच्छी तरह किया जा सकता है।

नहर का विभाग

कृषी से नहर का बहुत सम्बन्ध है और यहां के खेतिहरो के बहुत मतलब का है और इसका स्थान झील के उस तरफ़ कृषी बिभाग के मध्य में है---यहां का सामान इस पुस्तक के लिखे जाने तक नहीं आया

था किन्तु इसमें कलों का नमूना नकशे और तसवीरें रहेंगी जिन से मालूम होगा कि युक्त प्रान्त के कृषी विभाग को इन यन्त्रों द्वारा कितना फ़ायदा हुआ--इन मशीनों का काम भी यहां दिखलाया जायगा।

इस संकीर्ण स्थान में यहा के दृश्यों का वर्णन नहीं हो सकता--इसका ज़्यादा हाल जानने के लिये कारख़ाने के प्रतिनिधियों से या एग्रिकलचर स्टाफ या इनक्वायरी आफिस से पता लग सकता है।

उन लोगों को पूरा पूरा हाल बताने का उद्योग किया जायगा--जिसके जानने से वह बहुत उत्सुक होंगे--अगर कोई गलती या कोई बात छूट गई हो तो इत्तिला देनी चाहिये जिसमे इसके द्वितीय संस्करण में शोधन हो जाय।

डब्ल्यू लेसली एण्ड कम्पनी कलकत्ता

धातुओं के सौदागर ।

स्ट्रकचरल एण्ड मेकेनिकल इनजीनियर

खेती विभाग



डब्ल्यू लेसली कम्पनी खेती पानी चढ़ाने की कलों की ख़ास तिजारत करती है और अत्यन्त उत्तम है और बहुत मेहनत बचाती है कृपा कर के देखिये ।

हर एक प्रकार के मेनुअल और पावर पम्प (हाथ और इनजन से पानी चढ़ाने की कल) जो सिंचाई, रेलवे और घर के काम में आ सकते है पाये जाते हैं ।

हाल की वनाई हुई कले जो पृथ्वी के जोतने के वास्ते मूल्य तत्व पर वनाई गई हैं जो हिन्दुस्तान के हालत पर ईजाद की गई हैं

हल, हेंगा, काटने की कल, मिल या पम्प के घोडे या बैलों का जुआ वगैरह ।

चारा काटने की कल, कल तैय्यार करने की मशीन, आटे की कल, चना दरने की कल, भूसी काटने की कल, डेरी और मक्खन वनाने की चीज़े वगैरह ।

औज़ार जो बाग़बानी के काम में आते हैं

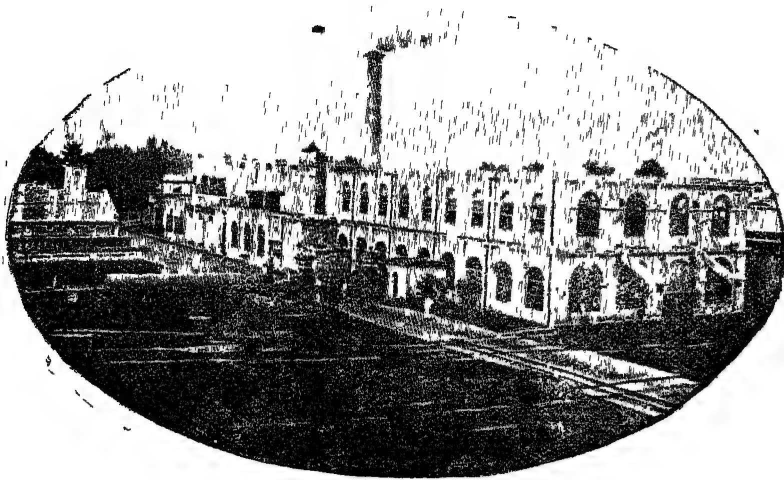
घास काटने की कल, बगीचे का रोलर आदि ।

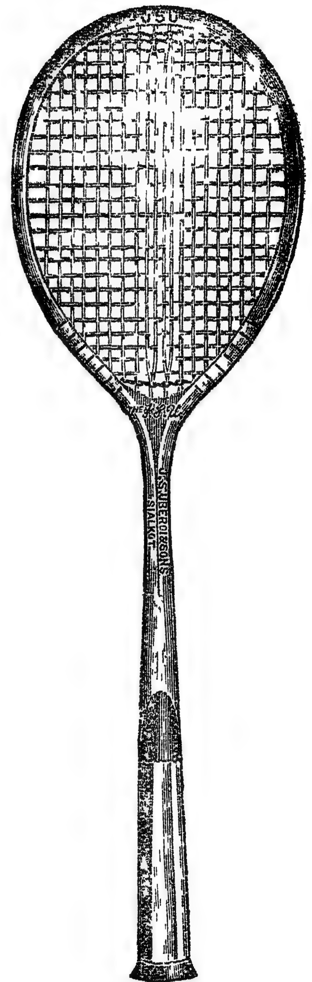
हम लोगों का ख़ास { पेटेण्ट पेटरोल पम्प, इनजिन हर एक कामों में आसकते हैं

इम्तिहान करने का वन्दोबस्त किया गया है

इनजीनियरिंग सेकशन में हमारी ख़ास बिलडिंग का मुलाहिज़ा करिये

N




J.S.UBEROI & SONS
SIALKOT

भाग चौदहवां

बन विभाग

प्रदर्शिनी के दक्खिन पश्चिम की तरफ़ बन विभाग का सामान ६ एकड़ में रक्खा गया है जमना के पूरब-मध्य और पश्चिम में तीन मकान हैं जिसके सामने के बडे मैदान में फोहारा लगा हुआ है—इन मकानों के पीछे एक तारपीन की भट्टी लकडी के गूदा काटने की ट्रामबे रोपने और लकड़ी के काम करने की और छोटी २ कलैं रक्खी गई हैं—बन विभाग की तीन इमारत भीतर से शालीमर पेन्ट कम्पनी ने सजाई हैं।

पूर्वी विभाग

इस भवन में ख़ास करके युक्त प्रान्त में पैदा होने वाली लकड़ियों का और दूसरी लकड़ियों का जो व्यवसाय के काम में आती हैं नमूना है—सब तरह की छिलका सहित लकड़ियो के पाच फ़ुट के नमूने हैं—और लम्बे २ बीच से दो टुकड़े कर दिये गये हैं जिससे उनका असली रंग और पालिस किये हुये रंग का मिलान हो सकै—यहां पर वैसी लकड़ियो के नमूने रक्खे गये हैं जिनका रंग लकड़ी में बदल जाता है—इसको देखने से बनाने के काम में आनेवाली लकड़ियों के हाल का पता लग जाता है—इन लकड़ियों पर नाम लिखे हुए तख़्ते इन्हीं लकड़ियों के बनाये गये हैं इन लकड़ियों के चौकोर टुकड़ों के काम भी रक्खे गये हैं जिसमे उन के वज़न का और लकड़ी का पूरा परिचय होता है।

बनस्पति विद्या उपयोगी यन्त्र भी इन्हीं लकड़ियों के बना कर दिखलाये गये हैं-४७ प्रकार के इन जगली फूल पत्तियों का दृश्य भी दिखलाया गया है-२८ किस्म के तो ऊपर की तरफ रक्खे गये हैं और बाकी इन्हीं चित्रों वाली लकड़ी के बक्स में रक्खे गये है-यह चित्र सागर के बन विभाग के अफसर के सह धर्म्मिणी मिसेज़ डि० ओ० विट का बनाया हुआ है।

मिलवर्ड साहब की तसवीरों को लखनऊ के लारी कम्पनी ने बढ़ा कर दिखलाया है-बहुत से बन को तसवीरों का और आलिवर साहब जैकसन, मिलवार्ड टूपसाहबान का और बाबू बसतीराम के दिये हुये चित्रों का बढ़ाया हुआ नमूना लखनऊ के लारी कम्पनी का और इलाहाबाद के मिस्त्री का बनाया हुआ काम है इस विभाग में बनी हुई चीजों का नाम यह है—

कलकत्ते के रिस्कवर्ट कम्पनी की मिन्टोकार इलाहाबाद के लसकम्ब कम्पनी, के कारखाने जो मजबूती तैय्यारी और वजहदारी के लिये विख्यात है का बनाया हुआ कमरे की सजावट का लकडी का सामान भी दिखलाया गया है-बहुत तरह के खेल तमाशे का सामान सियालकोट के झण्डासिंह उवरोई का गेंद बल्ले का और जमनास्टिक का सामान युक्त प्रान्त के बने हुये चुरुट रखने के बक्स दिन्दीगल के स्पेन्सर कम्पनी बरैली के मोहम्मद याकूब कम्पनी के लकड़ी का काम है-यहां के कारखानों से बॉस और बेत के कारखाने का काम भी आया है नगीने के मुरादबक्स और खुदाबक्स के कारखाने का लकडी में खुदाई का काम और जलन्धर के मोहम्मद रोशन के यहां के सीसम में लकडी के खुदाई का काम-भी दिखलाया गया-होशियार पुर का काम आत्माराम और नन्दलाल के यहां का सीसम के काम में हाथी दांत का काम दिखलाया गया है और बर्मा के सागवन के लकड़ी के काम का नमूना जोकि भाग बहू और माग ज्योगो का बनाया हुआ घण्टा रखने का स्टेन्ड है।

उत्तर की तरफ अखीर वाले अन्दरूनी कोठरियों को बरैली के मोहम्मद याकूबखां ने सजाया है-इस कमरे में दर्शकों को पढ़ने और आराम का मौका है।

बम्बई के आरमो और नेवी कोआपरेटिव सोसाइटी का बना हुआ गन बुककेस है जिस में बन बिभाग सम्बन्धी पुस्तकें रक्खी हुई हैं।

इस भवन के मध्य में ६० फ़ोट लम्बी जगहों में बहुत से शेर के चमडे रक्खे गये हैं-जिसमें से यहां के लेफ़टेनन्ट गवर्नर सरजान हिवेट के लेडी हिवेट और मिस हिवेट के फानथार्प और मध्य प्रदेश के क्लीव लैन्ड साहब के भेजे हुये हैं लाट साहब की शिकार की बढ़ाई हुई

तसवीर और ताजपूर के एस-ऐन-एसरीख़ की ५ तसवीरें यहां रक्खी गई हैं।

एक शानदार चीता जिसे नवाब उनैदुल्लाखा ने एक शीशे के बक्स में बन्द कर रक्खा है इस मकान का ख़ास दृश्य है।

इस इमारत के उत्तर तरफ़ काटन साहब के शिकार में पाई हुई चीजें रक्खी गई हैं दक्खिन की तरफ क्लीव लेन्ड साहब ने तीन भै से के सर भेजे हैं और फानथार्प साहब के चितकबरे हिरनों के नमूने है-पूरब के तरफ़ के मेरठ के मेस से दो बड़े काशमीरी बारहसिंघे चीते और तरह २ के आये हुये हिरन रक्खे गये हैं-पश्चिम की तरफ़ मेंकरी साहब के यहां के भैसों का नमूना है-बाक़ी सब चीजें आलीवर साहब की भेजी हुई हैं।

उत्तर की तरफ बाहर पीलीभीत के ख़लील रहमान और मन्ज़ूरन नबी के भेजे हुये ३ नैपाली साल के लट्ठे हैं-और फैरिंगटन साहब के दो बड़े चौकोर पिडौक जो अन्डमन टापू के हैं और बहराइच के लट्ठे खुदी हुई नाव है-पीलीभीत की बनी हुई दो गाड़ियां एक बोझे के लायक़ दूसरी आदमियों के लायक़ रक्खी गई है।

मध्य भवन

इस मध्य भवन में सिर्फ खेल की चीजें रक्खी गई हैं इसके दोनों तरफ वाले दो कमरों में बदूक और मछली फसाने इत्यादि के सामान रक्खे गये हैं-एक में कलकत्ते के लायन एन्ड लायन्स के यहां का बढ़िया विलायती बदूक़ आदि का सामान है-इसके ख़रीदने वालो को अपने लायक हथियार पसन्द कर मगाना चाहिये।

दो जगहों मे आलनबिक के हार्डी कम्पनी और दूसरा इलाहाबाद के लस्कम्ब कम्पनी का मछली फसाने का सामान दिखलाया गया है-इन के मकानों के अलग अलग दरवाजे हैं इस लिये दर्शक लोग इनके सामान को उजेरे मे अच्छी तरह देख सकते हैं-चौथे कमरे में एडन की मोडी कम्पनी की आई हुई मछलियों का संग्रह है—यह बहुत उम्दा देखने लायक है और यहा जाने के लिये दाम देना पड़ता है बम्बई के मरे कम्पनी का बनाया हुआ नमूने का जङ्गल है—पूरब की तरफ़ मे कुल यही है और यहां पर एक ज़िन्दा चीता हिरन और

तेंदुवे भी रक्खे गये हैं—छोटे २ जानवर भी रक्खे गये हैं मसलन एक बिलार दो तेंदुवे के बच्चे और बहुत सी चिड़ियां पेड़ पर रक्खी गई हैं—इसमें का चीता क्लीवलैन्ड साहब का है।

इसके बाद लायन एन्ड लायन का रोड्डा का और बालूर लाक के कारखाने का हर तरह का हथियार और बन्दूक दिखलाई गई है भोपाल के युवराज का भेजा हुआ भी दो हथियार है।

इस भवन की कई चीज एकता है–एक तो दुनियां भर में एकता साम्बर जिस की मूठ पचास इञ्च लम्बी और बजनी है–भूपाल के नवाबजादा उबैदुल्ला खां का भेजा हुआ है और दो गोड के सिर है एक तो हिन्दुस्तान में एकता है जिसको स्टेण्डन साहब ने भेजा है दूसरा युक्तप्रान्त में सब से बड़ा है जिसको ब्रून साहब ने भेजा है और खरीगर के कुवर प्रतापबिक्रम शाह का भेजा हुआ हाथीदांत है और आरबुथ नाट साहब का मारा हुआ दुनियां मे सब से बड़ा तेंदुवा है–यहां पर एक जोडे हाग-डियर (एक हिरन की जाति) के मूठ हैं जिसमें से एक तो वर्थुड साहब का मारा हुआ है–यहां के लाट साहब ने एक कशमीरी बारहसिंहा–दो गोड के सिर जिसमें से एक को मिस हिवेट ने मारा था–लेडी हिवेट और कुवर भारतसिंह के भेजे हये दो बने हुये भालू हैं जिनके ऊपर के महराब पर दो बिजली के लम्प जलते है रक्खे हुये हैं यहां पर पेड़ पर चढ़ता हुआ बनमानुष भी दिखलाया गया है लैंगबोर्न साहब के मन्सूरी के क्लिफर्ड वेटन के और जोधपूर के ओब्रन साहब के भेजे हये भैस के मूठ दिखलाये गये हैं—और निकलसन साहब का शिकार किया हुआ खेरी का बनैले भैसे का बना हवा मूठ रक्खा है–मेजर एन्डू का मारा हुआ एक गैड़े का मूठ ४८ नम्बर के पायनियर फौज का भेजा हुआ है।

फैजाबाद के अजायब घर से कई तरह के मगर और घड़ियाल आये हैं–इसमें से एक यही के लाट साहब का मारा हुआ है–यहां पर शोर साहब का शिकार किया हुआ एक मनुष्य भक्षी घड़ियाल दिखलाया गया है और उसके पेट में पाये हुये गहने भी रक्खे गये हैं।

यहां पर कपड़े के बनाये हुये बहुत से जानवर हैं जो बिलकुल सच्चे मालूम होते है।

और ८० प्रकार के भोजन को अन्न काल के समय में खाये जाते हैं दूसरे तरफ़ पेड़ों में से निकाली हुई गोंद राल और धूने का नमूना है-और दूसरी तरफ सनोवर कल के नमूने हैं जिस में गोंद निकलते और उन के इकट्ठा करने की तरकीब दिखलाई गई है-बन की शहद और मोम और बहुत तरह की जड़ी बूटियों का और पेड़ से निकाली हुई दवाइयों का नमूना है-खानिक पदार्थों का भी थोड़ा संग्रह किया गया है जिस में अबरख स्लेट और सुरमे इत्यादि हैं-और यहां पर खान के निकले हुये सोने की रेत और उनके तैय्यार करने की भी तरकीब दिखलाई गई है-यह रेत नदियों की तह में पाई जाती है और इस के तैय्यार करने में बड़ी मेहनत लगती है इस में दिन भर काम करने से एक कारीगर ।) का माल निकालता है और इस सबब इस के काम में उन्नति करने के चिन्ह नहीं दिखलाई पड़ते-इस के अलग करने के बाद यह थोड़े पारे में मिलादी जाती है जिससे यह बन्ध जाती है-जङ्गली पेड़ों से काटी हुई छड़ियों का बहुत अच्छा नमूना दिखलाया गया है—लकड़ियों के नमूने में से और दियासलाई के भी दिखलाये गये हैं- जो कि मध्य प्रान्त के अमृत मैच फैक्टरी की भेजी हुई है-ऐसाही सामान बरलिन की रोलर कम्पनी का और कानपुर की सदरलैन्ड कम्पनी का युक्त प्रान्त की लकड़ियों का बनाया हुआ बुरुश का नमूना है-कलकत्ता के स्माल इन्डस्ट्रीज डेवलपमेन्ट की भेजी हुई पेन्सिलों का नमूना है और उनमे काम में लाई हुई लकड़ियों का नमूना है और बनारस के खिलौने जिनपर लकड़ी का नाम भी लिखा है भेजे गये है-और बहुत तरह के लकड़ी के बरतन मोटे काम के कृषी सम्बन्धी पहाड़ और जङ्गल के औजार हैं-दियासलाई के सामान का दृश्य बहुत महत्व का है और इस में शक नही कि एक पुतली घर के बनजाने से दियासलाई का कारख़ाना अच्छी तरह से उन्नति कर सकता है और फ़ायदा भी हो सकता है-बनारस के खिलौने बनाने का और गढ़वाल के गेन्थी का कारीगर एक स्थान पर काम करता है जिस में दर्शक लोग स्वयं देखले कि यह काम किस तरह से बनते हैं-दक्खिन पश्चिम की तरफ़ बम्बई के आल सेन्टस कम्यूनिटी का बनाया हुआ बन की चीजो के गहने का समूह है यहां पर कई कारख़ाने की लकड़ियों को ख़राब होने से बचाने वाले रङ्गों के नमूने है—कानपूर के वेन्स साहब का भेजा हुआ एक तो सादा

और दूसरा रंगा हुआ लकड़ी का नमूना है-सादे को दीमकों ने खूब खाया है और रंगा भया अब तक अच्छा है यह दोनों टुकड़े साथ ही साथ जमीन में गाड़े गये थे—विलायत के पोकाक एन्ड व्यूशन ने जो जहाजी पल्टन के लिये रोगन देते हैं उसका नमूना यहा भेजा है और प्रदर्शिनी के सब यन्त्र इसी रोगन द्वारा रंगे गये हैं—यहा के मशहूर पलाडोनपेन्ट का नमूना भी दिखलाया गया है—बम्बई के कूपर कम्पनी ने सालिगमन से रंगा हुआ एक छोटा सा मकान दिखलाया है और कहते हैं कि दीमक के बचाव के लिये यह रंग बहुत अच्छा है इस कारख़ाने ने वन विभाग के लकड़ी के रंगने के लिये मुफ्त में यह रोगन दिया है इसका फल बहुत सन्तोष दायक हुआ क्योंकि पहले जिन लकड़ी को दीमक खाती थी इसके लगाने के बाद नहीं छुआ मिर्जापुर के मोरन कम्पनी का कलकत्ते के एन-गोलो ब्रादर्स का हैदराबाद के डी-एफ़-ओ का हाल का नमूना दिखलाया गया है—इसमें से बहुत अच्छे २ हैं और शीशे के वकस में रक्खे गये हैं—कानपुर के कूपर एलन का बनस्पतियों से बना हुआ नमूना जो चमड़ा और कपड़ा रंगने के काम मे आता है दिखलाया है—और पूरनसिह ने जो इम्पीरियल फारेस्ट केमिस्टर हैं ऐसे ही रंगों का जिनका वह अनुभव कर रहे हैं नमूना भेजा है।

कलकत्ते के यनड्यूल कम्पनी के यहां के कोयला का नमूना दिखलाया गया है-और तरह तरह के लकड़ी के कोयले का नमूना भी रक्खा गया है।

इस भवन वन विभाग में नये तरीक़े से इन्तजाम करने का तरीक़ा दिखलाया है इन से नुक़सान होने की सम्भावना और उनसे बचने के उपाय और लकड़ी निकालने और लादने की तरकीब बतलाई गई है-अक्सफ़र्ड के फ़ारेस्ट स्कूल का इन्तज़ाम करने का नक़शा और वन विभाग के चित्रो का नमूना जिसको लखनऊ के लारी और इला-हाबाद के मिसतरी कम्पनी ने बढ़ाया है दिखलाया गया है।

लादने और भेजने की तरक़ीब का नमूना छोटे २ पुल गोले और सूखे मार्गों और गाड़ियों के मार्ग द्वारा बतलाया गया है डेकाविल कम्पनी की भेजी हुई ट्राम गाड़ी का नमूना पोलीग कम्पनी की रास्ते की रस्सी भी दिखलाई गई है।

उत्तर पूरब के कोने के तरफ़ कलकत्ते के अजायब घर से आये हुये सांप, चूहे, मछली, कीडे और बिच्छू वगैरह दिखलाये गये है-एक अलमारी मे रक्खी हुई बोतलों में जिन्दा मछलियां है-और इस तरफ़ के आखीर के खम्भे मे बड़े घड़ियाल का मुह है और उसके पेट से निकाले हुये गहने हैं।

पूरब के तरफ तून की लकडी का बनाया हुआ चौखटा रक्खा है जिससे लकड़ी की उम्दगी मालूम होती है-इस के चौखटे में तरह तरह की लकड़िया लगाई गई और बन के दृश्य और काररवाई की तसवीर दिखलाई गई है बहुत सी और तसवीर हैं जिसको लारी कम्पनी और मिस्तरी ने बनाया है और बहुत सी तसवीर ते रुड़की कालिज की है-बोटैनिकल यन्त्र उसी पेड़ की लकड़ी के बनाये गये हैं जिस पेड़ के काम के ये है।

पश्चिम की तरफ़ बम्बई के मरे कम्पनी का सजाया छोटा सा दृश्य है जहां पर महाराजा रीवां के भेजे हुये तीन चीते रक्खे हुये हैं जिस में एक नर और एक मादा अपने घर को हमला करने वालों से बचा रहे है-इस मकान के सजावट में दीवालों पर हर तरफ़ तरह तरह के सींघ लगाये गये हैं-दक्खिन के तरफ़ भैसे चितकबरे हिरन साम्बर के हैं उत्तर की तरफ़ लखनऊ के अजायब घर से भेजे हुये भैसे काश्मीरी बारहसिघा तिब्बत के हिरन इत्यादि हैं-पूरब के तरफ़ कूच बिहार के महाराजा के भेजे हुये भैंसे की क़िस्में हैं और दूसरी दिवालों और कोठरियों में शिकारियों की चीजें हैं।

बीच की तरफ ३० फ़ीट लम्बे परदे पर तरह २ के शेर के चमड़े हैं-इस में से फ़ानथार्प और क्लीवलैन्ड साहबों और महाराजा कूंच-बिहार के हैं-उत्तर पूरब के कोने में कानपूर के बेग सदर लैन्ड कम्पनी का सजाया हुआ कमरा दर्शकों के आराम के लिये बनवाया गया है-जहां इन चीजों के देखने से थकने वालों को आराम मिले॥

तारपीन की भट्ठी

इस स्थान से राल और तारपीन अलग करने का तरीका बतलाया गया है-यह यन्त्र नैनीताल भुवालीक भट्ठी का है॥

कागज़ के गूदे का हाल

इस स्थान पर लकडी घास और दूसरे बनिज पदार्थों से कागज बनाने के काम को दिखलाने के लिये बनाया गया है-इस जगह पर इनको अलग २ करके जाचने का और इन के माद्दे को दरयाफ़्त करने का और इस गूदे की लकड़ी बनाने का काम व्यवसाय के लायक बडी मशीन से कर के दिखलाया गया है।

काठ का काम बनाने की मशीन

यहां की सात कलें विलायत के किर्चेनट कम्पनी की बनाई हुई हैं-और कलकत्ते की अहमती कम्पनी मे मिल सकती हैं-इन के नाम यह है—

सफ़री आरे की बेन्च
मामूली गोल आरे की बेन्च
बेञ्च आरा
लटकने वाला आरा
लकड़ी काटने की
नकशा बनाने और ढालने की
पत्थर चढ़ाने की मशीन

दूसरे व्यवसाय

मेशीन के सहन के बाद खैर से कथ्था बनाने की कल दिखलाई गई है और कई तरह के खुदाई का—कन्घी, दरियां, चटाई, रस्सी, बांस, बेत और लकड़ी का सामान भी दिखलाया गया है-फिर महाराजा रीवां की लाह की कोठी का जिसमें बहुत शिक्षा प्रद चपरा का व्यवसाय होता है भेजी हुई चीजें हैं।

यहां पर एक जोड़ा हाथी दांत जिन में घन्टे लटकते हैं दो हाथी के पैर और घड़ियाल भी रक्खे गये है—यहां पर काटन साहब की छोटी चीजें मसलन मेनूहोलडर काकोडाइल सिगार और सिगरेट के बक्स है—यह स्वेत हाथी का दांत जोकि साप काटने से मर गया था नैनीताल से लाट साहब ने गवर्नमेन्ट हौस से भेजा है।

बहुत से चमड़े साफ करने के कारख़ाने से आये हैं—बम्बई के मरे कम्पनी, बानइन्गन और मैसूर के बानइन्गन एन्ड थिपेवाल देहरादून के वरो आफ़ साइन्टिफिक टेक्सीडरमी विलायत के पेटर स्पाईसर के भेजे हुये जानवरों के चमडे को खाल के सामान हैं—पेटर स्पाईसर के कारख़ाने के अच्छे चमडे के सामान—बानइन्गन एन्ड बानइन्गन के यहां से भेजा हुआ पहाडी चित्र का दृश्य है—देहरादून के कारख़ाने के भी चमडे देखने लायक हैं—यहां पर और बहुत किस्म के चमड़े हैं।

कानपूर के शेवन कम्पनी के घडियाल के चमडे भी हैं—और एन-डवल्यू-टेनरी कम्पनी का बना हुआ घड़ियाल के चमड़ों का बेग ड्रेसिङ्ग केस, कार्ड केस इत्यादि बेचने के लिये रक्खे है।

यहाँ पर लखनऊ के टामसन साहेब युक्त प्रान्त की पुलिस के राईट साहब और नेदरसोल साहब के शिकार किये हुये साम्बर के मूड़ हैं यह सब सजाये हुये बड़े खूबसूरत चमडे हैं किन्तु नेदरसोल साहब वाला मूड के मोटाई के सबब से भद्दा मालूम पडता है—क्रूटर बक साहब के शिकार किये हुये चीते का जडा हुआ मूठ है—यह बड़े खूबी से तैय्यार किया गया है यहां पर कई काले हिरनों का मूठ है और इस में एक चित्राल जाति वाले हिरन का बड़ा खूबसूरत और बराबर मूठ है जिस को देहरादून में फ्रेसर साहब ने मारा था—बहुत से छोटे छोटे जानवर मसलन गारेल—कस्तूरी हिरन, खाकड़ और चौकेड़ इत्यादि के मूड़ हैं यहां पर एक खाकड़ ग्यारहवे राजपूत प्रेस का भेजा हुआ है।

यहां पर बम्बई के मरे कम्पनी ने एक पड़वा दिखलाया है जिसके दो मूड़ हैं और भूपाल के युवराज का भेजा हुआ काले हिरन और हरनो का मूड़ जिस को सींघ घूमी हुई है दिखलाया है और यहां पर एक सब से अद्भुत चिताल जाति हिरन का मूड़ रक्खा गया है जिस में बजाय ऊपर के नीचे के तरफ सींघ हैं और जिस को सींघ की तरफ़ देखने से यह मालूम होता है कि यह दोगला है।

इलाहाबाद के गिल साहब का भेजा हुआ दो वक्स अन्डा भी हैं और पूसा से बीस वक्स में कीडों के नमूने आये हैं—यह यहां पर बहुत अच्छी तरह सजाये हुये हैं और शिक्षा प्रद ही नहीं हैं बल्कि मनोहर है क्योंकि सब तरह के कीडे दिखलाये गये हैं।

पश्चिम विभाग

इस भवन में छोटी २ जङ्गली चीजो की पैदाइश दिखलाई गई है कलकत्ते के अहमती कम्पनी की बनाई हुई कई तरह की रस्सिया दिखलाई गई हैं-और बहुत तरह की रस्सियां अहमती कम्पनी गेन्जेस रोप कम्पनी और प्रदर्शिनी के बन विभाग के बनाई हुई दिखलाई गई है कि जिस से यह मालूम होगा कि काम में आने वाले रेशों के सिवाय और कौन रेशे काम में आ सकते हैं-बेत और घासों के चुने हुये नमूने और उन से बनाई हुई दोरिया और चटाई दिखलाई गई हैं-हिन्दू और अंगरेजी ढङ्ग के बनी हुई बहुत तरह के बास के टका नमूना है यह यहां बहुत आसानी से बनाई जा सकती हैं और दूर देश में फल भेजने के काम में आसकती है-फ़र्श के वास्ते चटाई कई रेशो से बनती हैं जिन के बनने का काम दर्शक लोग यहा देख सकते हैं-विलायत में बनी हुई ढङ्ग की कल की दोरियां दिखलाई गई हैं-ये लकड़ी के बहुत महीन धागों से स्ट्रावरी बासकेट के नमूने की बनाई जाती है और एक बक्स मे ४ से ८ तक रक्खी जाती है--यह प्रदर्शिनी मे चलती हुई कल से बनाई जाती है--अगर एक दफे भी इस का प्रचार हो जाय तो तरह २ की बासकेट बनने लगें जो बेर बेर काम में आ सकती हैं और जिन मे दूर २ सुगमता से फल भेजा जाता है—

अलमारी में सजाये हुये बन बिभाग के छोटी २ चीजों का नमूना है--बन बिभाग के भोज्य पदार्थ के दिखलाये गये हैं।

लिपटन की खालिस हिन्दुस्तान की चाय

लोग चाय क्यों पीते हैं ?

पानी के सिवाय जितनी पीने की चीजें हैं, उन सब में सस्ती चाय है। इस के पीने से फायदा यह है, कि बुखार या और कोई बीमारी नहीं होती है। मैला पानी जो लोग अकसर पीते हैं और जो कुल बीमारियों की जड़ है, उस से बहुत ही बेहतर चाय है। इसके पीने से बदन में ताक़त और फुर्ती आती है। बर्षात के दिन में जब आदमी अपने काम से छुट्टी पाकर घर लौटते हैं, उस समय यदि वे एक प्याली चाय पीलें तो बुखार उनके पास कभी नहीं आ सकता। यदि लोग प्रातःकाल चाय बनाकर अपने साथ दफ़्तरों या कारखानों में लेते जायँ तो यह न बिगड़ेगी। यह एक ऐसी चीज है, कि गरमी और जाड़े दोनों मौसिमों में बहुत ही आनन्द के साथ पी जा सकती है।

चाय पीने से दिल और दिमाग दोनो दुरुस्त रहते हैं, थकावट और सुस्ती दूर हो जाती है, दिल की उदासी छूट जाती है, औघाई नहीं आती, मिजाज़ खुश रहता और दिल में पूरी ताक़त आ जाती है।

चाय हिन्दुस्तान भर के पीने की चीज़ है

यह हिन्दुस्तान में पैदा होती है और हिन्दुस्तानी ही इसे तैय्यार करते है, इस लिये सब भारतवासियों को चाहिये, कि इस को सर्वदा पिया करें और इस प्रकार इसकी सहायता करें।

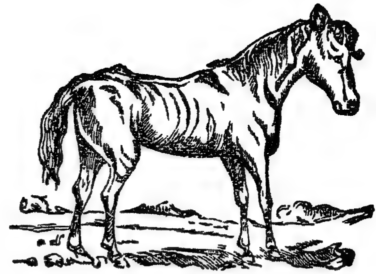
लिपटन की चाय

केवल हिन्दुस्तान की चाय है

क्या आपने कभी लिपटन की चाय पी है? यदि न पी हो तो एक बार लिपटन के मण्डप में आजाइये और एक प्याली चाय पी जाइये।

पढ़ो-पढ़ो-आठवां अजायब

दुनियां भर में सात अजायबात हैं—इनमें एक और मिलाया तो आठ हुये-उन आठ में से दो आगरे में हैं-यानी सब से अव्वल अजायब ताज महल है और दूसरा अजायब जान्स कन्डीशन पौडर-(यानी सफूफ है) अब जिन साहबों के पास ऐसा घोड़ा है कि लागर वा कमजोर और बीमार जैसी यह तसवीर है-और वे साहिब चाहें कि वह मोटा ताज़ा और मजबून और चाक वा चुस्त हो जाय तो उन्हें चाहिये कि जान्स कन्डीशन पौडर का इस्तैमाल करें।



Before Using John's Condition Powder.

और कुछ दिन के इस्तेमाल के बाद तुम देखोगे कि तुम्हारा घोडा मोटा ताज़ा और तवाना मिस्ल इस घोड़े की तसवीर के हो जायगा और उस को देख कर तुम खुश होगे वाकई दुनिया में घोड़ों और दूसरे जानवरों के लिए जान्स कन्डीशन पौडर आठवीं अजूब चीज है यह जान्स कंडीशन पौडर हर जगह फरोख्त किया जाता है इसके गुमाशते बम्बई व कलकत्ता व मदरास व रंगून व सीलोन और सब बड़े २ शहरों में हैं गुमाशतो की फेहरिस्त पायनियर अखबार में मुलाहिजा करो और खास आगरे में कोआपरेटिव स्टोर्स रेहना एण्ड कम्पनी और बलदेवदास एण्ड कम्पनी के यहां बिकता है-कीमत फी टिन २) रुपये।



After Using John's Condition Powder.

भाग पन्द्रहवां

बेलकम क्लब

यह बात तो स्वाभाविक ही है कि जब दर्शक प्रदर्शिनी की सब चीजों को देख कर के तारीफ कर चुकैं गे तो उनका मन खेल तमाशे देखने का होगा–इसके लिये उन को निराश भी न होना चाहिये क्यों कि यहां कैसा ही पसंद का आदमी हो सब के देखने लायक खेल तमाशों का इन्तिजाम भया है–इस कार्य के पूरा करने में कि जिस में सब आदमियों के लायक तमाशा का इन्तिजाम हो कोई बात उठा नहीं रक्खी गई है–ग्रोर देखने वालों को इस बात का तरद्दुद होगा कि इतने तमाशों में से किस को देखैं।

बेलकम क्लब का उद्देश्य यह है कि पूरब ग्रोर पश्चिम के लोगों में मेल करने का यत्न करैं हिन्दुस्तानी ग्रोर अङ्गरेज जो यहां के नियमों का पालन करैंगे मेम्बर हो सकते है––यहां जस्टिस बनर्जी के सभापतित्व में एक सभा नियत की गई है जिस के तीन अवेतनिक सेक्रेटरी हैं–इलाहाबाद क्लब के इण्डियन क्लब के ग्रोर ग्रोर नामी क्लब के मेम्बर यहां पर भी सभासद बगैर नामजदगी से हो सकते है–ग्रोर दूसरे आदमी तीन सभासदों के या सभापति के नामजदगी से मेम्बर हो सकते हैं इस खण्ड में दो भवन हैं एक तो बेलकम क्लब ही ग्रोर दूसरा लेडीज एनेक्स जो कि जमना के किनारे पर है–ग्रोर जिस का स्थान अद्वितीय है प्रदर्शिनी के फाटक के ख़ास सड़क के अख़ीर में है–ग्रोर इस के हिन्दू ढङ्ग की बनावट ग्रोर सजावट के सबब से प्रदर्शिनी दूसरे के मकानों से निराले ढङ्ग की है–भीतर के फूल पत्ती का सजावट का काम दिल्ली आगरा के मुसलमानी इमारतों की नक़ल है—यह पेचीले काम बहुत बढ़िया हैं ग्रोर अच्छे रंगों के है जो रात के समय जलने के सबब से बहुत खूबसूरत मालूम होते हैं–इस कमरे के बीच मे आसलर कम्पनी के मशहूर कारख़ाने का भेजा हुआ लम्प है।

यह भवन नदी के ऊपर बना है– जहां छत्त बनी है जिसपर चाय पन पिआव का इन्तज़ाम है–यहां पर एक शामियाना जिससे दिन में

तो सूरज से और रात में ओस से बचाव होगा टँगा है-यहां पर जमुना का दृश्य तो अपूर्व ही है-यहां पर देखने से जमुना पर का ईस्ट इन्डियन रेलवे का पुल और जमुना की धारा जो गङ्गा के सङ्गम के लिये जाती हुई अकबर बादशाह के किले में जहां कि एक बड़ा तोपख़ाना और फौज रहती है-टकराती हुई दिखलाई पड़ैगी—क्लब के भीतर हिन्दू मुसलमान और अङ्गरेजों के लिये अलग २ खाने का इन्तिजाम किया गया है क्लब के दूसरे भाग में लेडीज एनेक्स है थोड़ा आगे जमुना पर बना है-यह स्थान यहां पर बहुत रेल के प्रचार के पहिले का जब इलाहाबाद से कलकत्ते तक अग्निबोट चलता था-तब का है घाट पर बना हुआ है-इस में स्त्रियां अपनी सहेलियो को भोजन करा सकती हैं-इसके भीतर बाहर के वानडर लिक आर्ट के सजावट का काम कलकत्ते के ईविङ्ग कम्पनी को सौंपा गया था और इसके सामने हिन्दुस्तान भर में बढ़ कर प्रिन्स आफ़ वेलस के गुरखा पलटन का मधुर बाजा बजैगा-यहा के सभासदों को और उन दोस्तों को अंगरेजी ढंग से भोजन कराने खिलाने पिलाने का इन्तिजाम किया गया है यह क्लब इलाहाबाद में आने वालों के लिये बड़ा दिलचस्प होगा-और उन लोगों के बडे सुबीते का होगा जो प्रदर्शिनी का दृश्य रात में देखा चाहते या थियेटर और आतशबाजी देखना चाहते हैं-इस से शहर में बेर बेर आने जाने की दिक्कत न होगी-और यहां दर्शक लोग दिन भर आराम से ठहर सकते हैं-इस पुस्तक में लगी हुई सूची में यहां के किराये और नियम का उल्लेख किया गया है ॥

हवाई जहाज़ का उड़ना

एशिया और पूरब भर में सब से पहले इसी प्रदर्शिनी में हवाई जहाज उड़ाने का सौभाग्य होगा-पिकट और डेवीज साहब हमेशा के उड़ने वाले विलायत से बुलाये गये हैं और प्रदर्शिनी भर के समय में हर हफ़्ते में उड़ा करेंगे-बड़े दिन के मौके पर बहुत प्रतिष्ठित लोग उड़ेंगे-मिर्ज़ापुर वालों ने उस उड़ने वाले को जो बग़ैर रुके हुये इलाहाबाद से मिर्जापुर तक जायगा तीन हजार का इनाम देने कहा है आशा की जाती है कि हिन्दुस्तान के और आदमी भी उड़ने के लिये

इनाम देंगे जिसमें इस हुनर की हिन्दुस्तान में तरक्की हो और विलायत वालों के मुकाबले की चीज़ तैय्यार की जाय ॥

उड़ने की मुख्य २ बातें पूरी हैं जैसे कि उड़ने की जगह हवा और गर्मी का ठीक इन्तिजाम है-शायद इसका दृश्य हिन्दुस्तानी और अंगरेजों को सामान्य रूप से रोचक होगा।

हिन्दुस्तान का कोई जमाव बगैर पोलो के खेल को पूरा नहीं है और इस प्रदर्शिनी में यह आशा है कि आल इण्डिया पोलो टूरनामेंट का खेल बहुत उत्तम होगा-इस पुस्तक के छपने के समय तक कोई जगह ठीक नहीं हुई थी किन्तु इस के लिये जगह बहुत अच्छी तैय्यार होगी—यह टूरनामेन्ट हाल में हुये वालों से अच्छा होगा-इसमें निम्न लिखित १२ कम्पनियां शामिल होंगी ॥

(१) राइफेल ब्रिगेड -कलकत्ता
(२) आठवी हुसार वाले-लखनऊ
(३) सातवीं लेन्सरस-मीरठ
(४) रायल ड्गून-मथुरा
(५) दसवां हुसार-रावलपिन्डी
(६) इङ्गिसकिलिङ्ग डेगून-मऊ
(७) सेन्ट्रल इन्डिया हार्स-गुना
(८) केप्टन वैरेट की टीम
(९) महाराजा पटियाला
(१०) महाराजा जोधपुर
(११) महाराजा किसनगढ़
(१२) जेवरा के नवाव

प्रदर्शिनी सभा से सब से जीतने वाले को १५००) रुपये का विलायत के गोल्ड स्मिथ्स एन्ड सिलवर स्मिथ्स कम्पनी का बनाया हुआ प्याला इनाम में दिया जायगा-और दूसरा इनाम पालनपूर के राज कुमार नवाबज़ादा तालेमोहम्मद ख़ां ने देने कहा है-टीम के नामों को देख करके यह आशा होती है कि यह पुराना खेल बहुत तारीफ़ी होगा।

जनवरी महीने में कानेल कप के लिये प्रदर्शिनी भूमि में पोलो का दूसरा टूरनामेन्ट होगा-यह टूरनामेंट भी बड़े की तरह दिलचस्प होगा।

दंगल

कुश्ती का हुनर जितना हिन्दुस्तान में चढ़ा वढ़ा है उतना दुनिया भर में कहा नहीं है सो इलाहाबाद में जो पहलवान आवेंगे वह दुनिया भर में सब से वढ़िया होंगे-यह यहा का जातीय खेल समझा जाता है और इन लोगों को अमरीका और यूरुप के पहलवानो से कुछ सीखना नहीं है—बहुत पुराने ज़माने से यहां कुश्ती का खेल होता है—जो गुरू के द्वारा शिष्य को सिखलाया जाता है-शायद जापान का कोई उत्साहवाला यह कहे कि जिउजितसू बहुत से दांव पेच कुश्ती वालों को बता सकता है-लेकिन इस खेल के दाव पेच यहा के पहलवानो को मालूम हैं-उसमें यह बात है कि यह दाव पेच बेइमानी के ख्याल से काम मे नहीं लाये जाते यह पहलवान इन सब दाव पेचों को जरूरत के वक़् काम मे लाते हैं किन्तु इन जिउजिटसू के अध्यापकों की तरह नहीं कर सकते जोकि हमेशा से यही सीखते है यह वात सत्य है कि उत्तर हिन्दुस्तान मे जिउजिटसू विद्या का प्रचार था-इसका नाम बिनोत था और अब तक देशी रजवाड़ो में काम काज पर विनोतियो का हुनर दिखलाया जाता है गत शताब्दी में इस विद्या का यहा से लोप हो गया और रुहेलखड मे दो एक बिनोती अब तक है-दगल के सम्बन्ध मे यह भी कह देना ठीक है कि यहां के कसरत का ढंग भी बहुत अच्छा है—और पूर्ण रूप से होती है-जब हिन्दुस्तानी पहलवान अखाडे में आते हैं तो उनमे रोकने का अच्छा साहस होता है उसके सावूत के लिये लाहौर के जवान पहलवान गामा का हाल पढ़ना चाहिये इस ने अमरीका के डाक्टर रोलर को बहुत आसानी से पटक दिया इसकी जवीस्को से जोकि दो बरस से दुनिया का मशहूर पहलवान समझा जाता था दो घण्टे २० मिनट तक कुश्ती हुई-गामा उसको पटक तो नहीं सका किन्तु उसका कुश्ती में दर्जा और हालत बहुत अच्छी थी इस कुश्ती का इनाम गामा पहलवान को दिया गया क्योंकि

जविस्को नियत दिन पर नहीं हाजिर हुआ-गामा जब यहां से गया था तब उसका नाम पंजाब के बाहर लोग नहीं जानते थे और वहां इससे अच्छे लड़ने वाले पहलवान भी हैं-इस बात का निर्णय इस प्रदर्शिनी मे किया जायगा कि हिन्दुस्तान में सब से बढ़ कर पहलवान कौन है—प्रदर्शिनी भर में बराबर दंगल होंगे—लेकिन-२६ से ३१ तारीख़ का दंगल जिसमें यह तय किया जायगा कि हिन्दुस्तान में सब से बढ़ कर पहलवान कौन है बहुत उम्दा होगा-अलावा बहुत से इनाम के दो गुर्ज हिन्दुस्तान और युक्त प्रान्त के सब से बढ़ कर पहलवानों को दी जायगी युक्त प्रान्त के पहलवानों के उत्साह के लिये गुर्ज रक्खा गया है-इसके पुनरुद्धार का यत्न होना चाहिये क्योंकि यहा की पहलवानी का हुनर नाश होता जाता है-अब बढ़िया पहलवान सिर्फ़ पञ्जाव से आते हैं-इस प्रान्त के मथुरा के चौबे कानपुर लखनऊ खुरजा आगरा इलाहाबाद और बनारस में पहलवान होते हैं लेकिन और जिलो में बहुत कम कुश्ती के अखाडे हैं-पहले कुश्ती के दगल शहरों मे होते थे जिससे इस हुनर वालों को उत्तेजना मिलती थी और खूब कसरत होती थी और यह आशा है कि इस प्रदर्शिनी के दगल के उत्साह से हर शहर और गाव मे कुश्ती के अखाड़े खुल जायगे-इन इनाम वाले दंगलो के अलावा बहुत सी अच्छे २ पहलवानो की कुश्ती होंगी और जो रुपये और मेहनत के कारण से अच्छा दगल हो सकता है किया जायगा—दगल देखने के लिये बैठने के इन्तजाम राजे महाराजे और रैय्यत के लायक सब तरह का किया गया है-अखाड़े मे जगह कम है और जिन लोगों को अच्छी जगह लेना हो वह दंगल के अवैतनिक सेक्रेटरी के पास लिख करके जगह रिजर्व कराना चाहिये जो बड़े दिन के दगल के कुश्ती के लिये इन्तज़ाम कर रहे हैं।

स्पेशल रिसर्वड की सीट ३०) में रिजर्व हो सकती है मामूली दर्जे के ५) रु०-२) रु० और १) रु० और ॥) के टिकट मिल सकते हैं-अगर बहुत भीड़ होगी तो ॥) का दाम भी १) कर दिया जायगा दंगल को देखने के लिये ख़ास दरवाजे के टिकट लेने की जरूरत नही है क्योंकि इसके प्रवेश का बाहर से इन्तजाम किया गया है-ख़ास फाटक के पूरब के तरफ़ इस दगल का दरवाजा है-जिस को पसन्द हो वह प्रदर्शिनी के तरफ़ वाले फाटक से जा सकता है-दंगल हर रोज एक बजे

शुरू होगा-वही साहबान इसके पञ्च बनाये जांयगे जो इस हुनर में अच्छा दख़ल रखते हैं और जिन पर पहलवानों का भी विश्वास है।

मुक्के बाजी का टूरनामेन्ट

यह टूरनामेन्ट हर साल जेनरल मेकमहोन साहब के प्रयत्न से जो कि लखनऊ के आठवें डिविजन के अफ़सर है होता था किन्तु इस साल उन्होंने बड़े उदारता से यह हुक्म दिया है कि अब को साल यह दगल इलाहाबाद में प्रदर्शिनी के अवसर पर किया जाय-इस टूरनामेन्ट में अफसर नानकमिशेन्ड अफ़सर और स्थायी वालन्टियर के फ़ौज के आदमी शामिल हो सकते हैं इसके इनाम के लिये लाक एलिअर की मशहूर बेल्टस रक्खी गई है-यह तीन तरह की है एक तो मिडेल वेट को दूसरी लाइटवेट का और तीसरी फेदरवेट वालो के वास्ते।

इन के जीतने वालों को इख़्तियार है कि वे इस को एक साल तक अपने पास रक्खे—यह इनाम लेफटेनन्ट जनरल लाक इलियर साहब ने रक्खा है जब वह आठवे डिविजन के अफ़सर थे इस का अभिप्राय हर तीन महीनो में इस टूरनामेन्ट करने का था—जेनरल लाक इलियर ने जीतने वाले को माहवारी इनाम देने कहा था—मौसिमी हालत की ख़राबी के वजह से इस टूरनामेन्ट का साल में एक ही दफा करने का निश्चय किया गया—जेनरल लाक इलियर के हुकूमत छोड़ने के बाद जो टूरनामेन्ट हुआ उस मे यह तै किया गया कि इस इनाम को जीतने वाला हमेशा रक्खे—इस टूरनामेन्ट में बड़ी सफलता हुई और इस के रुपये से यह तीन इनाम असिल अफ़सर के नाम से रक्खे गये हैं उन के बाद मेजर जनरल स्क्रेटर और महोन साहब जो आज कल अफसर हैं इस सालाना टूरनामेन्ट की उन्नति और सफलता करने में बहुत प्रयत्न किया है।

गत दो तीन वर्षों में इस टूरनामेन्ट के लिये हिन्दुस्तान के सब भागों से आदमी आते हैं जिस में इस मशहूर इनाम के लिये मुकाबला होता है इस बेल्ट में देने वाले अफ़सर का नाम खुदा रहता है और जिस पलटन का आदमी इस को जीतता है उस के अफ़सर के यहां ये भेज दिया जाता है वहां पर यह टांग दिया जाता है जिस से और लोगों के शामिल होने को उत्तेज़ना होती है इस बेल्ट के अलावा

जीतने वाले को सोने का एक तगमा और १५०) रुपया दिया जाता है और दौड़ने वाले को ७५) दिया जाता है लाक इलियर के वेल्टस के अलावा हेवी-मिडल और लाईट वेट्स के अफ़सरों में से जीतने वाले को प्रदर्शिनी की तरफ से एक खूबसूरत चांदी का प्याला इनाम में दिया जावेगा-नान कमिशन्ड अफसरों के लिये और लड़कों के लिये भी इनाम तजवीज किये गये हैं अगर इस में ज्यादा लड़के शामिल हुये तो उन के वेट के अनुमार दो विभाग किये जांयगे—बहुत से अच्छे लड़ने वाले भी इन लड़को में हैं यहां पर देखने वालों के बैठने के लिये बहुत अच्छा प्रबंध जिया गया है—इस अखाड़े में विजली की रोशनी जलाई जायगी और तमाशा रात को होगा—पहला तमाशा सोमवार ६ फरवरी १९११ को होगा और उस हफ़्ते भर बराबर तमाशा होगा—यह तमाशा दगल के अखाड़े में किया जायगा और एक चबूतरा इसी के ख़ास काम के लिये बनाया गया है।

आठवीं पलटन का एसाल्ट एट आर्म

डिविजनल एसाल्ट एट आर्म का टूरनामेन्ट जो लखनऊ में होता था अब की दफा प्रदर्शिनी भूमि में होगा—यह टूरनामेन्ट सिर्फ़ आठवे डिवीजन के आदमियों के लिये है।

हिन्दुस्तान के सब देशी और विलायती पलटन या रिसाले में यह तमाशा होता है जिस में बांह की कसरत के लिये उत्तेजना मिलती है।

हिन्दुस्तानी और विलायती अफ़सरों का और पलटन वालों का अलग अलग खेल होगा इस में फिर दो विभाग किये गये हैं जिस में घोडे के सवार और पैदल के सिपाही लडे गे—एक एक आदमियों की और टीम की अलग २ लडाई होगी पहले हर जिलों में इस का टूरनामेन्ट होता था जिस में आस पास के पलटन वाले लड़ा करते थे—लेकिन अब फौज के सब आदमी लडते हैं और इस लिये इन लड़ने वालों की हद्द बाध दी गई है हर एक आदमियों को ५० दफे से ऊपर लड़ना पड़ता था इस लिये इन का नम्बर अब सिर्फ दो कर दिया गया—और टीम के मुकाबले के समय में सिर्फ एक टीम होती है इस में भी इस में ४ या ६ रोज़ लग जाते हैं—यह टूरनामेन्ट विलायत

के फौजी और जहाजी की तरह होता है और हर एक जोडे के लड़ने के लिये गड्ढा बनाया जाता है—इस तरह से इन लोगों की ठीक लडाई होती है।

इसकी लडाई के पहले फ़ौज का अलग मुक़ाबला होता है जिसमें वे चुनते हैं कि उनका प्रतिनिधि डिवीजनल मीटिंग में कौन भेजा जायगा।

अब की साल इस में की भाला लड़ने और गोड़ने के काम और जिमनैसटिक का खेल सुबह हो जायगा—फिर दो चार रोज खेमा गाड़ने का सवारी का कूदने का और गाड़ने का काम शाम को होगा दो तीन दफा टगआफवार (रस्सा खींचना) खुदाई हथियार की कसरत और लादने का काम भी शाम को होगा फाइनल कार्म्पिटिशन खेमा गाड़ने चढ़ने और कूदने का खेल अख़ीर मे दो रोज होगा और दो टीमो के भाले की लड़ाई भी होगी—तोपख़ाना चलाने और कूदने का काम होगा इसमें ६ घोड़े रहते है जो दो २ के कतार चलते हैं—यहां पर रायल आर्टिलरी के बैटरी और ब्रिटिश कैवैलरी रेजीमेन्ट की म्यूजिकल ड्राइव होगी—हिन्दुस्तानी पल्टन के घुड सवारी का और नंगी पीठ पर चढ़ कर खेल दिखलाये जांयगे और बहुत से मनोहर दृश्यों में यह भी रहैगा कि अङ्गरेजी और हिन्दुस्तानी पल्टन के आदमी किले को घेरेंगे—रात को रोशनी के काम का खेल दिखलाया जायगा—इसमें रोशनीदार खेमे गाड़ने का और सीखे हुये घोडों पर टट्टी नाघने का खेल भी रहैगा।

पूर्वीय दल

विलायत में कई बरसों से इसका बडा प्रचार है—हर शहर में जहां का कुछ भी ऐतिहासिक महत्व है इस ढङ्ग से दल निकाले जाते हैं कुछ रोज भया शरबोर्न शहर ने इसको दिखलाया था और इस साल में चेस्टर—का दल बहुत शिक्षाप्रद और अद्भुत था—पर साल लन्दन में इमपायर पेजियन्ट इमपीरियलिसम के महत्व को दर्शायेगा—इस दल में सैकडो आदमी शामिल रहैगे जो तरह २ के नाटकों को देख कर शिक्षा ग्रहण करेंगे—बाग बगीचा के रहने से जो दृश्य दिखलाया जाता है वह नाटकों में नहीं हो सकता—बाहर के तरफ़ बहुत

से दल निकल सकते हैं सैकड़ों एक्ट्र शामिल हो सकते है तरह २ के पुराने चाल के रीतियो का मनोहर दृश्य हो सकता है—अगर एतिहासिक बातो के दिखलाने का यहां सब से अच्छा ग्रैार शिक्षाप्रद ढङ्ग है तो हिन्दुस्तान से बढ़ कर इसका कहीं दृश्य नहीं हो सकता—यहां के एतिहासक दृष्टान्तेॉ का भण्डार—यहां का साफ़ आसमान—यहां के जङ्गली जानवर विशेष हांथी जिससे दल की शोभा बढ़ जाती है—यहॉ के बहादुर घोडसवार यहां के आदमियों का नाटक में अनुराग इत्यादि के ख्यालो से यहां से बढ़ कर इसकी कोई जगह नहीं हो सकती—अब तक ऐसा दृश्य किसी प्रदर्शिनी में नहीं रक्खा गया था यहा के बडे इतिहास से इस दृश्य के लिये संग्रह किया गया है—यहां पर रामचन्द के भारद्वाज आश्रम में जाने का अशोक के राजदबार का—हर्ष के मण्डली का दृश्य रहैगा—इस के बाद विलायत के महाराणी एलिजबेथ के समय के मनोहर इङ्गलैण्ड का चित्र अकबर बादशाह के यहां उस दर्बार के भेजे हुये तीन आदमियों का चित्र रहैगा—फिर अकबर बादशाह का उन लोगों का स्वागत करना—फिर इस बड़े बादशाह के मृत्यु का चित्र फिर ग्रैारंगजेब बादशाह के शानदार दर्बार का चित्र है फिर शाहआलम का क्लाइब को दिवानी के सनद देने का चित्र है—ग्रैार एक स्तम्भ के नीचे बाग में खड़े हुये लार्ड केनिङ्ग विक्टोरिया का घोषणा पत्र पढ़ रहे हैं—यह तमाशा १६ जनवरी ग्रैार उसके बाद दिखलाया जायगा—इसको मनोरञ्जक बनाने के लिये कोई बात उठा नहीं रक्खी गई है इसका हाल देखने से यह अच्छी तरह समझ में आ जायगा।

दूसरे खेल तमाशे

ग्रेन्ड स्टैन्ड के सामने के मैदान में जहां पोलो हाकी ग्रै पूर्वीय दृश्य के तमाशे दिखलाये जांयगे—दंगल—घूसा लड़ने इत्यादि के तमाशे अलावा जिसका हाल हर सनीचर को टांग दिया जायगा, आतशबाजी का तमाशा भी दिखलाया जायगा—जगद् विख्यात ब्राक कम्पनी के भेजे हुये हजारों रुपये के नये नये आतशबाजी के सामान आये हैं ग्रैार ऐसा तमाशा इलाहाबाद में कभी नहीं दिखलाया गया है दर्शकों को ग्रेन्ड स्टैन्ड से यह दृश्य देखना चाहिये जिसमें भीड़ होने की वजह से इनकी

ख़ूब सूरती न बिगड़ जाय और माघ मेले में आये हुये यात्री भी क़िले के सामने के ढलुये मैदान से देख सकैंगे-दिन भर और आधी रात तक तरह तरह के खेल तमाशे हुआ करेंगे प्रदर्शिनी और पोलो के मैदान से एक बड़ा खण्ड खेल कूद के लिये अलग कर दिया गया है-अख़ीर के तरफ़ एक अद्भुत रेल बनाई गई है जिस पर बैठने से हाइड पार्क से लगा कर हिमालय तक के चित्र दिखलाये गये हैं-पहले एक विलायती नदी मिलती है-फिर सैद का बन्दर और बहुत सी चीजो के बाद बम्बई नगर से चल कर ताज महल का दृश्य और तरह तरह की चीजों को देख कर वह हिमालय के पहाड़ की हमेशा रहने वाली बर्फ़ का दृश्य दिखलाया गया है ॥

इसके बाद वायसकोप कम्पनी है जहां दिन और रात में तमाशे दिखलाये जांयगे-हाल की सब घटनाओं का दर्शन कराया जायगा-और नई कलों द्वारा रोज नये नये चित्र दिखलाये जांयगे-थोड़ा दाम ख़र्च करने से यहां पर वह दृश्य दिखलाया जायगा जिसमें अकसर लोग बहुत रुपया ख़र्च करते हैं और अकसर जान भी खो बैठते हैं—वहाँ पर चतुराई के काम और निशाना लगाने की ग्यैलरी-चाबीदार कल और बहुत सी दिल बहलाव की चीजैं रक्खी गई हैं ॥

एक बड़े ख़ेमे में पटवर धन भ्राताओं की मैजिक लैन्टर्न है जिसमें उनके हाथ की खींची हुई खूबसूरत तसवीरें और पुराने संस्कृत ग्रन्थों का दृश्य होगा-यहा पर हिन्दुस्तानी गवैय्यों का गाना बजाना भी होगा ॥

यहां पर जादूगरों के हाथ की सफ़ाई भी दिखलाई जायगी जो प्राचीन और आधुनिक नाटक के चित्र दिखलाते हैं—इनका रवाज देशी रजवाड़े में बहुत है—यहा पर एक हिन्दुस्तानी बाजीगर अपनी चालाकी का नमूना दिखलावैगा—यहां पर कोने में हंसाने वाली लाफिङ्ग ग्यैलरी है जहा एक जादू का शीशा रक्खा गया है ॥

इसी के पास ख़ास प्रदर्शिनी के लिये बनाया हुआ बिजो नाटक है जिसमें ७०० आदमी आराम से बैठ सकते हैं—आडेटोरियम के दोनें तरफ़ ऊंचे उठे हुये चबूतरे हैं जिन पर परदा नशीनें का भी इन्तजाम हो जायगा—या जिस पर कोई विलायत से आने वाली

कम्पनी का तमाशा होगा यहां के तमाशों का वर्णन तो पूरा पूरा नहीं किया जासकता किन्तु हर रोज एक न एक नया तमाशा किया जायगा—सिर्फ़ चुनो हुई नामी देशी श्रौर विलायती कम्पनियों का तमाशा रहैगा—बहुत से बांसुरी श्रौर बाजों को देख कर दर्शक गख प्रसन्न होंगे—कभी २ सुबह को इस पर नाटक विषय पर व्याख्यान होगा—पूरब के तरफ़ चलने से एक निहायत उम्दा 'ज्वाय होल' है-इसका दृश्य बडे सफलता से ब्रुसल्स के प्रदर्शिनो में दिखलाया गया था—यहां के इस यंत्र में निपुण केन साहब बुलाये गये हैं जो इसको अच्छी तरह से कर के दिखलावैंगे यहाँ पर एक हिडोला ६० आदमियो के बैठने लायक़ बनाया गया है जिसमें कोई पुरुष निराश होकर न लैाट जाय।

यहां पर एक निशाना लगाने की विलायती चीज रक्खी है जिस में निशाना लगाने वाले को इनाम भी दिया जाता है-श्रौर नारियल श्रौर आन्ट सैलो में भी निशाने लगाना है यहां पर एक तौलने को कल है जो आदमियों को तौल कर उनकी वजन बोल कर के बता देती है-यहां पर मेडेमटासेड का वनाया मोंम का काम भी है—यहां पर बहुत सी वस्तु दर्शकों के समय बिताने का है प्रदर्शिनी के पूरब के तरफ़ पारसी कम्पनी सिवलाइज्ड थियेटर के नाटक भवन हैं यहां पर शेक्सपियर श्रौर हिन्दी के नाटक किये जांयगे।

बोस का ग्रेन्ड सरकस जो इसी के पास है देखने लायक है—यहां के सीखे हुये जानवरों की काररवाई देख कर चित्त प्रसन्न हो जाता है।

प्रोफ़ेसर राममूर्ति नायडू भी अपनी कसरत यहां पर दिखलावैंगे-इनके ६० चेलों की काररवाई भी अचम्भे में डालनेवाली है—प्रोफ़ेसर के ऊपर से दो बैल गाड़ियां जिस में ३० आदमी बैठते हैं निकल जाती हैं श्रौर यह अपने छाती के ऊपर ३ टन का हाथी उठा लेते हैं।

यहां पर एक दूसरी वायसकोप कम्पनी है जिनके चित्र बिलकुल दूसरी तरह के हैं श्रौर यहां केटो का थियेटर है जिस में शेक्सपियर के नाटक दिखलाये जाते हैं-हिन्दुस्तानी क़दरदानो के लिये इनका काम बहुत मनोरञ्जक होगा।

वाटर श्यूट का बयान अब तक नहीं किया गया यह जमुना के किनारे पर लेडोज एनेक्स के पास है और वहां के आदमियों का इस भयकारक यन्त्र की सफलता से चित्त प्रसन्न होगा—इस तरह के तमाशों का यहाँ इन्तजाम किया गया है जिस में राजा और रैय्यत और सब लोग देख सकते हैं—यहाँ की इमारतों पर धूप की रोशनी और हाइलेन्डर्स के बाजे की ध्वनि से और तरह तरह के गाने की चीज़ों को देख कर दिल्ली के दरबारियों के तरह यही कहना पड़ता है कि अगर पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो यही है ॥

रिचार्डसन् और क्रूडास बम्बई

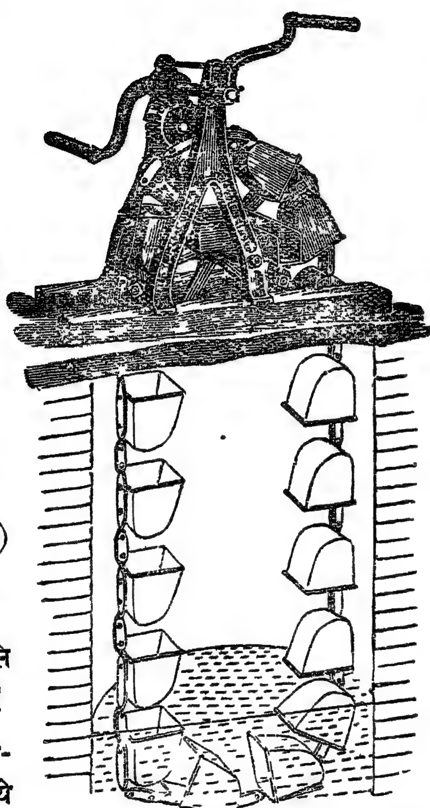
जो कि सब तरह की खेती की चीज़े बनाते और मोहय्या करते हैं।

पम्प (पानी चढ़ाने की कल) जो हाथ से और बैल से और भाप से चलाई जाती है

विन्डमिल (पवन चक्की) और पम्प

नोरिया वाटर लिफ्ट (पानी चढ़ाने की कल) जो हाथ से और बैल से और इन्जिन से चलाई जाती है

चेन पम्प सिचाई के काम के लिये



पेटेन्ट हे प्रेस (सूखी घास दबाने की कल)

चांवल छांटने की कल

भूसी काटने की कल

चना दलने की कल

बारली (जव) पीसने की चक्की

आटा पीसने की मशीन

करबी काटने की मशीन

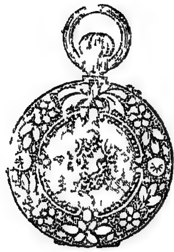
ऊख पेलने का कोल्हू

हाथ से चलाई जाने वाली "नोरिया" पानी चढ़ाने की कल, तेल के इन्जिन वगैरः। पूरा हाल और दाम के जानने के लिये प्रदर्शिनी के कृषि विभाग में हमारी चीजों को देखिये।

तार का पता—आयेरन वर्क्स बम्बई।

राज्याभिषेक की यादगार में इन घड़ियों की क़ीमत आधी कर दी गई है।

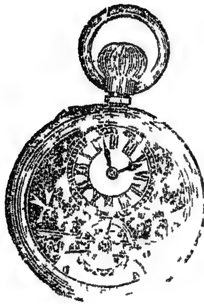
दोहरे ढकने की सुनहरी सुन्दर वाच।



इस घड़ी के केस पर १४ करात सोने का प्लेट चढ़ाया गया है जो वर्षों ख़राब नहीं होता। मजबूत, सुन्दरता और ठीक चलने में यह घडी अपनी सानी नहीं रखती है। अवश्य ही यह घड़ी मगाइये गारण्टी ६ वर्ष पूरा दाम १६) आधा ८)।

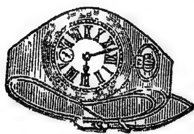
यही घड़ी सादे केस की पूरा दाम १०) रियायती ४॥)।

निहायत मज़बूत आठरोज़ा वाच।



यह आठ दिन में एक बार चाबी लेने वाली घड़ी ख़ालिस चांदी की है। इसका डायल चीनी का सुन्दर बेल बूटेदार है। डायल का निचला भाग खुला हुआ है जिन में से सिकण्ड की सूई का पहिया घूमता बहुत सुन्दर दिखाता है। हमें विश्वास है, कि इसके मजबूतताई टाइम की सचाई के बारे में आप को कुछ शक नहीं होगा, क्योंकि आठ दिन में केवल एक बार चाबी लेती है इस की अत्यन्त मजबूती का पूरा सबूत है। गारण्टी १० साल पूरा दाम २०) आधा १०) यही घडी निकल केस पूरा दाम १६) आधा ८)।

निहायत ज़बूत रिस्ट वाच



यह रिस्ट वाच देखने में ही खूबसूरत नहीं, बल्कि इसके पुरज़े निहायत मजबूत हैं, और टाईम बहुत सही देती है। यह घड़ी अठन्नी से कुछ बड़ी है। चांदी के केस की कीमत १२) निसफ कीमत ६) रु० है। और निकल सिलवर के केस की कीमत १०) रु० निसफ़ ५) रुपया है।

मिलने का पता—एस० ए० बी० बक्सी ऐण्ड को
३४-१ कोल्हू टोला इस्टेट—कलकत्ता

फाउलर्स रोड ट्रान्सपोर्ट ट्रेन्स

इस के जरिये से बारबरदारी का खर्चा जानवरों के जरिये से बारबरदारी के खर्च की बनिसबत आधा से छटवां हिस्सा तक है

फ़ाउलर साहब का भाप से चलने वाला सड़क के पीटने के बेलन। हिन्दुस्तान में बहुतसा माल हर पैमाने का मौजूद रहता है।

फ़ाउलर साहब के भाप से चलने वाले खेती के कल

हर एक देशो के लिये

हर एक आब हवा के लिये

हर एक फ़सिल के लिये.

जान फ़ाउलर एण्ड को (लीड्स) लिमिटेड भाप से चलने वाले खेती के कल के दुनियां भर में सब से बड़े बनाने वाले हैं।

इनजिनीयरिंग कोर्ट को दुकान नम्बर १ में हम लोगों की चीजों को देखिये

चीजों के दामों के वास्ते लिखिये।

जान फ़ाउलर एण्ड को (लीड्स) लिमिटेड

केनाडा बिलडिङ्ग

बम्बई

पता—सदर दफ़्तर और कारखाना लीड्स इङ्गलैन्ड } तार का पता—टी. ए ट्रेक्शन बम्बई

आज तक के उत्तमोत्तम

पाथीफ़ोन

पाथीफ़ोन ने अपने कार्य्य में सफलता प्राप्त की है और प्रत्येक मनुष्य को अपना ख़ास पाथी फोन रखना चाहिये। यह अत्यन्त उत्तम और सस्ता है, सुई की आवश्यकता नहीं पड़ती और यह अपने समय का अद्वितीय है।

मिलान १९०६
हौर्स कौंकर्स

लंदन के सन १९०८ के फ्रांको ब्रिटिश
प्रदर्शिनी में "ग्राण्ड प्रिक्स" मिला



पेरिस १९००
ग्राण्ड प्रिक्स

दि पाथीफ़ोनो का मूल तत्व आवाज़ के उत्पन्न
करने में सफलता प्राप्त करने का है।

पाथी के रिकर्डस सब दोतर्फ़ा हैं

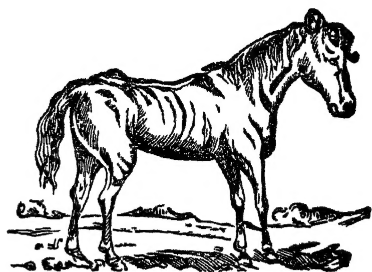
मूल-८ॆ इञ्च दोतर्फा १॥) रु०, १० इञ्च दो तर्फ़ा २) रु०,
११ इञ्च इनडियन दोतर्फ़ा ३) रु०, ११ इञ्च
यूरोपियन दोतर्फा ३॥) रु०
पाथी डिक्स "कनसर्ट" २० इञ्च दोतर्फा १५) रु०

पता—**दि पाथीफ़ोन** ७ नं० लिडसे स्ट्रीट कलकत्ता और चरच गेट स्ट्रीट बम्बई।

नोट—जनरल इन्डस्ट्री कोर्ट में पाथीफ़ोन के पावेलियन यानी शामियाना में जाने से न चूकिये जहां पर नाना प्रकार की सूचना अत्यन्त प्रसन्नता के साथ दिया जा सकता है और पाथीफ़ोन का गाना भी सुना जा सकता है।

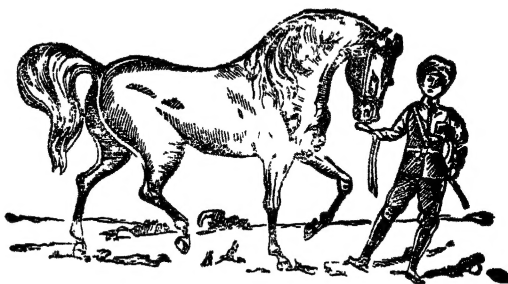
पढ़ो-पढ़ो-आठवा अजायब

दुनिया भर में सात अजायबात हैं -इनमे एक और मिलाया तो आठ हुये-उन आठ मे से दो आगरे में है-यानी सब से अवल अजायब ताज महल है और दूसरा अजायब जान्स कंडीशन् पौडर-(यानी सफूफ है) अब जिन साहबों के पास ऐसा घोड़ा है कि लागर वा कमजोर और बीमार जैसी यह तसवीर है-और वे साहिब चाहैं कि वह मोटा ताजा और मजबूत और चाक वा चुस्त हो जाय तो उन्हैं चाहिये कि जान्स कन्डीशन पौडर का इस्तैमाल करें।



Before Using John's Condition Powder.

और कुछ दिन के इस्तेमाल के बाद तुम देखोगे कि तुम्हारा घोडा मोटा ताजा और तवाना मिस्ल इस घोडे की तसवीर के हो जायगा और उस को देख कर तुम खुश होगे वाकई दुनिया मे घोडो और दूसरे जानवरों के लिए जान्स कंडीशन् पौडर आठवी अजूब चीज है यह जान्स कंडीशन पौडर हर जगह फ़रोख्त किया जाता है इसके गुमाशते बम्बई व कलकत्ता व मदरास व रंगून व सीलोन और सब बडे २ शहरों में हैं गुमाशतो की फ़ेहरिस्त पानियर अख़बार में मुलाहिजा करो और ख़ास आगरे में कोआपरेटिव स्टोर्स रेहना एण्ड कम्पनी और बलदेवदास एण्ड कम्पनी के यहां बिकता है-कीमत फी टिन २) रुपये।



After Using John's Condition Powder